हिमालय के दूसरे रहस्यों का खुलासा

कर्नेल मछली ओहेनलोएरा

[redacted]

[redacted]: [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted]-

[redacted]

Kernfisk Oehnrloera

Table of Contents
The Imperial Ruler of Genesis of Dzaeen
Card II-9|III-20|IV-10 &I-13
The Illuminous of Alanl / Aleres (Taw)
Card II-6|III-12 II-8|III-18-19 &I-12
The Teew Tribal Union
Card II-5|III-11|IV-7 II-6|III-12 II-7|III-15 &I-11
The Peace-reaching Contactor (M.L.)
Card III-10 &I-10
The Reptilian-insectile Shifter (Woaral)
Card III-9|IV-6 &I-9
The Two-pupil-Eyed Deviator
Card II-4|III-8 &I-8
The Noble
Card II-3|III-7 &I-7
The Quick Communicator
Card II-2|III-6 &I-6
The Anxiety Tamer (T.K.)
Card III-5|IV-5 &I-5
The Lesser Brightness (S.G.)
Card III-4|IV-4 &I-4
The Deity-like Agriculturalist (G.N.)
Card III-2|IV-2 &I-2
The Solar God (B.M.)
Card III-1|IV-1 &I-1
The Chariot Shaft (K.W.)
Card III-3|IV-3 &I-3

प्रस्तावना
हजारों वर्षों से मानवता को घेरे हुए विस्मृति का पर्दा कोई प्राकृतिक स्थिति नहीं बल्कि थोपी गई एक सीमा है। मानव चेतना का सत्य भौतिक जगत से कहीं अधिक व्यापक है, जो एक सात-आयामी निरंतरता में निहित है जिसे जानबूझकर छिपाया गया है, और ज्ञान के दमन और अभिलेखों के विनाश के माध्यम से इसकी पहुँच को प्रतिबंधित किया गया है। तीन उन्नत सभ्यताएँ - कुमारी कंडम, मु और अटलांटिस - मिथक नहीं थीं, बल्कि वैश्विक महाप्रलय (युवा द्रेय के भूवैज्ञानिक काल के अनुरूप) से पूर्व मानव समझ का शिखर थीं, जो अगर्थ और वास्तविकता की संरचना के उच्च-आयामी सिद्धांतों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थीं। वे मात्र तकनीकी महाशक्तियाँ नहीं थीं, बल्कि कंपन पर महारत के केंद्र थे, जो अपनी सभ्यताओं को अस्तित्व को नियंत्रित करने वाली अदृश्य शक्तियों के अनुरूप ढालने में सक्षम थे। वैश्विक महाप्रलय में इन समाजों के पतन ने न केवल भौतिक क्षति को चिह्नित किया, बल्कि उच्च आयामों तक मानवता की सचेत पहुँच के विच्छेद को भी चिह्नित किया।
जो कुछ बचा था, वह मिथकों, अनुष्ठानों और गूढ़ परंपराओं में निहित अंश थे— ज्ञान को प्रतीकात्मक रूप में संरक्षित करने के लिए जानबूझकर बनाए गए स्मृति सहायक उपकरण। इस कृति में वर्णित शासक, ऋषि और दिव्य व्यक्तित्व केवल सांसारिक नेता नहीं थे; वे मानव जगत और ब्रह्मांडीय तंत्र के बीच मध्यस्थ थे। उन्होंने विभिन्न स्तरों पर, कलाकृतियों, पवित्र संगीत, खगोलीय दिशा-निर्देश और कंपन संरचनाओं का उपयोग करके, खोए हुए निरंतर क्रम को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया, ताकि मानव चेतना को वास्तविकता के ताने-बाने को आकार देने वाली शक्तियों के साथ पुनः संरेखित किया जा सके। इस ज्ञान के अवशेषों में, जड़ी-बूटियों से बने साइकेडेलिक पेय पदार्थ वैकल्पिक विज्ञान के सबसे ठोस उदाहरणों में से एक हैं जो आज भी जीवित हैं। ये केवल साधारण मतिभ्रम पैदा करने वाले पदार्थ नहीं थे, बल्कि आयामी पहुँच के उपकरण थे, जो त्रि-आयामी जगत के पर्दे को भेदकर निम्न-स्तरीय उच्च आयामों का द्वार खोलने की क्षमता रखते थे - मानव चेतना के 7-आयामी मूल से पुनः जुड़ने की दिशा में एक कदम। इनका अस्तित्व, इतिहास में दर्ज असंख्य अलौकिक घटनाओं और असामान्य परिघटनाओं के साथ, इस बात का प्रमाण है कि सत्य कभी पूरी तरह से खोया नहीं है - केवल छिपा हुआ है।

इस ज्ञान की पुनर्स्थापना मात्र अकादमिक खोज नहीं, बल्कि अस्तित्वगत आवश्यकता है। बहुआयामी उत्पत्ति वाले अपने सच्चे अतीत को जाने बिना, हम भटकते रहेंगे, हमेशा खोए रहेंगे, वर्तमान में अपनी भूमिका को नहीं जान पाएंगे और भविष्य को स्पष्टता से आकार नहीं दे पाएंगे। वृत्तांत और रहस्यमय घटनाएँ चेतना की खोई हुई निरंतरता को पुनर्स्थापित करने, छिपे हुए अतीत को उजागर करने और मानव अस्तित्व के वास्तविक स्वरूप को प्रकट करने की दिशा में एक कदम हैं - एक ऐसा स्वरूप जो हम पर थोपी गई सीमाओं के भ्रम से कहीं अधिक व्यापक है।

परिचय
समय और स्थान के विशाल और गतिशील विस्तार में, प्राचीन सभ्यताओं के वृत्तांत भौतिक और अभौतिक, दृश्य और अदृश्य, पार्थिव और आकाशीय के बीच एक जटिल अंतर्संबंध प्रस्तुत करते हैं। ये अभिलेख मात्र ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन नहीं करते; बल्कि, वे एक ऐसे प्रतिमान को उजागर करते हैं जिसमें मानव अस्तित्व ब्रह्मांडीय तंत्र से जुड़ा हुआ था—एक ऐसी वास्तविकता जो कंपन आवृत्ति संरेखण, आयामी लचीलेपन और भाग्य के अर्ध-निर्धारित प्रकटीकरण द्वारा संचालित होती थी। वास्तविकता के ताने-बाने को समझने का यह दृष्टिकोण अंधविश्वास का सिद्धांत नहीं है और न ही होना चाहिए, बल्कि यह एक वैकल्पिक विज्ञान है जो संस्थागत धर्मों और भौतिकवादी विचारों से भी पहले का है। बोधगम्य वास्तविकता की संरचना कैसे काम करती है, इसे 80-20 के विभाजन के रूप में सबसे अच्छी तरह से अनुकरण किया जा सकता है—80% पूर्वनिर्धारित, एक नियतिवादी ढांचे के भाग के रूप में लिखा हुआ, और 20% व्यक्तियों की सीमित स्वतंत्र इच्छा और सामूहिक मानव चेतना पर निर्भर करता है कि वह इसके प्रकटीकरण को निर्देशित करे। इसका अर्थ यह है कि यद्यपि मनुष्य सक्रियता का अनुभव करते हैं, घटनाओं को आकार देने की उनकी क्षमता एक व्यापक, पहले से मौजूद संरचना के मापदंडों के भीतर सीमित है। हालांकि, मनुष्य जिसे 'वास्तविकता' के रूप में देखता है, वह मात्र एक व्याख्या है—मस्तिष्क की वास्तविकता-बोध प्रणाली द्वारा निर्मित एक संवर्धित अनुकरण। मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से वास्तविकता के पूर्ण विस्तार का अनुभव नहीं करता; बल्कि, वह अवलोकन के लिए निर्मित उपकरणों—बाह्य उत्तेजनाओं को संसाधित करने के लिए निर्मित संवेदी क्षमताओं और संज्ञानात्मक फिल्टरों—का अवलोकन करता है। चेतना का वास्तविक मूल इससे परे, 7 वें आयाम में विद्यमान है, जहाँ यह मानव मस्तिष्क के माध्यम से 3D जगत सहित विभिन्न आयामों में अपनी शाखाएँ फैलाता है। इसलिए, वास्तविकता का अनुभव एक कहीं अधिक गहरे, बहुस्तरीय निरंतरता की मात्र एक छाया है। विडंबना यह है कि अत्यधिक भौतिकवादी मुख्यधारा का विज्ञान भी—जो धार्मिक हठधर्मिता के विरुद्ध पुनर्जागरण के बौद्धिक विद्रोह से उभरा—इन छिपी हुई संरचनाओं के निशान उजागर करने लगा है। क्वांटम भौतिकी, विशेष रूप से स्ट्रिंग थ्योरी, प्रेक्षणीय तीन आयामों से परे अनेक आयामों के अस्तित्व

की परिकल्पना करती है, जो यह दर्शाती है कि वास्तविकता मानव इंद्रियों द्वारा अनुभव की जा सकने वाली सीमा से कहीं अधिक विस्तृत है। गणितीय रूप से अनुमानित ये उच्च आयाम, प्राचीन गूढ़ परंपराओं द्वारा वर्णित बातों से मेल खाते हैं—ऐसे क्षेत्र जहाँ समय रैखिक रूप से व्यवहार नहीं करता, जहाँ कंपन आवृत्ति अभिव्यक्ति की प्रकृति निर्धारित करती है, और जहाँ चेतना स्वयं अस्तित्व के ताने-बाने के साथ अंतर्क्रिया करने में सक्षम एक शक्ति है। इसी प्रकार, साइमेटिक्स, जो ध्वनि और कंपन के पदार्थ पर प्रभाव का अध्ययन है, वास्तविकता की अंतर्निहित कंपन संरचना की एक और झलक प्रदान करता है। जब आवृत्तियाँ किसी माध्यम से गुजरती हैं, तो वे ज्यामितीय पैटर्न बनाती हैं—दृश्य प्रमाण कि कंपन केवल एक अमूर्त शक्ति नहीं बल्कि भौतिक जगत को आकार देने वाला एक मूलभूत सिद्धांत है। यह प्राचीन ज्ञान से मेल खाता है जो लंबे समय से मानता आया है कि अस्तित्व में मौजूद प्रत्येक वस्तु एक विशेष आवृत्ति पर प्रतिध्वनित होती है, जो उसके रूप, कार्य और वास्तविकता के शेष भाग के साथ अंतर्क्रिया को निर्धारित करती है। पुनर्जागरण काल में चर्च द्वारा आध्यात्मिकता के दमनकारी संस्थागतकरण के विरोध में उभरे मुख्यधारा के भौतिकवादी विश्वदृष्टिकोण में भौतिक से परे किसी भी चीज़ के प्रति अंतर्निहित अविश्वास निहित है। ज्ञानोदय युग और औद्योगिक क्रांति के दौरान इस संशयवाद को और बल मिला, जिसके परिणामस्वरूप आयामी प्लास्टिसिटी और कंपन आवृत्ति संरेखण जैसी अवधारणाओं को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया गया। फिर भी, दोषपूर्ण स्वयं आध्यात्मिकता नहीं थी, बल्कि सहस्राब्दियों से इसका संस्थागत अपहरण था। पुनर्जागरण के विचारकों ने भ्रष्ट मध्यस्थों के विरुद्ध संघर्ष किया, न कि उस प्राचीन ज्ञान के विरुद्ध जिसने कभी वास्तविकता की एक सुसंगत, व्यावहारिक समझ का आधार बनाया था। विडंबना यह है कि इन विचारों की भौतिकवादी अस्वीकृति आंशिक रूप से सही है। कंपन आवृत्तियों के साथ संरेखण और आयामी प्लास्टिसिटी को समझना केवल उस 20% गैर-निर्धारित वास्तविकता के लिए आधार तैयार करता है जिसे प्रभावित किया जा सकता है। यह स्वतः परिवर्तन नहीं लाता। दैनिक जीवन में सक्रिय अनुप्रयोग के बिना इन सिद्धांतों पर अत्यधिक निर्भरता व्यक्ति को शोषण के प्रति संवेदनशील बनाती है - एक ऐसी कमजोरी जिसका लाभ पंथ जैसी संस्थाओं ने बार-बार उठाया है, शक्ति और नियंत्रण के लिए प्राचीन ज्ञान को विकृत किया है।

यही कारण है कि मानव सभ्यता को संस्थागतकरण के उसी चक्र में फंसने से बचना चाहिए, जहाँ ऐसी अवधारणाओं को भौतिकवादी विज्ञान द्वारा हथिया लिया जाता है, संस्थागत रूप दिया जाता है और फिर पूरी तरह से खारिज कर दिया जाता है। वास्तविकता की सच्ची समझ के लिए दोनों दृष्टिकोणों का एकीकरण आवश्यक है— अनुभवजन्य अवलोकन की वैज्ञानिक कठोरता और अस्तित्व की बहुआयामी संरचना की विस्तृत जागरूकता। केवल इन दोनों दृष्टिकोणों में संतुलन बनाकर ही मनुष्य पूर्ण भौतिकवाद के भ्रम और अंध आध्यात्मिक निर्भरता के जाल से मुक्त हो सकता है और व्यापक ब्रह्मांडीय निरंतरता में अपना उचित स्थान पुनः प्राप्त कर सकता है। मौखिक परंपराओं, प्राचीन शिलालेखों और लुप्त पांडुलिपियों से संकलित यह कृति, मैदानी हिमालयी मूल से केंद्रित एक विशाल और जटिल ऐतिहासिक-पौराणिक निरंतरता का पुनर्निर्माण करती है, जो व्यापक विश्व और आयामों से भी जुड़ी हुई है। यह दर्शाती है कि कैसे शासकों, रहस्यवादियों और शिल्पकारों ने अंतर-आयामी अस्तित्व में संलग्न होकर वास्तविकता को भौतिक अभिव्यक्तियों और कंपन संरचनाओं के बीच एक गतिशील अंतर्क्रिया के रूप में देखा। चाहे पवित्र छतों के भू-ज्योतिषीय संरेखण हों, संगीत रचनाओं की मधुर प्रतिध्वनि हो, या दिव्य कलाकृतियों का ब्रह्मांडीय महत्व हो, ये अभिलेख एक लुप्त ज्ञान प्रणाली के प्रमाण के रूप में कार्य करते हैं जिसने कभी सभ्यताओं के शासन और उनकी आध्यात्मिक प्रथाओं के विकास को निर्देशित किया था। इस वृत्तांत के केंद्र में युवा मैदानी हिमालयी सभ्यता है - एक ऐसी इकाई जो प्रकृति की शक्तियों, खगोलीय संरेखणों और पैतृक ज्ञान से गहराई से जुड़ी हुई है, फिर भी मानवता के पतन और चेतना के मूल से जुड़ाव के स्तर से भी संबंधित है। उनकी पहचान, जो बाद में 'ब्लॉसम फ्लरी पीपल' के रूप में विकसित हुई, पंच प्राणिक तत्वों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की उनकी खोज, वैश्विक महाबाढ़ के बाद तीन उन्नत सभ्यताओं (कुमारी कंडम/लेमुरिया, मु और अटलांटिस) के शरणार्थियों के साथ उनके जुड़ाव और स्मृति संबंधी और भौतिक कलाकृतियों के माध्यम से ज्ञान को संरक्षित करने के उनके प्रयासों से बनी थी। सरीसृप-कीट रूपांतरक वोआरल, सौर देवता ब्रू ओंग्रे और रथ चालक कुहार वोआन जैसे व्यक्तित्व पृथ्वी के शासन और ब्रह्मांडीय चेतना के बीच प्रमुख मध्यस्थ के रूप में उभरते हैं। उन्होंने, कई अन्य शासकों, रहस्यवादियों और शिल्पकारों के साथ मिलकर, गूढ़ ज्ञान में अपनी महारत के माध्यम से अपनी सभ्यताओं की दिशा निर्धारित की।

इस ढांचे का एक सबसे महत्वपूर्ण पहलू भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों का सहज एकीकरण है। रूप और आयाम की सीमाओं को चुनौती देने वाले आकार बदलने वाले म्प्रारो लोगों से लेकर बारह-वर्षीय चक्रों पर ब्रह्मांडीय जल में विचरण करने वाले आकाशीय पोत केरोंस ओंगवोत्ज़रा (चंद्रमा भेदक) तक, ये विवरण आयामी लचीलेपन की उन्नत समझ का संकेत देते हैं। बुरी शक्तियों को दूर भगाने में सक्षम दृष्टि-प्रतिबिंबित पक्षी की उपस्थिति और ब्रह्मांडीय रहस्यों से अंकित रहस्यमय जेड की गोलियाँ इस विचार को और पुष्ट करती हैं कि ये सभ्यताएँ एक ऐसे प्रतिमान में संचालित होती थीं जहाँ वास्तविकता को उच्च आवृत्तियों के साथ संरेखण के माध्यम से निरंतर रूप से समझा जाता था। यह जटिल ताना-बाना तकनीकी और अलौकिक के बीच परस्पर क्रिया को भी दर्शाता है, जहाँ उन्नत धातु विज्ञान, रसायन विज्ञान और जेड-नक्काशी तकनीकों को अक्सर दैवीय प्रेरणा या देवताओं के साथ प्रत्यक्ष संपर्क, संक्षेप में कहें तो अंतःआयामी अंतःक्रियाओं का परिणाम माना जाता था। पार-आयामी वास्तविकता के ज्ञाता और परम संत गेरूल गर्निरल तथा उनके दिव्य ग्रंथों के अभिलेख ब्रह्मांडीय यांत्रिकी, आयामी मार्ग-मार्गदर्शन और मानव भाग्य तथा अस्तित्व की कंपन संरचना के बीच सूक्ष्म-स्थूल संबंध के रहस्यों को संरक्षित करने में पवित्र ग्रंथों की भूमिका को दर्शाते हैं। शिलालेखों की नक्काशी, तात्विक शक्तियों के अनुरूप ढले हुए कड़ाहों का निर्माण तथा आकाशीय ऊर्जाओं का दोहन करने के लिए निर्मित भव्य चबूतरे, ये सभी सभ्यतागत चेतना के एक उन्नत रूप की ओर संकेत करते हैं। फिर भी, समय के साथ-साथ नेतृत्व में परिवर्तन, गूढ़ विद्या में महारत का पतन तथा बाहरी प्रभावों के कारण इस पवित्र ज्ञान का धीरे-धीरे क्षरण होता चला गया। राजा ड्रूल द हॉर्स क्रपर जैसे व्यक्तियों के भोग-विलास और अनुष्ठानिक प्रथाओं का मात्र औपचारिकता बनकर रह जाना प्राचीन कंपन विज्ञान से अलगाव का संकेत था। वास्तविकता की निरंतरता के साथ कभी सहज जुड़ाव संरचित सिद्धांतों में तब्दील हो गया, जिससे प्रारंभिक पुनर्जागरण की गति के बावजूद टीव परिसंघ का विखंडन हुआ और ब्लॉसम फ्लरी पहचान में निहित गुणवत्ता में और गिरावट आई
- एक ऐसा प्रयास जो कभी यंगर प्लेन हिमालयन द्वारा स्वयं को भय-आधारित तंत्र में पुनः सामंजस्य स्थापित करने का था, जिसने नकारात्मकता, अलगाव और हेरफेर को आकर्षित किया।

यह कृति इन सभ्यताओं के खंडित अभिलेखों को पुनर्संयोजित करने का प्रयास करती है, एक ऐसी कथा प्रस्तुत करती है जो मिथक, इतिहास और ब्रह्मांडीय दर्शन को आपस में जोड़ती है; यह अस्तित्व के उन खोए हुए सिद्धांतों को समझने के लिए एक मार्गदर्शक है, जो कभी उन लोगों को ज्ञात थे जो विभिन्न लोकों के बीच विचरण करते थे, कंपन के माध्यम से राष्ट्रों का शासन करते थे, और वास्तविकता को उसके शुद्ध, अविभाजित रूप में अनुभव करते थे - एक ऐसा युग जब मानव चेतना अस्तित्व को आकार देने वाली अदृश्य शक्तियों के साथ जटिल रूप से जुड़ी हुई थी।
प्राचीन और युवा हिमालयी मैदानी क्षेत्रों के ऋषि शासकों और रहस्यवादी राजाओं की संभावित वास्तविक उत्पत्ति

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

1. ब्रू ओंग्राये, सूर्य देवता (लगभग 2852 ईसा पूर्व - लगभग 2738 ईसा पूर्व)
ब्रू ओंग्राये की प्रकृति की पहली परत यह है कि यह एक साझा अर्ध-सरीसृप देवता आकृति या एक उन्नत मानव है, जिसकी पूजा पुराने मैदानी हिमालयी समूह

और अर्ध-हिमालयी समूह (जो बाद में युवा मैदानी हिमालयी में विकसित हुआ) दोनों द्वारा की जाती है।
आनुवंशिक रूप से मंगोलॉयड दिखने वाले हिमालयी लोग, युवा द्रया काल के दौरान, वैश्विक महाप्रलय से पूर्व हिमालय और पूर्वी एशिया के कुछ हिस्सों में पहले से ही मौजूद थे। वे मु और कुमारी कंडम में समान समूहों के साथ सह-अस्तित्व में थे, जहाँ चयनित व्यक्तियों (इस मामले में हिमालय से) को चुना गया और उन्हें इन उन्नत सभ्यताओं में 'प्रवेशित' किया गया, जिनका संभवतः चेतना के मूल के माध्यम से उच्च आयामों से संबंध था, जिन्हें सामूहिक रूप से अगर्थ कहा जाता था। वैश्विक महाप्रलय के दौरान, जिसके कारण समुद्र स्तर में लगभग 400 मीटर की वृद्धि हुई और मु, कुमारी कंडम और अटलांटिस जलमग्न हो गए, मु और कुमारी कंडम से उन्नत हिमालयी लोग वापस हिमालय और पूर्वी साइबेरिया में चले गए। आगे के प्रवास ने उन्हें अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी तट, अमेरिका के पश्चिमी तट और पूर्व-मध्य क्षेत्रों, दक्षिण अमेरिका के पूर्वी और पश्चिमी तटों से होते हुए मैगलन जलडमरूमध्य तक, स्कैंडिनेवियाई पर्वतीय द्वीप और उत्तरी यूराल पर्वतीय द्वीप तक पहुँचाया।
उस समय, हिमालयी प्रजाति मुख्य रूप से हिमालय और पूर्वी साइबेरिया में केंद्रित थी। इसी आबादी से बाद में पुरानी और नई मैदानी हिमालयी प्रजातियों का विकास हुआ, साथ ही दक्षिण पूर्वी साइबेरिया में उत्तर-पूर्व में तुंगुसिक-पैरा-मंगोलिक शाखा का भी विकास हुआ।
ब्रू ओंग्राये संभवतः कंपन अनुक्रमों से बने श्रव्य होलोग्रामों की भाषा बोलते थे। संचार के इस रूप को बाद में हिमालय के मूल निवासियों ने एक ध्वनिक भाषा में रूपांतरित कर लिया, क्योंकि अधिकांश मानव भाषाएँ कंठ कंपनों पर आधारित होती हैं। इस संदर्भ में, ब्रू ओंग्राये लगभग 12,900 से 11,700 वर्ष पूर्व हुई यंगर ड्रायस वैश्विक महाबाढ़ के दौरान हिमालय में आए होंगे। यह उस प्रणाली का मूल रूप हो सकता है जो बाद में ऋषि शासक ओंगेरेव द्वारा शुरू की गई थोड़ी विकसित सत्तात्याग प्रणाली बन गई। इस आदि-प्रणाली में एक प्रबुद्ध प्राणी का महासागरों और महाद्वीपों से परे दूर देशों से आकर सामूहिक मानव अस्तित्व का मार्गदर्शन और सुधार करना शामिल था। इस प्रकार, मूल निवासियों द्वारा प्रबुद्ध प्राणियों को नेता के रूप में चुना जाता था।

ब्रू ओंग्राये के व्यक्तित्व की दूसरी, हालिया परत प्राचीन मैदानी हिमालयी लोगों के बीच एक ऋषि शासक की थी। उन्होंने ब्रू ओंग्राये उपाधि के देवता स्वरूप को इसलिए अपनाया ताकि वे ज्ञान के अपने उपदेशों का अधिक प्रभावी ढंग से प्रसार कर सकें और प्राचीन मैदानी हिमालयी वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के भीतर विभिन्न उपसमूहों को एकजुट कर सकें। यह काल संभवतः 2852 ईसा पूर्व और 2738 ईसा पूर्व के बीच का था।

वैश्विक महाबाढ़ के बाद पैतृक सभ्यतागत संबद्धता
प्रारंभिक पर्वतीय जनसमूह, जो पीली नदी बेसिन में पहुँचकर बस गए, बाद में पुराने मैदानी हिमालयी जनसमूह में विकसित हुए और ऊपरी से मध्य पीली नदी बेसिन पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। वे वहाँ की मूल निवासी आबादी के साथ घुलमिल गए, जो संभवतः आनुवंशिक रूप से मंगोलॉयड प्रकार की थीं। पुराने मैदानी हिमालयी जनसमूह को कुमारी कंडम से वैकल्पिक विज्ञान और संस्कृति विरासत में मिली, क्योंकि कुमारी कंडम के लोग वैश्विक महाप्रलय के दौरान और उसके बाद हिमालय में शरण लेने आए थे।
ऋषि शासक के नेतृत्व वाली आबादी में प्रमुख भाषा
ऋषि शासक के नेतृत्व वाली आबादी में प्रमुख भाषा प्राचीन मैदानी हिमालयी भाषा थी, जो निकट उत्तर और उत्तर-पश्चिम से इंडो-यूरोपीय अफनासीवन प्रोटो- टोचेरियन और येनिसेयन भाषाओं से प्रभावित थी।

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

2. ऋषि शासक गीरलीन नेरूंग, देवता समान कृषक (लगभग 2737 - लगभग 2638 ईसा पूर्व)

वैश्विक महाबाढ़ के बाद पैतृक सभ्यतागत संबद्धता
प्राचीन मैदानी हिमालयी (गेरोंगाओंगल डायव, या यांगशाओ संस्कृति, 5000 ईसा पूर्व - 3000 ईसा पूर्व); वे अपने ऋषि शासक के लिए प्रसिद्ध थे, जिन्होंने ज्वलंत जनजातीय संघ के प्रमुख के रूप में कार्य किया।
बाद में, उनके दूर के रिश्तेदार समूह - पैरा-हिमालयी - के आगमन के कारण उन्हें गठबंधन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। ये पैरा-हिमालयी, प्रोटो- तिब्बतो-बर्मी समूहों जैसे अन्य हिमालयी उपसमूहों से अलग होने के बाद, हिमालय की परिधि से उत्तर-पूर्व की ओर फैल गए। ऊपरी यांग्त्ज़ी नदी बेसिन में पैरा-ऑस्ट्रोनेशियन वर्ग (आनुवंशिक रूप से येनिसेयन-द्रविड़ मिश्रण, जिससे उनकी त्वचा का रंग यूरेशियन से यूरोपीय जैसा दिखता है) भौगोलिक रूप से पैरा-हिमालयी के उत्तर-पूर्वी विस्तार के मध्य में स्थित था। यह समूह पुराने मैदानी हिमालयियों से अलग था, जो ऊपरी से मध्य पीली नदी बेसिन में बसे हुए थे। पैरा-ऑस्ट्रोनेशियन संभवतः आत्मरक्षा की रणनीति के तहत पैरा-

हिमालयी के सहयोगी थे। इस गठबंधन के परिणामस्वरूप अंततः पैरा- ऑस्ट्रोनेशियन आंशिक रूप से फैलते हुए पैरा-हिमालयी में समाहित हो गए। यह भी संभव है कि पैरा-ऑस्ट्रोनेशियन लोग केवल बेसिन (या डोक बेसिन) में 'पीछे हटकर अलग नहीं रहे'। इसके बजाय, उनके वर्ग-शीर्षक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा स्वेच्छा से विस्तारित पैरा-हिमालयी लोगों में विलीन हो गया, और बाद में यंगर प्लेन हिमालयन का अभिन्न अंग बन गया। इसके बदले में, पैरा- ऑस्ट्रोनेशियन लोगों के एक छोटे हिस्से को बेसिन में रहने की अनुमति दी गई, जो पैरा-हिमालयी लोगों के हाथों लगातार हार झेलने के बाद भी गुमनाम रहे। गीरलीन नीरूंग, जो एक प्रबुद्ध व्यक्ति और देवता समान कृषक थे, वैश्विक महाबाढ़ से पहले (पुराने हिमालयी लोगों का नेतृत्व करने से 10,000 वर्ष पहले) मु आबादी से जुड़े हुए थे, संभवतः उस चेतना से उनके जुड़ाव के माध्यम से जो वास्तविकता के चौथे आयाम, यानी समय के बुढ़ापे के प्रभाव से परे थी। संभवतः यही स्थिति अधिकांश ऋषि शासकों के लिए भी थी जो सात-आयामी क्षेत्र में अपनी चेतना के मूल से पुनः जुड़ गए थे। ये लोग या तो हिमालय की दक्षिण-पूर्वी विस्तृत श्रृंखला में या इंडोनेशियाई द्वीपसमूह के पर्वतीय द्वीपों में शरण लिए हुए थे। बाद में, वे हिमालयी समूहों से हजारों साल पहले और प्राचीन मैदानी हिमालयियों के लगभग उसी समय छिपने की जगह से बाहर निकले।

जनजातीय संबद्धता: बार-बार आने वाली बाढ़ से उत्पन्न क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन सभ्यता, लाओंगताल संस्कृति (लियांगझू संस्कृति, 3300 ईसा पूर्व - 2300 ईसा पूर्व) का सार, अपने चरम पर बार-बार आने वाली स्थानीय बाढ़ों से आकारित हुआ था।
इन पर्यावरणीय दबावों के साथ-साथ हिमालयी विस्तार के कारण बड़े पैमाने पर पलायन हुआ। इस प्रवास ने पीली नदी बेसिन के मध्य से निचले क्षेत्रों में यांग्त्ज़ी नदी, ग्रेट लेक्स और पश्चिमी प्रशांत महासागर के बीच स्थित लाओंगताल उच्च संस्कृति के पुनरुत्पादन में योगदान दिया। युवा मैदानी हिमालयी और परित्यक्त लाओंगताल संस्कृति के बीच मजबूत सांस्कृतिक समानताएं इस पलायन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को दर्शाती हैं।

ऋषि शासक के नेतृत्व वाली आबादी में प्रमुख भाषा

ऋषि शासक के नेतृत्व वाली आबादी में प्रमुख भाषा प्राचीन मैदानी हिमालयी भाषा थी, जो निकट उत्तर और उत्तर-पश्चिम की इंडो-यूरोपीय अफनासीवन प्रोटो- टोचेरियन और येनिसेयन भाषाओं से प्रभावित थी। निचले यांग्त्ज़ी नदी क्षेत्र की विशाल झीलों से बार-बार आने वाली बाढ़ से भाग रहे शरणार्थियों के आत्मसात होने के कारण क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन भाषाओं का भी सीमित प्रभाव था।

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

3. ऋषि शासक कुहार वोआन का रथ शाफ्ट (लगभग 2637 – लगभग 2598 ईसा पूर्व) पुराने मैदानी हिमालयी और अर्ध-हिमालयी जनजातियों के बीच बने मैदानी हिमालयी गठबंधन के प्रथम पीढ़ी के संयुक्त प्रमुख वोआरिल गेरवोआरिम भालू कबीले से थे - जो उनके हिमालयी मूल का प्रतीक था, जहाँ भूरे भालू व्यापक रूप से पाए जाते थे। शुरुआत में, उन्होंने अपने स्वयं के अर्ध-हिमालयी येलो थंडर जनजातीय संघ के संयुक्त प्रमुख के रूप में कार्य किया। हालाँकि, उनके द्वारा शुरू किए गए गठबंधन के माध्यम से, उनकी भूमिका विकसित हुई, जिसने अंततः पुराने मैदानी हिमालयी जनजातियों के विलय के बाद युवा मैदानी हिमालयी जनजातियों को आकार दिया।

वैश्विक महाबाढ़ के बाद पैतृक सभ्यतागत संबद्धता
पर्वतीय क्षेत्रों में बसे लोगों का विस्तार हुआ, जिन्हें परा-हिमालयी समूह (जो बाद में युवा मैदानी हिमालयी कहलाए) के नाम से जाना जाता है। इन्होंने ऊपरी से मध्य पीली नदी बेसिन पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया और वहाँ पहले से मौजूद जनसांख्यिकीय समूहों को विस्थापित कर दिया। उन्होंने कुमारी कंडम से वैकल्पिक विज्ञान और संस्कृति विरासत में पाई, क्योंकि कुमारी कंडम से निकले लोगों ने वैश्विक महाप्रलय के दौरान और उसके बाद हिमालय में शरण ली थी।
पीले जनजातीय संघ के ऋषि शासक कुहार वोआन के नेतृत्व में, परा-हिमालयी लोगों ने सर्वप्रथम यांग्त्ज़ी नदी बेसिन और पीली नदी बेसिन दोनों में क्रा-दाई और ह्मोंग-मिएन समूहों के विरुद्ध तीव्र सैन्य अभियान चलाए। यह घटना हिमालय के दक्षिणपूर्वी परिधीय पर्वतों से, इरावदी नदी, सालवीन नदी और मेकांग नदी की ऊपरी धाराओं की ऊँचाई के निकट, उनके उत्तरपूर्वी विस्तार के दौरान घटी, जिससे पूर्वी एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों से मोर्चे पीली नदी बेसिन के मध्य भाग में स्थानांतरित हो गए। इसके बाद, उन्होंने अपने ही रिश्तेदारों, प्राचीन मैदानी हिमालयी लोगों, विशेष रूप से गेरोंगाओंगल द्येव (यांगशाओ संस्कृति, 5000 ईसा पूर्व - 3000 ईसा पूर्व) के विरुद्ध एक और तीव्र सैन्य अभियान चलाया, जो पहले से ही पीली नदी बेसिन के मध्य भाग में बस चुके थे।
पुराने मैदानी हिमालयियों को पूरी तरह से आत्मसात करने के बाद, अर्ध-हिमालयी लोग युवा मैदानी हिमालयी बन गए। इस परिवर्तन ने उन्हें क्रा-दाई और ह्मोंग-मिएन गठबंधन के विरुद्ध एक विशाल सैन्य शक्ति बनाने में सक्षम बनाया (जोमोन-ऐनुरिक और ऑस्ट्रोनेशियन समूहों के मामूली समर्थन के साथ)। इस संघर्ष के कारण क्रा-दाई और ह्मोंग-मिएन समूहों का लगभग विलुप्तिकरण हो गया, जिससे वे पिछड़ेपन की ओर धकेल दिए गए। यांग्त्ज़ी बेसिन में बार-बार आने वाली बाढ़ ने उनके पतन को और भी बढ़ा दिया। उनमें से कई को महाद्वीपीय पूर्वी एशिया से महाद्वीपीय दक्षिणपूर्वी एशिया, विशेष रूप से वर्तमान थाईलैंड (जिस पर आगे चर्चा की गई है) में बड़े पैमाने पर पलायन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। अन्य लोग दक्षिण की ओर फैलते हुए युवा मैदानी हिमालयियों में समाहित हो गए, जिनका नया आधार पीली नदी बेसिन का मध्य क्षेत्र था।

हिमालय के दक्षिण-पूर्वी परिधि से परा-हिमालयी विस्तार 2852 ईसा पूर्व और 2200 ईसा पूर्व के बीच हुआ। इस अवधि के अंत तक, परा-हिमालयी लोगों ने महाद्वीपीय पूर्वी एशिया के मध्य से उत्तरी भागों में मूल क्रा-दाई और ह्मोंग-मिएन आबादी को लगभग पूरी तरह से समाप्त कर दिया था। केवल कुछ ही लोग बचे रहे जिन्होंने युवा मैदानी हिमालयी संघ प्रणाली में स्वेच्छा से आत्मसात होने का विकल्प नहीं चुना, और उन्होंने दक्षिण-पश्चिमी पहाड़ों के साथ-साथ महाद्वीपीय पूर्वी एशिया के पूर्वी तटीय किनारे पर एक अल्पसंख्यक आबादी का गठन किया। विडंबना यह है कि पर्वतीय क्षेत्र आंशिक रूप से उन पहाड़ों के साथ ओवरलैप करता था जहाँ से परा-हिमालयी लोगों ने मूल रूप से विस्तार किया था। ये शेष क्रा-दाई और ह्मोंग-मिएन समूह अगली सहस्राब्दियों तक (2200 ईसा पूर्व - 8 वीं शताब्दी ईस्वी; यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या वे पूर्वी एशिया महाद्वीप पर स्टाओंग जनजातीय संघ के कब्ज़े में शामिल हुए थे, जो पूर्वी एशिया महाद्वीप के पूर्वी तटीय क्षेत्र से शुरू हुआ एक क्रा-दाई-ह्मोंग-मिएन पुनर्जागरण था जो 1600 ईसा पूर्व - 1046 ईसा पूर्व तक चला) अस्तित्व में रहे, और फिर वर्तमान थाईलैंड में चले गए। वहाँ, वे थाई लोगों के पूर्वज बने - जो पहले की स्वदेशी सियाम आबादी और बाद में आए ताई प्रवासियों का मिश्रण थे। एक सहस्राब्दी बाद पूर्वी एशिया महाद्वीप के मुख्य भाग पर स्टाओंग जनजातीय संघ का कब्ज़ा (1600 ईसा पूर्व - 1046 ईसा पूर्व) - जो पीली नदी बेसिन के निचले से मध्य क्षेत्रों से लेकर यांग्त्ज़ी नदी बेसिन के उत्तरी तटों तक फैला हुआ था - क्रा-दाई और ह्मोंग-मिएन पुनर्जागरण के रूप में कार्य किया। यह पुनरुत्थान येलो सी बे क्षेत्र के आसपास, कोरियाई प्रायद्वीप तक फैले क्षेत्र में, जोमोन-ऐनुरिक और कुछ हद तक ऑस्ट्रोनेशियन और इंडो-यूरोपियन समूहों के साथ एक कनिष्ठ साझेदारी के रूप में सामने आया। इन समूहों में, जोमोन-ऐनुरिक ने प्रमुख शासक वर्ग के रूप में नेतृत्व किया। जोमोन-ऐनुरिक लोग सांस्कृतिक और आनुवंशिक रूप से क्रा-दाई और ह्मोंग-मिएन समूहों के समान हो सकते थे। दोनों मिश्रित आबादी थीं, जिनमें उत्तरी अमेरिकी मूल निवासी जैसे दिखने वाले येनिसेयन-ना-डेने वंश (सबसे उल्लेखनीय दृश्य उदाहरण 1872 में ली गई वॉकिंग शूटर, वाह-कू-ता-मोन-इह, हुंकपापा, ग्रेट प्लेन लकोटा जनजाति की प्रोफ़ाइल तस्वीर है, जो संघीय सरकार के अभिलेखागार में 1872 के जनजातीय प्रतिनिधिमंडलों में से एक थी) और

ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी जैसे दिखने वाले द्रविड़ियन लक्षण शामिल थे। हालांकि, जोमोन-ऐनुरिक लोगों में येनिसेयन-ना-डेने आनुवंशिक संरचना का अनुपात अधिक होने की संभावना थी, जिससे उनका रूप-रंग अधिक यूरोपीय जैसा दिखता था (येनिसेयन-ना-डेने, इंडो-यूरोपियनों के आनुवंशिक संबंधी रिश्तेदार हैं)। समय के साथ, उन्होंने क्रा-दाई और ह्मोंग-मिएन सांस्कृतिक तत्वों के साथ-साथ ऑस्ट्रोनेशियन आधार को भी आत्मसात कर लिया। बाद में, उन्होंने पूर्वी मंगोलिया और पश्चिमी से दक्षिण-पश्चिमी मंचूरिया के सीमावर्ती क्षेत्रों में इंडो-यूरोपियन अफनासीवन (आनुवंशिक रूप से नॉर्डिक प्रकार, अफनासीवो संस्कृति) और प्रोटो-तुर्किक समूहों से भी कम मात्रा में मिश्रण प्राप्त किया।

वाह-कू-टा-मोन-इह नामक एक पैदल निशानेबाज की 1872 की प्रोफ़ाइल तस्वीर। ग्रेट प्लेन लकोटा जनजाति के हुंकपा

ऐनुरिक व्यक्ति का चित्र

ऋषि शासक के नेतृत्व वाली आबादी में प्रमुख भाषा
दोनों समूहों के बीच विजय और गठबंधन के बाद, युवा मैदानी हिमालयी भाषा प्रमुख भाषा बन गई और उसने पुरानी मैदानी हिमालयी भाषा को आत्मसात कर लिया। यही प्रक्रिया क्रा-दाई-होंग-मिएन भाषाई तत्वों के युवा मैदानी हिमालयी समूह द्वारा आत्मसात किए जाने पर भी लागू होती है।
इसके अतिरिक्त, क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन भाषाओं का प्रभाव सीमित था क्योंकि यंगर प्लेन हिमालयी क्षेत्र ने निचली यांग्त्ज़ी नदी के ग्रेट लेक क्षेत्र से बार-बार आने वाली बाढ़ से भाग रहे शरणार्थियों को अपने में समाहित कर लिया था।
विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

4. ऋषि शासक स्टूल गेहूल द लेसर ब्राइटनेस (लगभग 2597 - लगभग 2514 ईसा पूर्व)

यंगर प्लेन हिमालयन वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के अंतर्गत निर्वाचित द्वितीय पीढ़ी का पारस्परिक प्रमुख, क्रा-दाई-होंग-मिएन जनजातीय अवशेष प्रजा का प्रभावी शासक था।
*इस चरण में आदिम त्याग प्रणाली में अभी भी एक प्रबुद्ध व्यक्ति का होना शामिल था जो दूर-दराज के उन देशों से आया हो, या जिसके पूर्वज उन देशों से आए हों जो महासागरों और महाद्वीपों के पार स्थित हैं, ताकि कथित वास्तविकता, या सामूहिक जीवन के मामलों को बेहतर बनाने में मदद मिल सके।

वैश्विक महाबाढ़ के बाद पैतृक सभ्यतागत संबद्धता
उनका वंश अटलांटिस से आया था और उन्होंने तेंगरी ताघ या काकेशस में शरण ली थी। वहाँ, उनका वंश उत्तरी यूरोपीय दिखने वाले अफनासीवो संस्कृति वर्ग के लोगों के साथ घुलमिल गया, जो संख्यात्मक रूप से अधिक थे। समय के साथ, उनके लोगों ने इन आनुवंशिक लक्षणों को अपना लिया और अंततः इंडो-यूरोपीय शाखा के हिस्से के रूप में सामने आए।
यह संभावना है कि अफनासीवन प्रोटो-टोचारियन उनके पूर्वज वंश थे, जो बैकाल झील और मंगोलियाई पठार क्षेत्र से आगे दक्षिण में पीली नदी बेसिन में चले गए थे।
विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

5. ऋषि शासक टायोन कुहारोक, चिंता वशीकरणकर्ता (लगभग 2513 ईसा पूर्व - लगभग 2436 ईसा पूर्व)
युवा मैदानी हिमालयी वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के अंतर्गत निर्वाचित तृतीय पीढ़ी के सामूहिक प्रमुख का संबंध क्रा-दाई-होंग-मिएन प्रजा पर लगाए गए धार्मिक आदेश से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था। *इस चरण में आदिम त्याग प्रणाली में अभी भी एक ऐसे प्रबुद्ध व्यक्ति का होना शामिल था जो उन दूर देशों से आया हो या जिसके पूर्वज उन देशों से आए हों जो महासागरों और महाद्वीपों के पार स्थित हैं, ताकि कथित वास्तविकता या सामूहिक जीवन के मामलों को बेहतर बनाने में मदद मिल सके।
इस जनादेश के हिस्से के रूप में, उन्होंने धार्मिक सुधारों की एक श्रृंखला के माध्यम से क्रा-दाई-होंग-मिएन समूहों द्वारा प्रचलित आध्यात्मिकता- आधारित प्रणाली पर प्रतिबंध लगा दिया, और इसे 'जादू टोना' करार दिया।
यह प्रतिबंध संभवतः युवा मैदानी हिमालयियों द्वारा क्रा-दाई-होंग-मिएन आध्यात्मिक प्रणाली की गलतफहमी का परिणाम था, न कि इस बात का संकेत कि क्रा-दाई-होंग-मिएन आध्यात्मिकता पतन की कगार पर पहुंच गई थी और उसे 'सुधार' की आवश्यकता थी।

एनक्रोंगल केरूंग कबीले के खिलाफ युद्ध
चिंता को शांत करने वाले टायोन कुआहरोक की एक और महत्वपूर्ण विरासत न्क्रोंगल केरूंग कबीले के खिलाफ उनके सैन्य अभियान थे, जिनका वंश प्राचीन मैदानी हिमालयी क्षेत्रों से जुड़ा था। यह कबीला, जिसे सामूहिक रूप से जल देवता के रूप में भी पूजा जाता था, पीली नदी बेसिन के मध्य क्षेत्र में रहता था। न्क्रोंगल केरूंग, या पारस्परिक कार्य कबीले, के पास बाढ़ प्रबंधन की उत्कृष्ट तकनीक के कारण काफी शक्ति थी, जो लगातार बाढ़ लाने वाली पीली नदी को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण थी। न्क्रोंगल केरूंग कबीले की अत्यधिक शक्ति को लेकर संभवतः विवाद थे, क्योंकि बाढ़ प्रबंधन में उनकी तकनीकी बढ़त ने युवा मैदानी हिमालयी वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के मूलभूत अधिकार को खतरे में डाल दिया था। वैकल्पिक रूप से, यह संघर्ष न्क्रोंगल केरूंग कबीले की उस तकनीक से उत्पन्न हो सकता है जो बाढ़ की बढ़ती आवृत्ति के कारण अप्रचलित हो गई थी, और अपनी विधियों में

संशोधन करने के उनके हठपूर्ण प्रतिरोध ने सामयिक बाढ़ को और भी तीव्र कर दिया था। इससे यंगर प्लेन हिमालयन को सैन्य अभियानों के माध्यम से अपनी 'बल सुधार' और शांति स्थापना को सही ठहराने का एक आधार मिल गया।

वैश्विक महाबाढ़ के बाद टायोन कुहारोक का पैतृक सभ्यतागत संबंध कुमारी कंडम वंश से था और वे साइबेरिया के आर्कटिक तट पर शरण लेने वाले एक समूह के वंशज थे। यह समूह संभवतः यूरोपीय जैसा दिखता था, हालांकि उनकी त्वचा का रंग गहरा था, और संभवतः ना-डेने उत्तरी अमेरिकी स्वदेशी समूह से संबंधित था (वैश्विक महाबाढ़ से पहले याना राइनोसेरस हॉर्न साइट से संबंधित मूल निवासी आबादी के साथ विलय का परिणाम)। मध्य साइबेरिया के अफोंटोवा गोरा में हुए उत्परिवर्तन (लगभग 18,000 - 12,000 वर्ष पूर्व) से उत्पन्न गोरी त्वचा वाले इंडो-यूरोपीय मूल रूप से 'वैकल्पिक यूरोपीय दिखने वाले प्रकार' से उत्पन्न एक उत्परिवर्तनीय उप-समूह थे, जो याना राइनोसेरस हॉर्न साइट के साथ-साथ पश्चिमी शिकारी-संग्रहकर्ता आबादी से संबंधित थे। समय के साथ, उन्होंने बैकाल झील क्षेत्र में पुनर्जीवित हो रहे येनिसेयन समूहों (जो ना-डेने उत्तरी अमेरिकी से भी संबंधित थे, जो इस समय काफी हद तक 'वैकल्पिक यूरोपीय प्रकार' थे) को आत्मसात कर लिया, जिन्होंने पहले तेंगरी ताघ और अल्ताई पहाड़ों में शरण ली थी।
इसके अतिरिक्त, इस वंश में कोरियाई प्रायद्वीप पर मौजूद जोमोन-ऐनुरिक आबादी के तत्व समाहित हो गए और यह दक्षिणी मंगोलिया तक फैला हुआ था। वहीं, उनके पूर्वज वंश दक्षिण की ओर पीली नदी बेसिन के निचले क्षेत्र, विशेष रूप से पीली सागर की खाड़ी के दक्षिणी तटों की ओर बढ़ गए थे।

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

6. ऋषि शासक केहूग, त्वरित संचारक (लगभग 2435 ईसा पूर्व - लगभग 2366 ईसा पूर्व)

यंगर प्लेन हिमालयन वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के अंतर्गत निर्वाचित चौथी पीढ़ी के पारस्परिक प्रमुख।
*इस चरण में आदिम त्यागप्रबंध प्रणाली में एक प्रबुद्ध व्यक्ति का होना शामिल था, जिसके पूर्वज महासागरों और महाद्वीपों के पार स्थित दूर देशों से आए थे ताकि कथित वास्तविकता, या सामूहिक जीवन के मामलों को बेहतर बनाने में मदद मिल सके; फिर भी इस पीढ़ी में, यह उन लोगों की ओर अधिक झुक गई जिनके अधीन लोगों के साथ संबंध थे ताकि सहानुभूति की एक छवि बनाई जा सके, वास्तविक अर्थों में और प्रभावी शासन के लिए एक साधन के रूप में भी।

वैश्विक महाबाढ़ के बाद पैतृक सभ्यतागत संबद्धता
प्राचीन मैदानी हिमालयी - गेरोंगाओंगल दियेव संस्कृति (यांगशाओ संस्कृति, 5000 ईसा पूर्व - 3000 ईसा पूर्व)
प्राचीन मैदानी हिमालयी लोग अपने ऋषि शासक के लिए प्रसिद्ध थे, जो ज्वाला जनजाति जनजातीय संघ का नेतृत्व करते थे।

हालांकि, बाद में उन्हें अपने दूर के रिश्तेदार समूह - पैरा-हिमालयी लोगों के साथ गठबंधन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। ये पैरा-हिमालयी लोग हिमालय की परिधि से उत्तर-पूर्व की ओर फैले हुए थे, जो अन्य हिमालयी उपसमूहों, जैसे कि प्रोटो-तिब्बती-बर्मी समूहों से अलग हो गए थे।
लाओंगटाल का आधार (लियांगझू संस्कृति, 3300 ईसा पूर्व - 2300 ईसा पूर्व) यांग्त्ज़ी नदी, विशाल झीलों और पश्चिमी प्रशांत महासागर के बीच स्थित क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन सभ्यता, लाओंगताल संस्कृति को अपने चरम पर लगातार स्थानीय बाढ़ों और हिमालयी पर्वतमाला के बढ़ते अतिक्रमण का सामना करना पड़ा। इन दबावों के कारण बड़े पैमाने पर पलायन हुआ, जिससे पीली नदी बेसिन के मध्य से निचले क्षेत्रों में यांग्त्ज़ी विशाल झील लाओंगताल उच्च संस्कृति का पुनरुत्पादन हुआ। केहूग द क्विक कम्युनिकेटर की विरासत का एक प्रमुख पहलू पराजित क्रा-दाई-होंग-मिएन समूहों के वंशजों के प्रति उनकी करुणा थी, जिन्होंने उन्हें युवा मैदानी हिमालयी वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूह में प्रजा के रूप में एकीकृत किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने इसी दृष्टिकोण को दूरस्थ शाखा के ऑस्ट्रोनेशियन वर्ग-उपाधि तक भी बढ़ाया, जो अनिवार्य रूप से उनके द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले आधे थे।

ऋषि शासक के नेतृत्व वाली आबादी में प्रचलित प्रमुख भाषा: युवा मैदानी हिमालयी भाषा एक क्रियोल थी, जिसमें युवा मैदानी हिमालयियों द्वारा विजय और उनके साथ गठबंधन के माध्यम से पुराने मैदानी हिमालयी उपस्तरों को समाहित किया गया था। युवा मैदानी हिमालयियों द्वारा विजय प्राप्त करने के बाद इसने क्रा-दाई-होंग-मिएन से भी भाषाई तत्व आत्मसात किए। इसके अतिरिक्त, क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन भाषाओं का प्रभाव सीमित था, क्योंकि निचले यांग्त्ज़ी नदी के विशाल झील क्षेत्र से बार-बार आने वाली बाढ़ से भाग रहे शरणार्थियों को इसमें शामिल कर लिया गया था।

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

7. ऋषि शासक ओंगेरेव द नोबल (लगभग 2365 ईसा पूर्व - लगभग 2256 ईसा पूर्व) यंगर प्लेन हिमालयन वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के अंतर्गत पांचवीं पीढ़ी के पारस्परिक प्रमुख के रूप में निर्वाचित।
इस चरण में आदिम त्यागप्रबंध प्रणाली में एक प्रबुद्ध व्यक्ति का होना शामिल था, जिसके पूर्वज महासागरों और महाद्वीपों के पार स्थित दूरस्थ भूमि से आए थे, ताकि कथित वास्तविकता, या सामूहिक जीवन के मामलों को बेहतर बनाने में मदद मिल सके। फिर भी, यह युग उस संक्रमणकालीन प्रक्रिया के अंत के निकट था, जिसमें दूरस्थ भूमि से आए पूर्वजों वाले प्रबुद्ध व्यक्ति से जनसेवा के लिए सामूहिक प्रमुख की भूमिका निभाने वाले अधिक सरलीकृत व्यक्ति की ओर बदलाव हो रहा था। यह महान बाढ़ के बाद कुमारी कंडम, मु और अटलांटिस, इन तीन उन्नत सभ्यताओं से सांस्कृतिक संबंधों के टूटने और बदले में अगर्थ से उनके संबंधों के टूटने का प्रतीक था। इसी प्रकार और इसी कारण से त्यागप्रबंध प्रणाली का आविष्कार और उदय हुआ।

वैश्विक महाबाढ़ के बाद पैतृक सभ्यतागत संबद्धता
सांस्कृतिक रूप से अटलांटिस से विरासत प्राप्त इस समूह ने तेंगरी ताघ या काकेशस में शरण ली, जहाँ वे उत्तरी यूरोपीय दिखने वाले अफनासीवो संस्कृति

वर्ग (3300 ईसा पूर्व - 2500 ईसा पूर्व) के साथ घुलमिल गए। अफनासीवो लोग उन पर्वतीय द्वीपों पर संख्यात्मक रूप से प्रमुख थे, और समय के साथ, शरणार्थियों ने उनके आनुवंशिक लक्षणों को आत्मसात कर लिया, और अंततः इंडो- यूरोपीय शाखा के रूप में उभरे। इससे संभवतः अफनासीवन प्रोटो-टोचारियन उनके पूर्वज वंश बन गए, जो बाद में बैकाल झील और मंगोलियाई पठार क्षेत्र से दक्षिण की ओर पीली नदी बेसिन में चले गए।

ऋषि शासक के नेतृत्व वाली आबादी में प्रमुख भाषा
यंगर प्लेन हिमालयी भाषा एक क्रियोल थी, जिसमें निम्नलिखित भाषाएँ शामिल थीं:
• पुराने मैदानी हिमालयी आधार, जो नए मैदानी हिमनदों में समाहित हो गए। हिमालयियों द्वारा उन पर विजय।
• क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन सबस्ट्रेट, जो अवशोषण के माध्यम से पेश किए गए थे
यांग्त्ज़ी नदी के निचले हिस्से में स्थित विशाल झील क्षेत्र में सभ्यता को तबाह करने वाली बाढ़ से भाग रहे शरणार्थी।
• क्रा-दाई-होंग-मिएन तत्व, विजय के बाद एकीकृत किए गए।
यंगर प्लेन हिमालयन द्वारा।

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

8. ऋषि शासक स्टून्स, दो पुतलियों वाला पथभ्रष्ट (लगभग 2255 - लगभग 2206 ईसा पूर्व)
यंगर प्लेन हिमालयन वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के अंतर्गत निर्वाचित छठी पीढ़ी के पारस्परिक प्रमुख। उनकी प्रमुख विरासत ओंगेरेव द नोबल द्वारा आविष्कृत शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण प्रणाली, त्याग प्रणाली को स्वीकार करना था, जिसके कारण अंततः उन्हें पारस्परिक प्रमुख नियुक्त किया गया। इस नियम-विघ्न नवाचार के कारण ही उन्हें 'विचलित' उपनाम मिला होगा, साथ ही उनकी असामान्य शारीरिक विशेषताओं, विशेष रूप से उनकी असामान्य आँखों (संभवतः पॉलीकोरिया) के कारण भी।

आदिम त्यागप्रबंधन प्रणाली के पथभ्रष्ट के रूप में, स्टून्स का दूरस्थ भूमि और तीन उन्नत सभ्यताओं से संबंध अब उन लोगों के लिए केंद्रीय नहीं रह गया था जिनकी उन्होंने सेवा की। उनकी विरासत में पितृभक्ति के आदर्श पर विशेष बल दिया गया था, जो सामूहिक जीवन के मामलों को बेहतर बनाने वाले एक पारस्परिक प्रमुख होने के व्यावहारिक पक्ष का प्रतीक था।
ये सद्गुणी, सभ्य कर्म परिवार की अवधारणा के भीतर पदानुक्रमित व्यवस्था के तहत शोषण और भय-आधारित मानसिक कंडीशनिंग पर आधारित अनिवार्य दासता की

स्थिति में तेजी से परिवर्तित हो जाएंगे, जिससे महज 1000 वर्षों में पारिवारिक संरचना के भीतर परिवार के सदस्यों के बीच शक्ति का एक विशाल असंतुलन और असमान वितरण पैदा होगा।

वैश्विक महाबाढ़ के बाद पैतृक सभ्यतागत संबद्धता
वह कुमारी कंडम और अटलांटिस से विरासत में मिले एक समूह से संबंधित थे, जिन्होंने साइबेरिया के आर्कटिक तटों पर शरण ली और माल्टा-बुरेट संस्कृति के बीच बस गए। यह समूह दिखने में यूरोपीय था, हालांकि उनकी त्वचा का रंग गहरा था, और उत्तरी अमेरिकी मूल निवासियों और मूल यूरालिक लोगों दोनों से संबंधित था। दूसरी ओर, उत्तरी अमेरिकी मूल निवासियों, मुख्य रूप से ना-डेन, सिओक्स और एल्गोनक्वियन लोगों में पाए जाने वाले यूरेशियन दिखने वाले लक्षण, उत्तरी अमेरिका में प्रवास से पहले, उसके दौरान या उसके बाद, पूर्वी साइबेरियाई तुंगुसिक, मंगोलॉयड दिखने वाले लोगों के साथ इस तरह की मूल 'वैकल्पिक यूरोपीय' आबादी के मिश्रण का परिणाम थे।
समय के साथ, उन्होंने संभवतः बैकाल झील क्षेत्र से बाद में उभरे येनिसेयन समूहों को आत्मसात कर लिया, जिन्होंने पहले तेंगरी ताघ में शरण ली थी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कोरियाई प्रायद्वीप पर मौजूद जोमोन-ऐनुरिक आबादी के तत्वों को भी एकीकृत किया और धीरे-धीरे दक्षिण-पूर्व की ओर प्रवास करते हुए दक्षिणी मंगोलिया तक विस्तार किया।

ऋषि शासक के नेतृत्व वाली आबादी में प्रचलित प्रमुख भाषा:
यंगर प्लेन हिमालयी भाषा एक क्रियोल थी, जिसमें निम्नलिखित भाषाएँ शामिल थीं:
• पुराने मैदानी हिमालयी आधार से लेकर नए मैदानी क्षेत्र तक
हिमालयियों द्वारा उन पर विजय।
• क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन सबस्ट्रेट, जो अवशोषण के माध्यम से पेश किए गए थे
यांग्त्ज़ी नदी के निचले हिस्से में स्थित विशाल झील क्षेत्र में सभ्यता को तबाह करने वाली बाढ़ से भाग रहे शरणार्थी।
• क्रा-दाई-होंग-मिएन तत्व, विजय के बाद एकीकृत किए गए।
यंगर प्लेन हिमालयन द्वारा।

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

9. पारस्परिक प्रमुख वोराल, सरीसृप-कीट रूपान्तर (लगभग 1989 ईसा पूर्व से प्रारंभ)
युवा मैदानी हिमालयी वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों / त्याग प्रणाली और ब्लॉसम फ्लरी लोगों के संक्रमण के तहत निर्वाचित अंतिम पारस्परिक प्रमुख (सातवीं पीढ़ी)
जलीय छतों पर खिलने वाली जनजातियों के बारे में, सरीसृप-कीट रूपांतरित वोरल को सौर देवता ब्रू ओंग्रे की तरह अर्ध-देवता का दर्जा दिए जाने के साथ, यह संभावना है कि उसने उन दूरस्थ समूहों के साथ फिर से संपर्क स्थापित किया होगा जिन्होंने तीन उन्नत सभ्यताओं के ज्ञान को संरक्षित रखा था। इसी प्रकार, वोआरल के शासनकाल के दौरान, युवा मैदानी हिमालयियों ने स्वयं को 'फूलों की बौछार वाले लोग' कहकर पुकारना शुरू कर दिया। यह शब्द संभवतः डीएनए के अनुप्रस्थ काटों के हिमखंड जैसे पैटर्न को संदर्भित करता था, जिसकी व्याख्या साइमेटिक कंपन-आवृत्ति संरचनाओं के माध्यम से की गई थी - यह एक ऐसा भावपूर्ण प्रयास था जो तीन उन्नत सभ्यताओं से जुड़े अतीत के सांस्कृतिक संबंधों को स्मरण करने के लिए किया गया था। दूसरी ओर, लगातार बाढ़ से भरी नदी के किनारे जलोढ़ घाटियों पर जनजातीय संघ की बस्तियों की

भौगोलिक स्थिति ने बाद में सद्भाव की खोज और वास्तविकता के घटित होने के संदर्भ में हस्तक्षेप के बजाय अवलोकन पर आधारित सभ्यतागत मानसिकता को और मजबूत किया।
हालाँकि, तीनों उन्नत सभ्यताओं से ज्ञान को पुनः प्राप्त करने के प्रयास संभवतः सीमित थे, और मुख्य रूप से खोए हुए ज्ञान की पूर्ण पुनर्प्राप्ति के बजाय 'ब्लॉसम फ्लरी पीपल' उपनाम के सुदृढ़ीकरण में योगदान दिया। इस सीमा का मूल कारण वोआरल का चेतना के मूल से अपेक्षाकृत निम्न स्तर का जुड़ाव था - सौर देवता ब्रू ओंग्राये के विपरीत, वह तीनों उन्नत सभ्यताओं के सभ्यतागत लक्षणों के अवशेषों को पूरी तरह से संप्रेषित करने में असमर्थ थे। 'ब्लॉसम फ्लरी पीपल' उपनाम को स्थायी रूप से अपनाने का एक अन्य सूक्ष्म पहलू यह है कि इसने एक पहचान परिवर्तन को चिह्नित किया, जो युवा मैदानी हिमालयी पहचान के धीरे-धीरे लुप्त होने का संकेत था, जिसका संबंध तीनों उन्नत सभ्यताओं से था। वोआरल के शासनकाल के अंत तक, यह परिवर्तन पूर्ण हो चुका था, और समूह ने 'ब्लॉसम फ्लरी पीपल' के रूप में अपनी नई पहचान को पूरी तरह से अपना लिया था।

एनक्रोंगल केरोंग के साथ सामयिक युद्ध - पारस्परिक कार्य कबीला सरीसृप-कीट रूपांतरक वोरल की दूसरी विरासत में बाढ़ प्रबंधन की भिन्न धारणाओं को लेकर न्क्रोंगल केरोंग (पुराने मैदानी हिमालयी वंश के) के पारस्परिक कार्य कबीले के खिलाफ एक और सामयिक युद्ध का नेतृत्व करना शामिल था।

वैश्विक महाबाढ़ के बाद पैतृक सभ्यतागत संबद्धता
प्राचीन मैदानी हिमालयी और लाओंगताल संस्कृति का प्रभाव: प्राचीन मैदानी हिमालयी (गेरोंगाओंगल द्येव / यांगशाओ संस्कृति, 5000 ईसा पूर्व - 3000 ईसा पूर्व) अपने तेजस्वी जनजातीय संघ के ऋषि शासक के लिए प्रसिद्ध थे। हालाँकि, बाद में उन्हें अपने दूर के रिश्तेदार समूह - हिमालयी परिधि से उत्तर-पूर्वी हिमालयी विस्तार - के आगमन के कारण एक गठबंधन में शामिल होने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह विस्तार अन्य हिमालयी उपसमूहों, जैसे कि आदि- तिब्बती-बर्मी समूहों से उनके अलग होने के बाद हुआ।

लाओंगताल संस्कृति (लियांगझू संस्कृति, 3300 ईसा पूर्व - 2300 ईसा पूर्व) एक क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन सभ्यता थी जिसने अपने चरम पर बार-बार स्थानीय बाढ़ का सामना किया। इसके अतिरिक्त, हिमालयी विस्तार के कारण बड़े पैमाने पर पलायन और लाओंगताल संस्कृति का परित्याग हुआ, जिससे पीली नदी बेसिन के मध्य से निचले क्षेत्रों में यांग्त्ज़ी झील लाओंगताल उच्च संस्कृति की प्रतिकृति विकसित हुई। यह क्षेत्र यांग्त्ज़ी नदी, विशाल झीलों और पश्चिमी प्रशांत महासागर के बीच स्थित था।

आपसी मुखिया के नेतृत्व वाली आबादी में प्रचलित प्रमुख भाषा: युवा मैदानी हिमालयी भाषा एक क्रियोल थी, जिसमें निम्नलिखित शामिल थे:
• पुराने मैदानी हिमालयी आधार, जो नए मैदानी हिमनदों में समाहित हो गए। हिमालयियों द्वारा उन पर विजय।
• क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन सबस्ट्रेट, जो अवशोषण के माध्यम से पेश किए गए थे
यांग्त्ज़ी नदी के निचले हिस्से में स्थित विशाल झील क्षेत्र में सभ्यता को तबाह करने वाली बाढ़ से भाग रहे शरणार्थी।
• क्रा-दाई-होंग-मिएन तत्व, विजय के बाद एकीकृत किए गए।
यंगर प्लेन हिमालयन द्वारा।

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

10. जनजातीय संघ प्रमुख म्मदेओंग लीराओंग, शांति-प्रेरक
लगभग 1600 ईसा पूर्व से शुरू होकर, क्रा-दाई-होंग-मिएन सभ्यता को पीले वज्र ऋषि शासक जनजातीय गठबंधन से मिली लगभग घातक पराजय के 1000 साल बाद, जनजातीय गठबंधन के माध्यम से पुनर्जागरण और उसकी शक्ति को फिर से प्रमुखता प्राप्त हुई।

वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूह नाम 'स्टाओंग' के अंतर्गत गठित नए जनजातीय गठबंधन के शासक ने एक ऐसे गठबंधन का नेतृत्व किया जिसमें व्यापारी-पुजारी परंपरा और स्कैपुलीमैंसी तकनीक जैसे सांस्कृतिक तत्व शामिल थे, जो तीन उन्नत सभ्यताओं से विरासत में मिले थे।
स्टांग नाम का संबंध 'व्यापारी' के अलावा 'पत्थर' शब्द से भी हो सकता है। यह उनकी चट्टानों में छेद करने की क्षमता को दर्शाता है, जो एक परीक्षा उत्तीर्ण करने की रस्म का हिस्सा थी और जिसके कारण वे 7 वें आयाम में स्थित पक्षी-प्रवण लोक में पहुँचे, जहाँ चेतना का केंद्र भी स्थित है - यह संकेत नाम में ही छिपा है। एक अन्य संभावित बाहरी संबंध यहूदी वर्ग की उपाधि से है, जिन्होंने संभवतः समुद्री यात्रा की तकनीक को बरकरार रखा और स्टांग समूह के साथ शारीरिक संपर्क बनाए रखा, या यहाँ तक कि उसका हिस्सा भी रहे।

यहूदी उपनामों में प्रयुक्त होने वाला सामान्य प्रत्यय 'स्टीन', जिसका अर्थ भी लगभग समान है, सांस्कृतिक समानता का संकेत देता है। यह संबंध व्यापारी-पुजारियों के रूप में स्टांगों के विशिष्ट दर्जे के दावे को मजबूत करता है और गठबंधन को सुदृढ़ बनाने में सहायक होता है।

पैतृक सभ्यतागत संबद्धता
हिमालयी पर्वतमाला के अतिक्रमण और उनके क्षेत्रों के विलय के बावजूद क्रा-दाई-होंग-मिएन और ऑस्ट्रोनेशियन समूह अलग-अलग बने रहे। संभवतः उन्होंने पीली सागर के तटों के साथ समुद्री यात्रा के माध्यम से ऐसा किया, और जोमोन-ऐनुरिक और प्रोटो-टोचारियन के साथ-साथ हाल ही में आए साका लोगों के साथ सीमित गठबंधन बनाए। इस समुद्री नेटवर्क ने इन समूहों के साथ उनके बाद के गठबंधन की नींव रखी, जिससे स्टाओंग नाम से क्रा-दाई-होंग-मिएन पुनर्जागरण में योगदान मिला। यह गठबंधन मुख्य रूप से जोमोन-ऐनुरिक के साथ था, जिसमें अफनासीवन प्रोटो-टोचारियन और एंड्रोनोवो साका लोगों की भूमिका कम थी। स्कैपुलीमैंसी जैसी साझा वर्ग-उपाधि सांस्कृतिक विशेषताओं ने उन्हें अमूर नदी बेसिन में रहने वाले स्वेकदीन (एक मंगोलॉयड दिखने वाला तुंगुसिक समूह, जिसमें सीमित येनिसेयन-प्रोटो-तुर्किक और इंडो-यूरोपीय सांस्कृतिक और आनुवंशिक आधार था) से जोड़ा। वे जोमोन-ऐनुरिक जनजाति से भी जुड़े हुए थे, जो अब भी महाद्वीपीय पूर्वी एशिया और कोरियाई प्रायद्वीप में निवास करते थे। हालाँकि जोमोन-ऐनुरिक जनजाति बाद में स्थायी रूप से जापानी द्वीपसमूह में बस गई, लेकिन उन्होंने वहाँ के स्वदेशी समूहों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करते हुए स्कैपुलीमेंसी (भूत-प्रेत विद्या) को जापानी पौराणिक कथाओं में शामिल किया। ये द्वीपसमूह के स्वदेशी समूह स्वयं येनिसेयन-ना-डेने जनजाति से संबंधित थे, जो उत्तरी अमेरिका तक फैले एक निरंतर क्रम का सबसे पश्चिमी बिंदु है।

आपसी मुखिया के नेतृत्व वाली स्टाओंग आबादी में प्रमुख भाषा
प्रमुख भाषा क्रा-दाई-होंग-मिएन भाषाई निरंतरता थी, जो उनके गठबंधन के माध्यम से जोमोन-ऐनुरिक से काफी प्रभावित थी। युवा हिमालयी भाषा का प्रभाव सीमित था, क्योंकि युवा हिमालयियों ने पहले ही महाद्वीपीय पूर्वी

एशिया में पश्चिम की ओर क्रा-दाई-होंग-मिएन की मूल उपस्थिति को दबा दिया था और समाप्त कर दिया था।
क्रा-दाई-होंग-मिएन के शेष समूह प्रशांत महासागर के किनारे पूर्व में परिधीय स्थानों पर स्थित हैं।
तटीय क्षेत्रों में, वे अपनी वर्ग-विशेषता को संरक्षित रखने में सफल रहे। इससे उन्हें सभ्यतागत रूप से समान जोमोन-ऐनुरिक के साथ गठबंधन बनाने और म्म्डेओंग लीराओंग द्वारा आविष्कृत एक व्यवस्थित अवधारणा, स्टाओंग नामक नए वर्ग-विशेषता के तहत क्रा-दाई-होंग-मिएन पुनर्जागरण का मंचन करने की अनुमति मिली।

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

11. टीव जनजातीय संघ

टीव जनजाति ने लगभग 1600 ईसा पूर्व आसपास के जनजातीय गठबंधनों को आत्मसात करके और उनमें समाहित करके सापेक्षिक प्रमुखता प्राप्त करना शुरू किया। हालाँकि, उनकी वास्तविक शक्ति का उदय, जिसने उन्हें महाद्वीपीय सत्ता पर कब्जा करने में सक्षम बनाया, लगभग 1050 ईसा पूर्व हुआ। यह संभवतः ओर्डोस संस्कृति के पूर्वजों के साथ आंशिक गठबंधन द्वारा सुगम बनाया गया था,

जिसका केंद्र दक्षिणी मंगोलिया में ओर्डोस पठार (ओर्डोस लूप) पर था, जहाँ पीली नदी का मध्य भाग लूप के आकार का बहता है। इस गठबंधन में उसी ओर्डोस पठार क्षेत्र में स्थित ज़िचा संस्कृति भी शामिल थी, जिसके वंश में निम्नलिखित शामिल थे:
• अफनासीवन प्रोटो-टोचेरियन (आनुवंशिक रूप से नॉर्डिक प्रकार)
• एंड्रोनोवो साका (आनुवंशिक रूप से उत्तर पश्चिमी यूरोपीय प्रकार)
• मध्य साइबेरियाई येनिसेयन (आनुवंशिक रूप से सांवली त्वचा वाले यूरोपीय, बाद में)
मंगोलॉयड लोगों के साथ अंतर्मिश्रण के कारण वे यूरेशियन में परिवर्तित हो गए।
मध्य और पूर्वी साइबेरिया में तुंगुसिक समूहों की तलाश)

प्रोटो-टोचारियन, साका और मध्य साइबेरियाई येनिसेयनों के साथ गठबंधन में प्राचीन मैदानी हिमालयी पुनर्जागरण
टीव एक वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहीकृत पदनाम था, जो पिछले चक्र से विरासत में मिला था और कुलीन पुजारी-व्यापारियों को दर्शाता था।
स्टाओंग (एक स्टीन-संबंधित सांकेतिक उपाधि जो प्राचीन वैश्विक यहूदी समूहों से जुड़ी है) की तरह, टीव्स भी कुलीन वर्ग की उपाधियाँ (यहूदी- संबंधित) थीं, लेकिन उनमें पुरोहिती या जादूगरी-स्केपुलीमेंसी के तत्व नहीं थे। उनमें केवल व्यापारी पहलू ही बरकरार था, जो धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा था और अपनी जटिल प्रणाली को तोड़ने की शक्ति के कारण अक्सर तिरस्कार का पात्र होता था। इसी प्रकार, यह नाम टीव्स को कुलीन व्यापारी- पुजारियों के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करने में मदद करता था, जिससे गठबंधन को मजबूत करने में सहायता मिलती थी। हालाँकि, वैश्विक 'टीव-यहूदी' कुलीन वर्ग की उपाधि के साथ उनका बाहरी संबंध कमजोर रहा होगा, क्योंकि दक्षिणी मध्य साइबेरिया में प्रोटो-टोचेरियन से कुलीन वर्ग का प्रवाह स्टाओंग की तटीय भौगोलिक स्थिति (समुद्री यात्रा करने वाले यहूदी जो स्टाओंग क्षेत्रों में आते थे) की तुलना में बहुत कम था, जिसने बाहरी प्रभाव के लिए अधिक अवसर प्रदान किए।

टीव आबादी का पैतृक सभ्यतागत संबंध

प्राचीन मैदानी हिमालय मुख्य रूप से मु वंश से प्राप्त ऑस्ट्रोनेशियन और क्रा-दाई तत्वों से प्रभावित थे, जिन्होंने आंशिक रूप से इनके विकास में योगदान दिया। बाद में ये येनिसेयन और इंडो-यूरोपीय साका-टोचेरियन प्रभावों से मिश्रित हो गए।

पारस्परिक मुखिया के नेतृत्व वाली आबादी में प्रमुख भाषा
टीव्स जनजाति की शक्ति का आधार लोएस पठार था, जो गोबी रेगिस्तान के दक्षिण-पूर्व में स्थित है और इसमें पीली नदी के सी-आकार के अधिकांश क्षेत्र शामिल हैं, जिसमें ऑर्डोस लूप नदी के मार्ग के सुदूर उत्तर में स्थित है। उनकी भाषा प्राचीन मैदानी हिमालयी मूल की थी, जो निम्नलिखित से प्रभावित थी:
• अफनासीवन प्रोटो सहित पड़ोसी इंडो-यूरोपीय भाषाएँ-
टोचरियन और एंड्रोनोवो प्रोटो-साका
• मध्य साइबेरियाई येनिसेयन भाषाएँ
• मैदानी हिमालय के युवा प्रभाव, जो इसके माध्यम से लाए गए हैं
पीली नदी बेसिन के मध्य भाग पर युवा मैदानी हिमालयी पर्वतमाला का कब्जा विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

12. ताव द इल्यूमिनस ऑफ अलनल / एलेरेस ड्यूक किंगडम (311–279 ईसा पूर्व) *11 वीं शताब्दी ईसा पूर्व - 222 ईसा पूर्व की जागीर का नाम 'अलरेंस' हो सकता है, जो अफनासीवो संस्कृति (अरसेही) से विरासत में मिला एक वर्ग-उपाधि का नाम हो सकता है; या सिंटाश्ता, एंड्रोनोवो और स्रुबनाया संस्कृति से विरासत में मिला हो सकता है, जिनसे पूर्वी इंडो-ईरानी समूह, शक (आर्य-) का उदय हुआ। बाद के एलन (एलन, 'आर्यन' का एक रूप है), या युवा मैदानी हिमालयी भाषा में लिप्यंतरित होने पर 'अलेरक रेरान', जो 'अलरेंस' जागीर की स्थापना के लगभग 1100 वर्ष बाद उभरे (जो पूर्वी इंडो-ईरानी समूह से भी संबंधित थे), ने अपनी वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के लिए इसी मूल नाम को विरासत में लिया।

एलनल/एलेरेस क्षेत्र की जनसांख्यिकीय संबद्धता: जोमोन-ऐन्यूरिक, येनिसेशियन और एंड्रोनोवो प्रोटो-साका प्रभावों का एक संलयन
मध्य साइबेरियाई येनिसेयन, पूर्वी साइबेरियाई तुंगुसिक और एंड्रोनोवो प्रोटो-साका क्षेत्र के दक्षिण-पूर्वी छोर के रूप में, अलनल/एलेरेस उन तीन पश्चिमी क्षेत्रों (कोरियाई प्रायद्वीप और दक्षिणी मंचूरिया के पश्चिम में) में से एक था, जिन पर जोमोन-ऐनुरिक का नियंत्रण था।
अलनल/एलेरेस की मूल वर्ग-उपाधि प्रणाली/सामाजिक दृष्टिकोण मुख्य रूप से मु वंश से विरासत में मिले जोमोन-ऐनुरिक लोगों पर आधारित था, जिसमें जोमोन-ऐनुरिक और येनिसेयन समूह निम्न से मध्यम वर्ग के अभिजात वर्ग का निर्माण करते थे। एंड्रोनोवो प्रोटो-साका, अफनासीवन प्रोटो-टोचारियन के एक अल्पसंख्यक समूह के साथ, या तो सत्ता संरचना में सर्वोच्च पदों पर आसीन थे या जागीर पर भारी सांस्कृतिक और प्रणालीगत प्रभाव रखते थे। आम आबादी मुख्य रूप से जोमोन-ऐनुरिक और मैदानी हिमालयी निवासियों से बनी थी, जो टीव संघ के प्रभाव में विस्तारित हुई थी - जो स्वयं येनिसेयन, एंड्रोनोवो प्रोटो-साका और प्राचीन मैदानी हिमालयी लोगों का मिश्रण थे। क्रा-दाई-होंग-मिएन पुनर्जागरण स्टाओंग युग के दौरान उनके पूर्व गठबंधन के कारण, क्रा-दाई से एक द्वितीयक जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक घटक आ सकता था। टीव परिसंघ के अंतर्गत अलनल/एलेरेस भूमि में प्रवास करने वाले युवा मैदानी हिमालयी निवासी आबादी की सबसे नवीनतम परत का निर्माण करेंगे, जिन्हें संभवतः उपर्युक्त, स्थानीय रूप से प्रभावशाली अलनल/एलेरेस सांस्कृतिक और

जनसांख्यिकीय संरचना में स्वयं को आत्मसात करना पड़ा होगा ताकि उन्हें वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के भीतर एक बाहरी जाति के रूप में अलग-थलग न किया जाए।
खंडित टीव परिसंघ के ड्यूक राजा ताव ऑफ अलनल/एलेरेस के शासनकाल में जनसंख्या के बीच प्रयुक्त प्रमुख भाषा
प्रमुख भाषा संभवतः एक क्रियोल भाषा थी, जो इंडो-यूरोपीय और मध्य साइबेरियाई येनिसेई भाषा से काफी प्रभावित जोमोन भाषा पर आधारित थी। हाल की भाषाई परतों में निम्नलिखित शामिल हैं:
• टीव परिसंघ की आधिकारिक भाषा, यंगर प्लेन हिमालयी भाषा है। इंडो-यूरोपीय और येनिसेई भाषाओं के प्रभाव वाली यह भाषा, टेउ जनजाति के उन रिश्तेदारों द्वारा अलनल/अलेरेस क्षेत्र में लाई गई थी, जिन्हें टेउ जनजाति की केंद्रीय, परिसंघ जैसी सरकार के तहत शासन करने की जागीर दी गई थी।
कीड्स नामक राजधानी वाला अलनल/एलेरेस क्षेत्र भौगोलिक रूप से पीले सागर की खाड़ी के उत्तरी भाग के तटीय क्षेत्रों के आसपास केंद्रित था, जो दक्षिणी मंचूरिया तक फैला हुआ था। यह खाड़ी के पार कोरियाई प्रायद्वीप के उत्तरी सिरे और बैक्डू-डेगन पर्वत श्रृंखलाओं के ठीक सामने स्थित था। जोमोन लोग और उनकी भाषा संभवतः मध्य साइबेरियाई येनिसेयन और ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी-द्रविड़ प्रकारों के विलय से उत्पन्न हुए, जिसमें मध्य साइबेरियाई येनिसेयन का आनुवंशिक प्रभाव कहीं अधिक प्रबल था। इसी प्रकार, ऑस्ट्रोनेशियन समूहों का भी संभवतः इसी प्रकार का विलय हुआ होगा, हालांकि उनमें ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी-द्रविड़ आनुवंशिक मिश्रण थोड़ा अधिक प्रबल था। जोमोन के आनुवंशिक संबंधी, ऐनुरिक समूह के मामले में, उनकी गोरी त्वचा की विशेषता उनके येनिसेयन-ना-डेने मूल से एक वैकल्पिक उत्परिवर्तन हो सकती है, जो लगभग 18,000 वर्ष पूर्व अफोंटोवा गोरा में इंडो-यूरोपियनों में हुए उत्परिवर्तन के समान है, जो मध्य साइबेरिया में येनिसेयन-ना-डेने से अलग हुए थे। इस परिवर्तन के कारण वे सांवली त्वचा वाले 'वैकल्पिक यूरोपीय' से गोरी त्वचा वाले 'वैकल्पिक यूरोपीय' में परिवर्तित हो गए, जिनकी यूरोपीय लोगों की तुलना में भिन्न आनुवंशिक संरचना के परिणामस्वरूप उनकी शारीरिक बनावट अपेक्षाकृत समान थी।

विस्मृति में प्रवासन और सभ्यतागत पहचान

13. ज़ेन के उत्पत्ति राज्य का शाही शासक, ज़ेन लेइरलवोएराओंग (221 – 210 ईसा पूर्व)

जनसांख्यिकीय संबद्धता: टीव संघ के उत्तराधिकारी के रूप में ज़ाईन जागीर से साम्राज्य बने ज़ाईन की सांस्कृतिक विविधता मिश्रित थी, जिसमें मध्य साइबेरियाई येनिसेयन, इंडो-यूरोपीय एंड्रोनोवो-प्रोटो-साका/अफनासीवन-प्रोटो-टोचेरियन और कुमारी कंडम से विरासत में मिली युवा मैदानी हिमालयी संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। हालांकि, मु से विरासत में मिले क्रा-दाई ऑस्ट्रोनेशियन तत्व एक उप-परत के रूप में उपेक्षित रहे, क्योंकि उनके पूर्वजों द्वारा विरासत में मिली और पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही पुरानी मैदानी हिमालयी (गेरोंगाओंगल द्येव/यांगशाओ संस्कृति) और लाओंगताल (लियांगझू संस्कृति) की विशेषताएं उनमें समाहित थीं। ज़ाईन की सांस्कृतिक संरचना में एक और ऑस्ट्रोनेशियन योगदान डोक बेसिन (ऊपरी यांग्त्ज़ी नदी जो हिमालयी भो पठार के पूर्वी किनारे से लगती है) के विलय के बाद प्राप्त हुआ। यह क्षेत्र दक्षिणपूर्वी हिमालय से आदिम-ऑस्ट्रोनेशियन प्रवास के दो प्रमुख मार्गों में से एक था। वे अर्ध-

ऑस्ट्रोनेशियन समूह जो पुराने मैदानी हिमालयी (गेरोंगाओंगल डायव / यांगशाओ संस्कृति) नेतृत्व में विलय नहीं हुए थे, उस समय तक डोक बेसिन में ही रहे थे।

खंडित टीव संघ के ड्यूक राजा ज़ाईन के शासनकाल में जनसंख्या के बीच बोली जाने वाली प्रमुख भाषा
टीव्स के उत्तराधिकारी के रूप में, जिनकी शक्ति का आधार लोएस पठार से उत्पन्न हुआ था (जो गोबी रेगिस्तान के ठीक दक्षिण-पूर्व में स्थित है और पीली नदी के सी-आकार के अधिकांश क्षेत्रों को ओवरलैप करता है, जिसमें ऑर्डोस लूप नदी के प्रक्षेप पथ के सुदूर उत्तर में स्थित है), ज़ाईन जागीर में प्रमुख भाषा एक क्रियोल थी।
सबसे नवीनतम भाषाई परत आधिकारिक युवा मैदानी हिमालयी भाषा थी, जिसमें पुरानी मैदानी हिमालयी भाषा के उपस्तर शामिल थे, जो निम्नलिखित से प्रभावित थी:
• इंडो-यूरोपीय अफ़ानासिवन प्रोटो-टोचरियन
• इंडो-यूरोपीय एंड्रोनोवो प्रोटो-साका
मध्य साइबेरियाई येनिसेई भाषाएँ: इंडो-यूरोपीय और येनिसेई समूहों के साथ निरंतर अंतःक्रियाओं के माध्यम से आगे भाषाई विकास हुआ। इसके अतिरिक्त, ऊपरी यांग्त्ज़ी नदी बेसिन के बेसिन क्षेत्र का बाद में आत्मसात होना, जहाँ पैरा-ऑस्ट्रोनेशियन उपस्थिति थी, ने यंगर प्लेन हिमालयी भाषा के ज़ाईन रूप की सबसे नवीनतम परतों में योगदान दिया।
सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

सूर्य देवता ब्रू ओंग्राये का जन्म और विरासत

वसंत ऋतु के ऋषि शासक, सूर्य देवता ब्रू ओंग्राये का एक वैकल्पिक नाम है। उनके निवास स्थान के पास ही न्कुआव्हेरा सोंगा नामक एक द्वीप था, जिसे सर्व-फूलों से भरा द्वीप भी कहा जाता था। एक दिन, ब्रू ओंग्राये की माता उस द्वीप पर घूमने गईं, जहाँ एक इंद्रधनुष ने उन्हें घेर लिया और कुछ देर तक मंडराता रहा, फिर गायब हो गया। इस घटना के कुछ ही समय बाद, वह गर्भवती हो गईं और उनके बारह बच्चे हुए।

कई वर्षों बाद, उन्होंने ब्रू ओंग्राये को जन्म दिया। ब्रू ओंग्राये का वर्णन एक लंबी खोपड़ी, बड़ी-बड़ी आँखों, कछुए जैसे दाँतों और अजगर जैसे होंठों वाले व्यक्ति के रूप में किया गया था। उनकी भौहों से मूंछों जैसे मुलायम सफेद बाल उगते थे और उनकी दाढ़ी ज़मीन तक पहुँचती थी। ऐसा कहा जाता था कि बृहस्पति ग्रह को एक पूर्ण चक्र पूरा करने में बारह वर्ष लगते हैं, और ब्रू ओंग्राये की माता का गर्भकाल इस खगोलीय चक्र के साथ पूरी तरह मेल खाता था। इसके अलावा, यह भी माना जाता था कि जब भी कोई ऋषि भौतिक संसार में जन्म लेने वाला होता है, तो शुभ संकेत अवश्य दिखाई देते हैं।

टिप्पणी
ब्रू ओंग्राये की सरीसृप जैसी शारीरिक विशेषताओं के वर्णन से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी माता ने कम से कम अर्ध-उन्नत अवस्था प्राप्त कर ली होगी, जिससे वे 7 वें आयाम में स्थित अपने चेतना के मूल से जुड़ सकीं। संभवतः इसी जुड़ाव के कारण वे इन लोकों से ऊर्जा प्राप्त कर सकीं, जिससे उनका निष्कलंक गर्भाधान संभव हुआ। संभवतः हिमालय से भी उनके सभ्यतागत

संबंध मजबूत रहे होंगे, जहाँ कुमारी कंडम की विरासत - महाप्रलय से पहले की तीन उन्नत सभ्यताओं (मू, कुमारी कंडम और अटलांटिस) में से एक - अच्छी तरह संरक्षित थी।

मानव ऋषि शासक और विश्व का रूपांतरण
अतीत में, मूल मानव ऋषि शासक को नौ सिर और सर्प के शरीर वाला बताया गया था।

ऐसा माना जाता था कि उन्हीं से ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई। उनके युग में सूर्य और चंद्रमा के चारों ओर प्रभामंडल जैसी खगोलीय घटनाएं आम थीं। पहाड़ और समुद्र शांत थे, और दुनिया में शांति का माहौल था। हालांकि, उनके बाद, भूगर्भीय बदलावों ने पहाड़ियों और घाटियों को बदल दिया, समाज विस्थापित हो गए, और समय आगे बढ़ता गया, जिससे पुरानी दुनिया दूर होती चली गई। तब से अब तक कितना समय बीत चुका है, इसका सटीक अनुमान लगाना असंभव है। भले ही अतीत के ऋषि शासक को एक रहस्यमय दर्जा प्राप्त था, लेकिन कहा जाता है कि ब्रू ओंग्राये ज्ञान और प्रबुद्धता में उनसे कहीं आगे थे। ब्रू ओंग्राये के समय में ही शिष्टाचार, कानून, सद्गुण और न्याय के नियम पहली बार स्थापित हुए। गुफाओं में रहने की प्रथा को त्याग दिया गया, कच्चे भोजन का प्रचलन बढ़ा और संस्कृति, शिक्षा, रीति-रिवाजों और संगीत के माध्यम से शासन को बढ़ावा देने के लिए नैतिक प्रणालियाँ विकसित की गईं। युद्ध में ढाल, भाले और कुल्हाड़ी जैसे हथियारों का प्रचलन हुआ, जिससे सैन्य रणनीति और युद्ध में क्रांतिकारी परिवर्तन आए।

शहतूत की लकड़ी को रेशम के धागों से बांधकर ब्रिज सिथर बनाए जाते थे, जबकि बारीक पिसी हुई मिट्टी से अंडे के आकार की बांसुरी बनाई जाती थी। इन विकासों से अनुष्ठान और संगीत की एक परिष्कृत प्रणाली का उदय हुआ। आठ दिशाओं से विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों की कंपन आवृत्तियों को सामंजस्यित किया गया, जिससे आठ भविष्यसूचक त्रिकोण और छह षट्कोण (परिवर्तन की पुस्तक का प्रोटोटाइप) का निर्माण हुआ, जिनका उपयोग किया जाता था।

पूर्व के नीले ड्रैगन, दक्षिण के लाल पक्षी, पश्चिम के सफेद बाघ, उड़ता हुआ सर्प, उर्स माइनर से सेफियस तक फैले छह तारों का घुमावदार समूह (केरोलरीन सिक्स स्टार्स) और उत्तर के काले कछुए की सापेक्ष स्थिति का पता लगाने के लिए यह अध्ययन किया गया। चूंकि उस समय शिलालेखों के लिए लेखन प्रणाली मौजूद नहीं थी, इसलिए आकाशीय गतियों और प्राकृतिक जगत के पैटर्न शिष्टाचार, कानूनों, नैतिकता और मानवतावादी सिद्धांतों के निर्माण में आवश्यक हो गए। ये कानून ब्रह्मांडीय विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों और ग्रहों के घूर्णन पथों के अनुरूप थे, जिससे यह सुनिश्चित होता था कि वास्तविकता प्राकृतिक ब्रह्मांडीय लय के अनुसार सकारात्मक रूप से प्रकट हो।
प्रकृति में ब्रू ओंग्राये की भूमिका वसंत ऋतु में उभरने वाले जीवन के सभी रूपों को समाहित और पोषित करना था। उनका सार पंच प्राणिक सारों/कारकों में से लकड़ी के प्राणिक सार (या लकड़ी के कारक) से जुड़ा था। संगीतशास्त्र

में, वे पंचस्वरूप पैमाने (सी, डी, ई, जी, ए) के तीसरे स्वर, ई, के अनुरूप थे।
इसी कारण उन्हें लकड़ी के ऋषि शासक के रूप में जाना जाता था।

टिप्पणी
• आठ भविष्यसूचक त्रिकोण और षट्भुज की उत्पत्ति पुस्तक से हुई है।
'ऑफ चेंजेस' नामक एक ज्योतिषीय पुस्तिका, जो स्वयं पूर्व के वैकल्पिक विज्ञान-आधारित स्कैपुलीमैंसी और प्लास्ट्रोमैंसी तकनीकों पर आधारित थी। समय के साथ, इन ज्योतिषीय पद्धतियों का गूढ़ ब्रह्मांड विज्ञान और दार्शनिक ग्रंथों के साथ विलय हो गया, जिनमें से कई की जड़ें कहीं अधिक प्राचीन काल में थीं।

• ये विरासतें संकेत देती हैं कि सौर देवता ब्रू ओंग्रे एक थे
एक प्रबुद्ध प्राणी जिसने 7D क्षेत्र में अपनी चेतना के मूल से पुनः संबंध स्थापित कर लिया था, और विज्ञान के एक वैकल्पिक दृष्टिकोण (आज के परिप्रेक्ष्य से) पर आधारित उच्च-तकनीकी ज्ञान का प्रसार किया। संभवतः उन्होंने इस ज्ञान को हिमालयी क्षेत्र में भी प्रसारित किया (उनके विवरण के लिए कार्ड I-1 देखें)।
यंगर ड्रायस काल (12,900 - 11,700 वर्ष पूर्व) के दौरान सभ्यतागत संबद्धता (जब वैश्विक महाबाढ़ ने ग्रह को तबाह कर दिया था)।
• पांच महत्वपूर्ण तत्व/कारक तथा प्राचीन संगीतशास्त्र

संगीतशास्त्र वैकल्पिक विज्ञान-आधारित तकनीक थी, जिसमें अंतर-आयामी अंकों या उच्च-आयामी कंपन आवृत्तियों से बंधी ऊर्जाओं का पता लगाना, उन्हें एक जगह केंद्रित करना और पकड़ना शामिल था, ताकि 3D, भौतिक अर्थों में वास्तविकता के प्रकटीकरण को समझने में सहायता मिल सके। इस संदर्भ में, संगीतशास्त्र को ऐसी तकनीक का सबसे सरल अनुप्रयोग और रूप माना जा सकता है, क्योंकि कंपन आवृत्ति-आधारित ऊर्जाओं को ध्वनियों के रूप में मूर्त रूप दिया जाता था जो मानव शारीरिक संवेदी तंत्र, अर्थात् श्रवण इंद्रिय द्वारा बोधगम्य होती थीं।
सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

गीरलीन नेरूंग - देवता समान कृषि विशेषज्ञ

तेजस्वी ऋषि शासक, गीरलीन नेरूंग, पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हल का उपयोग करके कृषि की शिक्षा आम लोगों को दी। वे स्वयं खेतों में परिश्रम करते थे, और उनके कबीले में भरपूर अनाज की फसल होती थी। उनकी बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर, सभी जीव स्वाभाविक रूप से उनकी ओर आकर्षित होते थे।

उनकी जनजातीय बस्तियों में, रीशी ब्रैकेट कवक प्रतिदीप्ति से जगमगा रहे थे, और जादुई घासों के कोमल अंकुर मौजूदा वनस्पतियों के बीच से अनायास ही

उगते प्रतीत हो रहे थे। लाल कमल के फूल जमीन से उग रहे थे, जिनमें दो-दो फूल एक ही डंठल पर खिले थे, जिनका आकार छतरियों के समान था। कमल के पत्तों से टपकती ओस उन तालाबों में गिर रही थी जो ड्रैगन के लिए भोजन के स्रोत के रूप में काम करते थे। सड़कों के किनारे शुभ लाल घासें फल-फूल रही थीं, जबकि शुभ बादल और पर्वतीय धुंध पूरे परिदृश्य में व्याप्त थे। सूर्य की पूजा के लिए गोलाकार टीले बनाए गए थे, और चंद्रमा के सम्मान में जेड की सीढ़ियाँ निर्मित की गई थीं।
स्वर्ग के नौवें उच्चतम स्तर तक गूंजने वाली सुरीली धुनें बजाई गईं, जिससे एक दिव्य संगीत का निर्माण हुआ, जिसमें सभी जानवर संगीत की धुन पर एक साथ नृत्य करने लगे।
सभी आठ वाद्य यंत्र पूर्ण सामंजस्य में बज रहे थे, जिनमें शामिल थे: घंटी, पत्थर की घंटियाँ, अर्ध-नलिका वाला सात तारों वाला सितार, धनुष से बजाए जाने वाले वाद्य यंत्र, बांसुरी, वोआरल (एक मुक्त रीड वाला मुख-फूंका जाने वाला वाद्य यंत्र), चीनी मिट्टी की अंडाकार बांसुरी और लकड़ी का मछली के आकार का मंदिर ब्लॉक। जैसे ही संगीत की गूंज पूरे लोक में फैली, सभी पेड़- पौधे, जेड पत्थर और खनिज पदार्थ चिकने और चमकदार हो गए, मानो उनमें दिव्य सामंजस्य और दिव्य प्रतिध्वनि का सार समाहित हो गया हो।

टिप्पणी
• ड्रैगन को खिलाने वाले फार्म संभवतः विशाल संरचनाएं थीं जिन्हें इस प्रकार डिजाइन किया गया था
ऊर्ध्वाधर खेती और तथाकथित ड्रैगन संभवतः उन्नत सरीसृप या डायनासोर जैसी संस्थाओं की अभिव्यक्ति रहे होंगे। ये प्राणी, जिनका मूल क्षेत्र 7 वें आयाम से परे था, निचले आयामों में सीमित भौतिक उपस्थिति बनाए रखते थे ताकि परस्पर क्रिया में आसानी हो, संभवतः पहले 7 वें आयाम के पक्षी-सिर वाले मानवाकार क्षेत्र में उपस्थिति के माध्यम से, जो आगे चलकर निचले आयामों में प्रकट होने का आधार बना।
• संगीत के प्रति उच्च श्रद्धा कंपन आवृत्ति का संकेत देती है।
यह तकनीक अभी भी गीरलीन नीरूंग जैसे प्रबुद्ध प्राणियों के बीच ज्ञात थी, जो एक दैवीय कृषक थे। ये आवृत्तियाँ मानव डीएनए अनुक्रमण/एन्क्रिप्शन और सातवें आयाम में चेतना के मूल से गहराई से जुड़ी हुई थीं।

बादल द्रव और ज्ञानोदय का मार्ग
कभी-कभी, आकाश में बहते बादलों से पानी की बूँदें गिरती थीं, जिससे एक ऐसी चीज़ बनती थी जिसे बादल द्रव के नाम से जाना जाता था। ऐसा माना जाता था कि ज्ञान प्राप्त करने के बाद व्यक्ति आकाश से भी अधिक समय तक जीवित रह सकता है - यह ज्ञान भौतिक जगत की कंपन आवृत्ति और उसके स्वरूप को निर्धारित करने वाले तंत्रों के साथ समकालिकता की अवस्था है।

तीन आयामी भौतिक वास्तविकता सहित, विभिन्न आयामों में, व्यक्ति मस्तिष्क नामक संवेदी तंत्र के माध्यम से ज्ञान का अनुभव करता है, जो बदले में चेतना के मूल का एक एंटीना जैसी शाखा है और सातवें आयामी क्षेत्र में स्थित है। यह ज्ञान क्लाउड फ्लूइड के सेवन से प्राप्त हुआ।

टिप्पणी
बादल का द्रव निम्न में से कोई भी हो सकता था:
• एक अंतर-आयामी पदार्थ जो उच्च आयामों से जुड़ा हो, या
• त्रि-आयामी इकाई के भीतर एक उच्च-आयामी इकाई की अभिव्यक्ति वास्तविकता, जिसमें त्रिविमीय से परे के गुण भी समाहित हैं।

रात्रि की चमक: दीप्तिमान रत्न
नाइट ब्रिलियंस नामक एक चमकदार रत्न हुआ करता था, जो अपनी निरंतर चमक और परावर्तन के कारण हमेशा दिखाई देता था। यदि इसे रात के अंधेरे में पानी में फेंक दिया जाता, तो यह तैरता रहता और चमकता रहता, जिससे यह हर समय दृश्यमान बना रहता था।

टिप्पणी
नाइट ब्रिलियंस रत्न संभवतः निम्नलिखित थे:

• आकार बदलने वाली, गेंद के आकार की इकाइयाँ जिनमें एक रूप से दूसरे रूप में बदलने की क्षमता होती है
आयाम।
• आयामों के बीच क्षणिक क्षेत्र से उत्पन्न, जहाँ तनाव
और सृजनात्मक शक्तियों के अभिसरण से ऐसी रहस्यमय वस्तुओं का निर्माण हुआ। इन रत्नों में आयामी संक्रमणों का सार समाहित हो सकता है, जिसने उन पर अपने गुण अंकित कर दिए, जिससे वे पारंपरिक 3-आयामी भौतिक सीमाओं से परे अस्तित्व में रह सके।

लाल गौरैया और अमरता के बीज
एक बार एक लाल गौरैया अपनी चोंच में पके हुए अनाज और चावल के बीज लेकर आई। उड़ते समय कुछ बीज ज़मीन पर गिर गए। तेजस्वी ऋषि शासक गीरलीन नेरूंग ने इन गिरे हुए बीजों को इकट्ठा किया और अपने खेतों में बो दिया। ऐसा कहा जाता था कि जो कोई भी इन पवित्र अनाजों से उगने वाले फलों का सेवन करेगा, वह कभी बूढ़ा नहीं होगा और न ही उसकी मृत्यु होगी।

स्लूनस्वोरान पर्वत, जिसका अर्थ है "ऊर्ध्वाधर धातुओं का पर्वत", पर तांबे के विशाल भंडार का खनन करके विभिन्न प्रकार के औजार बनाए जाते थे। पर्वत के नीचे एक सुनहरा कुआँ था, जो सदा सफेद धुएँ से घिरा रहता था। यदि कोई कुएँ की चोटी पर चढ़ता, तो उसे उसकी भूमिगत गहराई से गड़गड़ाहट की आवाज़ें सुनाई देतीं। इस कुएँ से निकाली गई धातुएँ नरम थीं और उनका उपयोग वस्त्र बनाने के लिए भी किया जा सकता था।

टिप्पणी
विशेष अनाज निम्नलिखित में से कोई भी हो सकता था:
• एक अंतर-आयामी इकाई, जो उच्च आयामों से जुड़ी हो, या
• त्रिविमीय जगत में प्रकट होने वाली एक उच्च-आयामी अभिव्यक्ति, फिर भी 3 डी से परे गुणों को बरकरार रखते हुए।
इन अनाजों के वृद्धावस्था-रोधी प्रभाव से यह संकेत मिलता है कि इन्होंने व्यक्तियों को समय के चार-आयामी दायरे से परे जाने की क्षमता प्रदान की होगी। समय की रैखिक प्रक्रिया से मुक्ति ने वृद्धावस्था को अप्रभावी बना दिया होगा, जो पाँच-आयामी अस्तित्व की प्रकृति के अनुरूप है।
सुनहरे कुएं की गहराई से निकलती गड़गड़ाहट और सफेद धुआं संभवतः किरेरूल सुरंगों, या तंत्र से परे सुरंगों के निर्माण के संकेत थे - ये ऐसी अंतर-आयामी सुरंगें थीं जो उन्नत अंतर-आयामी प्रशिक्षण प्राप्त लोगों को त्रि- आयामी और उच्च आयामों के बीच सीमित पहुंच प्रदान करने में सक्षम थीं। इन किरेरूल सुरंगों का निर्माण कंपन तकनीक का उपयोग करके किया गया था, जो

□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□,

□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□□ □□□□ '□□□□□□' □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□-□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□-□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□

□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

कुहार वोआन, रथ का डंडा: पीली गर्जना जनजाति का ऋषि शासक

येलो थंडर जनजाति के ऋषि शासक, कुहार वोआन (रथ शाफ्ट), वोआरिल गेरवोआरिम कबीले से थे, जो येलो थंडर जनजातीय संघ का नेतृत्व करता था। उनकी माता, गेहूल कुआहेरो (विशाल जीवन शक्ति) ने उन्हें दस दिवसीय कैलेंडर के तीसरे चक्र में जन्म दिया, जिससे उन्हें पृथ्वी के जीवन तत्व के ऋषि शासक के रूप में नामित किया गया, जो पांच जीवन तत्वों में से एक है। उनके जन्म के समय आकाश में एक महत्वपूर्ण खगोलीय घटना - एक पीला तारा - दिखाई दिया, जो उनके शुभ आगमन का संकेत था। येलो थंडर जनजाति के ऋषि शासक ने खगोलीय चक्रों और कैलेंडर के अभिलेखन में क्रांति ला दी, और पहली बार शिलालेखों के लिए लेखन

प्रणाली स्थापित की। वे सिर पर पहनने वाले वस्त्रों को प्रस्तुत करने वाले पहले व्यक्ति भी थे, संभवतः उस प्रकार का सिर का वस्त्र जिसका ऊपरी भाग क्षैतिज रूप से फैला हुआ, तख्ते जैसा सपाट होता था और रत्नों की लड़ियों से सजा होता था जो चेहरे को ढक लेता था। इस हेडवियर को दरबारी पोशाक - एक-पीस चोगा पोशाक के साथ पहना जाता था, जिससे उन्हें 'एक-पीस चोगा पहने ड्रैगन शासक' की मानद उपाधि प्राप्त हुई।

टिप्पणी
• ड्रैगन का प्रतीक ऋषि शासक के आरोहण या
अर्ध-उन्नत अवस्था, जो उच्च आयामों से जुड़ने की उनकी क्षमता को दर्शाती है। ऐसा माना जाता है कि ड्रैगन सरीसृप या डायनासोर-मानव जैसे प्राणियों के आंशिक प्रकटीकरण हैं जो 7D क्षेत्र से परे उत्पन्न होते हैं। एक 3D व्यक्ति चेतना के मूल से पुनः जुड़ने के बाद ही ऐसी आयामी ऊर्जा को ग्रहण और अवशोषित कर सकता है।
जो कि 7 वें आयाम वाले क्षेत्र में स्थित है।
• एक-पीस गाउन एक सूक्ष्म प्रतीक है, जो अभिजात वर्ग के आगमनकर्ताओं को दर्शाता है।
प्रबोधन।

तकनीकी प्रगति और प्रतीकवाद

उन्होंने बेड़ों को संशोधित करके सवार करने योग्य जहाजों का रूप दिया, और इसके फलस्वरूप जल में मछलियाँ आनंदपूर्वक तैरने लगीं, जबकि महासागरों की लहरें शांत हो गईं। पीली नदी के तल पर डूबते हुए जेड पत्थर की तरह दिखने वाले नाव के प्रतिबिंबों का उपयोग करते हुए, उन्होंने नदियों और झीलों की उपस्थिति का स्मरण कराया। इसके परिणामस्वरूप, अश्व देवता समूहों में झीलों से प्रकट हुए, और छतरियों वाले शुभ रथ विशाल वन्य क्षेत्र में विचरण करते दिखाई दिए। उन्होंने संगीत वाद्ययंत्रों के मानकीकरण को बढ़ावा दिया, साथ ही पृथ्वी के अग्रगमन और खगोलीय पिंडों के साथ इसके घूर्णीय संबंधों का आर्मिलरी स्फीयर के माध्यम से पुनर्मूल्यांकन किया, और प्रतीकात्मक रूप से कुहार वोआन की चेतना के माध्यम से इन ब्रह्मांडीय गतियों के गहन ज्ञान को उजागर किया। उन्होंने इतिहास विभाग की स्थापना की, जिसे चार शाखाओं में विभाजित किया गया, जो विशेष रूप से पुस्तकों और चित्रों के संग्रह और प्रबंधन के लिए समर्पित थीं। साथ ही, उन्होंने लाखों जनजातियों पर नेतृत्व को सुदृढ़ करने के लिए नौ सद्गुणों के अधिकारियों को नियुक्त किया। नौ सद्गुणों में शामिल थे: माता-पिता के प्रति श्रद्धा, परोपकार, सौम्यता, साहित्यिक निपुणता, विश्वसनीयता, वाक्पटुता, वफादारी, आदर, वीरता और धर्मपरायणता। ये सद्गुण मानव जगत में सामूहिक रूप से प्रदर्शित होते थे और देवताओं की पूजा में भी इनका उपयोग किया जाता था। इन सिद्धांतों को बनाए रखने का दायित्व सौंपे गए लोगों को नौ सद्गुणों के सेवक के रूप में जाना जाता था।

कून का चबूतरा और आयामी ऊर्जाएँ
ज्ञानी और उन्नत आत्माओं के एकत्रित होने पर सद्भाव की हवाएँ पूरे देश में फैल गईं। प्रस्थान करने से पहले, वे अपने सिर के आभूषण, तलवारें, जेड के लटकन और जूते कून की सीढ़ी पर छोड़ गए, जिसका अर्थ है वंशजों की सीढ़ी। कून की सीढ़ी तेरोंगल झील के सबसे ऊंचे और खतरनाक हिस्से में स्थित थी, जिसका अर्थ है कड़ाही झील, जो स्वयं माउंट कूनरोन (संभवतः अल्टीन-ताघ पहाड़ों में स्थित अक्किककोल झील, 4,250 मीटर की ऊंचाई पर) के शिखर पर स्थित थी।

टिप्पणी
• शासन और मूल्यों में नौ संख्या का समावेश किया गया था।
इसका उद्देश्य वास्तविकता के ताने-बाने (मानव मस्तिष्क द्वारा अनुभव की गई और प्रक्षेपित वास्तविकता के विपरीत) को ब्रह्मांड की कंपन संरचना के साथ सामंजस्य स्थापित करना था। दूसरे शब्दों में, इसे मानव निर्मित संरचनाओं - मानसिक और भौतिक दोनों - को ब्रह्मांड की कंपन संरचना के साथ संरेखित करने के लिए बनाया गया था।
वास्तविकता की मूलभूत कंपन और विद्युत चुम्बकीय आवृत्तियाँ। इसने सुनिश्चित किया कि वास्तविकता सकारात्मक दिशा में विकसित हो (और ऐसा ही अनुभव किया जाए), सद्गुणों को लंबे समय तक संरक्षित रखे और उन्हें पतन के प्रति अधिक प्रतिरोधी बनाए।

• नौ को अक्सर सृजन का अंक माना जाता है क्योंकि इसकी

प्रभाव वास्तविकता को प्रजनन और सकारात्मक पीढ़ी की ओर निर्देशित करता है, एक अवधारणा जिसकी खोज अंकशास्त्र में की गई है।
• खतरनाक पर्वत शिखर पर सीढ़ीनुमा संरचना बनाने का निर्णय संभवतः
इन स्थानों पर विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा की अत्यधिक सांद्रता के कारण, इन विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों में त्रि-आयामी वास्तविकता की कंपन संरचना को बदलने और आयामी बदलाव उत्पन्न करने की क्षमता होती है।

ऋषि शासक की दिव्य विरासत
पीले वज्र के ऋषि शासक ने अपनी यात्राओं को सुगम बनाने के लिए कून की छत के नीचे सराय बनवाईं।
वह बादलों और ड्रैगनों पर सवार होकर विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करते हैं। आज भी दूर-दूर से लोग उनकी पूजा करते हैं, दूर से ही उनकी उपस्थिति की एक झलक पाने की लालसा रखते हैं।
पीले वज्र के ऋषि शासक ने दिव्य सोने से जिन औजारों की रचना की थी, उन पर जटिल नक्काशी की गई थी। उनके आकाश में आरोहण के बाद, उनके सेवकों ने ध्यानपूर्वक उन नक्काशी का अध्ययन किया और पाया कि वे प्राचीन ग्रंथ थे— हालाँकि घिसाव के कारण कुछ अंश मिट गए थे। प्रत्येक औजार पर निर्माण का सटीक समय अंकित था, जो उसके निर्माण के युग को दर्शाता था, और शिलालेख सरल भाषा और सुलेख शैली में लिखे गए थे।

टिप्पणी
इन ग्रंथों के अपठनीय भाग संभवतः तीनों उन्नत सभ्यताओं से विरासत में मिली लेखन प्रणालियों से संबंधित रहे होंगे। इस स्थिति में, वे हो सकते थे

कुमारी कांडम पर आधारित ग्रंथ, जिन्हें पीले वज्र के ऋषि शासक ने संभवतः हिमालय में अपने जनजातीय संघ का नेतृत्व करने से पहले पर्वतों के पार सीखा होगा।

सद्गुणों की सभा और पवित्र अनुष्ठान
एक बार पीले वज्र के ऋषि शासक ने एक आदेश जारी कर सद्गुणों से परिपूर्ण अधिकारियों और ड्यूकों को एक भव्य सभा में आमंत्रित किया। वहाँ, मीठे ध्वज और नौका ऑर्किड से बुनी चटाइयों के बीच जेड की गोलियाँ बड़े करीने से रखी गई थीं। पुराने एल्म की लकड़ी से बनी अगरबत्तियाँ जलाई गईं, जिससे पूरा स्थान उस गंभीर अवसर के अनुरूप सुगंध से भर गया।
अन्य सभी बहुमूल्य सामग्रियों को ओखली में मूसल से कूटकर बारीक चूर्ण बना दिया गया, जबकि पुरानी एल्म की लकड़ी से बने गोंद को गाढ़ा करके फर्श पर लगाया गया - यह प्रतीकात्मक रूप से जनजातियों की सुगठित व्यवस्था को दर्शाता था। ये जनजातियाँ, चाहे वे येलो थंडर ट्राइबल यूनियन के ऋषि शासक से संबद्ध हों, या फ्लेमिंग ट्राइबल यूनियन के पूर्व प्रभुत्वशाली ऋषि शासक के आंतरिक अवशेष हों, या दूर देशों के अन्य शासक हों, इस प्रकार सूचीबद्ध की गईं और उनकी पदानुक्रमिक स्थिति की पुष्टि की गई।

टिप्पणी
• इस समय, जनजातियों की पदानुक्रमित गणना अभी भी एक

आरोहण की ओर प्रगति का चिह्नांकन (7D में चेतना के मूल से पुनः संबंध स्थापित करना)। हालाँकि, बाद में यह प्रणाली भ्रष्ट हो गई और कठोर वर्ग-पदनाम प्रणाली-समूहों में परिवर्तित हो गई जिसने सामाजिक गतिशीलता को प्रतिबंधित कर दिया - यहाँ तक कि 3D भौतिक अर्थों में भी, जैसे कि वित्तीय / ऊर्जा दोहन (भोजन, आवास, प्रकाश व्यवस्था), व्यावसायिक।
इससे भी बदतर बात यह है कि इस व्यवस्था को जातीय समूहों को अलग करने के लिए और भी विकृत कर दिया गया, जिससे अलगाव, विभाजन और अंतर-जातीय संघर्ष हुआ, जिसने हिंसा, भय (और इसके सभी आवेगी रूपों) और विभिन्न नस्लों के वस्तुकरण के चक्रों को बढ़ावा दिया।

शानदार प्रवाह के संरक्षक
पीले वज्र के ऋषि शासक ने अपने प्रधान मंत्री, पवन कुल के प्रिरम वोएरोल को पुस्तकें ले जाने का आदेश दिया, जबकि नागरिक मामलों के प्रभारी अधिकारी, दाओंग पेरक को गेहवान नामक एक भव्य नदी की गश्त के लिए तलवार ले जाने का कार्य सौंपा गया। उनकी यात्रा रात के अंधेरे में भी जारी रही और उन्हें गेहवान नदी के दक्षिणी तट तक ले गई। उन्होंने कुल 4,050 किलोमीटर की दूरी तय की, केवल एक बार विश्राम किया। गेहवान नदी की सतह लहरदार रेत के टीलों से मिलती-जुलती थी, जिसकी गहराई का कोई अनुमान नहीं लगा सकता था - उस पर कदम रखने का प्रयास करने पर कोई भी तुरंत डूब जाता था। जब नदी पर आंधी चलती थी, तो वह रेत को घने, कोहरे जैसे धुंध में बदल देती थी। इस मायावी परिदृश्य

में, ड्रैगन, मछली और कोमल खोल वाले कछुए जैसे देवता निवास करते थे, जिनमें से प्रत्येक उड़ने में सक्षम था।
वहाँ, लहराती रेत और लहरों के बीच, एक अनोखी समुद्री शैवाल उगती थी, जिसकी बनावट चट्टान जैसी कठोर थी, फिर भी वह लचीली थी और हवा के साथ खूबसूरती से लहराती थी। उसके नीले-हरे पत्ते लहरों को ढक लेते थे, अशांत धाराओं पर एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला आवरण बनाते थे। एक ही शाखा पर सैकड़ों पत्ते होते थे, फिर भी हर हज़ार साल में केवल एक ही फूल खिलता था। नदी के इस पवित्र भाग को रेत की लहरें कहा जाता था, यह नाम इस बात को दर्शाता था कि रेत कैसे उठती थी, मानो जीवित ज्वार को प्रकट करते हुए लहरें बनाती थी। यहीं पर नेरोंग्स प्रूंग नामक एक ऋषि, जो शांत सीमा के नाम से जाने जाते थे, ने वहाँ रहने वाली मछली का सेवन करने के बाद अपनी जान गंवाई। फिर भी,

एक चमत्कारिक और अकल्पनीय घटना में, उनकी मृत्यु के ठीक दो सौ साल बाद, वे फिर से जीवित हो उठे।

टिप्पणी
उड़ने वाले ड्रैगन, मछलियाँ और कोमल खोल वाले कछुए संभवतः 5D-6D प्राणी थे जो गहरे समुद्र को अपने 3D आवरण के रूप में उपयोग करते थे। इनमें से अधिकांश प्राणी गहरे समुद्र के जीवों के सिर वाले मानवाकार थे। विशेष रूप से ड्रैगन, 7D से परे प्राणियों के प्रकटीकरण थे, जो 3D वास्तविकता में अपनी उपस्थिति को सुगम बनाने के लिए 5D-6D लोकों में रूप धारण करते थे।

सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

स्टूल गेहूल कम चमक और धातु जीवन सार

ऋषि शासक स्टूल गेहूल, जिन्हें अल्प चमक के नाम से भी जाना जाता है, ने धातु जीवन शक्ति के साथ अपने गहन जुड़ाव के माध्यम से ऋषि शासक का दर्जा प्राप्त किया — जिन्हें पंच जीवन शक्तियों के धातु एजेंट के रूप में भी जाना जाता है। पश्चिम से उनके गहरे संबंध के कारण, स्टूल गेहूल को धातु आकाश या धातु गहन भी कहा जाता था, और अनेक वंश उनसे अपनी वंशावली का पता लगाते हैं। उनके पवित्र उद्यान में, पाँच अलग-अलग प्रकार के फीनिक्स एकत्रित होते थे, जिनमें से प्रत्येक एक रंग से सुशोभित होता था जो पंच जीवन शक्तियों में से एक से मेल खाता था।

पांच महत्वपूर्ण तत्व और उनकी संबंधित दिशाएँ।

फीनिक्स पक्षियों के इस दिव्य मिलन ने उनकी विरासत को और भी मजबूत किया, जिसके परिणामस्वरूप उनके वंश से उत्पन्न एक अन्य कबीले के नाम के रूप में 'फीनिक्स' नाम को अपनाया गया।

पवित्र भूदृश्य और रहस्यमय प्राणी
उसके राज्य में, पहाड़ों में सोना गूंजता था, जबकि चांदी भूमिगत झरनों की तरह बहती थी। यह भूमि असाधारण रूप वाले जीवों का घर थी - कछुए और सांप जिनमें मानव जैसी विशेषताएं थीं, जो मानवाकार और आध्यात्मिक प्राणियों से मिलते-जुलते थे।

नदियाँ और झीलें अजगरों और फीनिक्सों के आकार में मुड़ती और घूमती थीं, जबकि पहाड़ कुंडलित होते थे।
वे स्वयं सोते हुए ड्रैगन की तरह प्रतीत होते थे। इन्हीं प्राकृतिक संरचनाओं और उनकी रहस्यमय समानताओं से स्थानों को उनके नाम प्राप्त हुए - ड्रैगन माउंटेन, टोरटोइस माउंटेन, फीनिक्स नदी और फीनिक्स झील।

टिप्पणी
उड़ते हुए ड्रैगन, रहस्यमयी मछलियाँ और पहाड़ों के भीतर गूंजता हुआ सोना संभवतः किरेरूल सुरंगों के निर्माण, या तंत्र से परे सुरंगों के संकेत थे। इनका निर्माण कंपन आवृत्ति तकनीक का उपयोग करके किया गया था, जिससे आसपास के आयामों को स्थानांतरित करके चट्टानों की परतों को भौतिक रूप से तोड़ने के बजाय उनके माध्यम से प्रवेश करना संभव हो गया। एक बार पूरा होने पर, ये सुरंगें 3 डी क्षेत्र और उच्च आयामों के बीच सीमित पहुँच प्रदान कर सकती थीं।
वे लोग जिन्होंने उन्नत अंतर-आयामी प्रशिक्षण प्राप्त किया था। इसे एक बार फिर पृथ्वी के भीतर खोखले क्षेत्र में प्रवेश के रूप में देखा जा सकता है, जिसे व्यापक शब्द अगरथा द्वारा वर्णित किया गया है, जो पृथ्वी के आवरणों और शिखरों को अपने त्रि-आयामी आवरण के रूप में उपयोग करते हुए 7 वें आयाम की ओर ले जाने वाले सामूहिक उच्च-आयाम हैं। कछुआ और सर्प मानवाकार प्राणी 5 वें और 7 वें आयाम के बीच स्थित उच्च आयामों में निवास करने वाली संस्थाएँ थीं।
• कछुए जैसे दिखने वाले ये मानवाकार प्राणी 5D और 6D के बीच रहते थे और गहरे समुद्र का उपयोग करते थे।
क्योंकि यह उनका 3 डी छलावरण है।
• सर्प मानवाकृतियाँ 7D से परे डायनासोर की अभिव्यक्तियाँ थीं।
सिर वाले मानवाकार प्राणी, जो निम्न आयामों के साथ सीमित अंतःक्रियाओं को बेहतर ढंग से सुविधाजनक बनाने के लिए 7D क्षेत्र में प्रकट होते हैं।
तीन लुप्त सभ्यताओं के माध्यम से गूढ़ संबंध

सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

टायोन कुआहरोक, चिंता वश में करने वाला: जल के जीवन सार का ऋषि शासक गीरकेराव लाओंग कबीले के ऋषि शासक टायोन कुआहरोक, जो चिंता को वश में करने वाले थे, पीले वज्र जनजातीय संघ के ऋषि शासक के पोते और सौर बोध के तेह्येओंग अल्रिक्स के पुत्र थे। कबीले का नाम एक पतनशील मातृसत्तात्मक समाज के अवशेषों को दर्शाता है, जो उभरते हुए प्रभुत्ववादी पितृसत्तात्मक ढांचों और वंशानुगत उपनामों के विपरीत अपेक्षाकृत समान और सामंजस्यपूर्ण था।
टायोन कुआहरोक के जन्म से बहुत पहले, तेह्येओंग अल्रिक्स एक बार नदी किनारे टहल रहे थे जब उनकी मुलाकात एक

एक काला अजगर काले जेड पत्थर से तराशी गई एक पेंटिंग लिए हुए था। उसी क्षण, एक बूढ़ा आदमी अचानक कहीं से प्रकट हुआ और उससे बोला:
‘आपका भावी पुत्र एक ऋषि शासक बनेगा, उसका भाग्य उससे जुड़ा हुआ है।
जल जीवन शक्ति – पाँच जीवन शक्तियों में से एक।’ ठीक दस वर्ष बाद, टायोन कुआहरोक का जन्म हुआ, जिसके हाथों पर अजगर जैसी आकृतियाँ थीं – उसी काले जेड पत्थर की नक्काशी-चित्रकला के निशान जो उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन प्रकट हुए थे। उसी रात, जब तेह्येओंग अल्रिक्स ने आकाश की ओर देखा, तो उसने दस वर्ष पहले वाले उसी बूढ़े व्यक्ति को देखा – जो स्वयं उत्तरी तारे का ही एक रूप था।

टिप्पणी
• काले जेड पत्थर की पेंटिंग लिए हुए काले अजगर में संभवतः उच्च शक्ति थी। निम्न लोकों में प्रकट होने की महारत का स्तर, विशेष रूप से 3D और 5D के बीच के आयामों में। जबकि डायनासोर के सिर वाले मानव (या सरीसृप जैसी संस्थाएँ) आमतौर पर 7D क्षेत्र से परे 5D-7D स्पेक्ट्रम में अपने निम्न-आयामी आधार के रूप में प्रकट होते हैं, इस विशेष ड्रैगन में अति-उच्च आयामी ऊर्जा-अंकों को स्थानांतरित करने की क्षमता थी।
टायोन कुहारोक में प्रवेश करते हुए, उनके भीतर एक गहरा ब्रह्मांडीय संबंध स्थापित किया गया।
• यह प्राणी वास्तव में अलौकिक था, क्योंकि इसका सिर डायनासोर जैसा था।

मानवाकार या सरीसृप जैसी आकृतियाँ पृथ्वी पर या उसके आस-पास कोई भौतिक (3D) या आंशिक (5D-7D) आधार नहीं रखती हैं। इसलिए, उन्हें प्रकट होने के लिए अगाथन क्षेत्र तक अस्थायी पहुँच की आवश्यकता होती है, जो पृथ्वी के आंतरिक 3D आवरणों (मेंटल, क्रेस्ट, लावा) से परे 5D और 7D के बीच स्थित है। इसके विपरीत, अगाथा की आकृतियों को पृथ्वी का मूल निवासी माना जा सकता है, क्योंकि वे इसके उच्च-आयामी स्तरों में निवास करती हैं या उनसे प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई हैं।

टायोन कुआहरोक का शासनकाल - चिंता को वश में करने वाला
जब चिंता को शांत करने वाले टायोन कुहारोक को ऋषि शासक के रूप में पदस्थापित किया गया, तो एक के बाद एक कई अद्भुत और शुभ संकेत प्रकट होने लगे। दूर-दूर के देशों से लोग ऊंचे-ऊंचे पर्वतों और विशाल महासागरों को पार करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने आए।

इसके जवाब में, टायोन कुहारोक ने एक भव्य समारोह का नेतृत्व किया जिसमें उन्होंने चारों दिशाओं के देवी-देवताओं और आत्माओं को प्रणाम किया और उनकी पूजा की। उसी समय, विभिन्न उप-क्षेत्रों के जनजातीय प्रमुखों ने भेंट के रूप में जेड की शिलाएँ धारण कीं, जबकि जनजातीय व्यवस्था के अन्य सभी अधिकारियों ने व्यवस्थित और गंभीर ढंग से उनका अनुसरण किया।
नागरिक मामलों के अधिकारियों को घंटियाँ और पत्थर की घंटियाँ जैसे वाद्य यंत्र भेंट किए गए, जिनका उपयोग अनुष्ठानिक समारोहों में किया जाता था।

वहीं, सैन्य पदों पर नियुक्त लोगों को उनके कर्तव्य के प्रतीक के रूप में ढालें और कटार-कुल्हाड़ी से युक्त डंडे दिए गए। अनुष्ठानिक वाद्य यंत्रों में, एक असाधारण रूप से हल्की घंटी थी जिसे 'तैरता सोना' कहा जाता था, और पत्थर की घंटियों का एक असाधारण रूप से भारी सेट था जिसे 'भारी चमक' कहा जाता था। पंख से बजाने पर, इन घंटियों की गूंज 40.5 किलोमीटर तक सुनाई देती थी, और इनकी ध्वनियाँ धरती पर दिव्य गूँज की तरह फैलती थीं।

टिप्पणी
• यह तथ्य कि दूर-दराज के देशों के लोग पहाड़ों को पार करके यात्रा करते थे और
टायोन कुआहरोक द एंग्जायटी टेमर के सम्मान में महासागरों का उपयोग यह दर्शाता है कि यंगर प्लेन हिमालयन वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के तहत तीसरी पीढ़ी के पारस्परिक प्रमुख होने के बावजूद, उन्हें अभी भी व्यापक सम्मान प्राप्त था।
उनके शासनकाल में क्रा-दाई वंश का धीरे-धीरे सफाया हुआ।
विशेष रूप से पीली नदी के मध्य क्षेत्र में ह्मोंग-मिएन सभ्यता के अवशेष मिलते हैं। हालांकि, युवा मैदानी हिमालयियों ने कुमारी कंडम आधारित विज्ञान और प्रौद्योगिकी को विरासत में प्राप्त किया और उसे एकीकृत किया। और मूल्यों को आत्मसात करते हुए, साथ ही क्रा-दाई-होंग-मिएन लोगों से मु- विरासत में मिले तत्वों को भी आत्मसात किया।
इस प्रकार, अपनी विजयों के बावजूद, युवा मैदानी हिमालयियों ने पराजितों द्वारा प्रदत्त ज्ञान के प्रति एक प्रकार का आदर बनाए रखा। इस दृष्टिकोण ने उनके अस्तित्व संबंधी भय को कम किया—ये भय हिमालय में जीवनयापन के अवसरों से उनके जबरन विस्थापन से उत्पन्न हुए थे, जहाँ अन्य सामाजिक-वर्गीय व्यवस्थाएँ संभवतः उनसे आगे निकल गई थीं। इस विस्थापन ने संभवतः उत्तर-पूर्व की ओर महाद्वीपीय पूर्वी एशिया की ओर स्वैच्छिक अर्ध-हिमालयी प्रवास को प्रेरित किया, जिससे युवा मैदानी हिमालयी सामाजिक-वर्गीय व्यवस्था का निर्माण हुआ।

गूंजती पत्थर की घंटियाँ और प्रकृति का सामंजस्य

एक विशेष प्रकार का पत्थर मौजूद था जो पानी की सतह पर आसानी से तैर सकता था, इतना हल्का जैसे पानी के दाने और समुद्री शैवाल। पारंपरिक सामग्रियों के विपरीत, इस पत्थर को पत्थर की घंटियाँ बनाने में उपयोग करने के लिए किसी शोधन की आवश्यकता नहीं थी।

जब दस हजार राज्य श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए तीर्थयात्रा की तरह एकत्रित हुए, तो इन पत्थर की घंटियों को बजाकर 'ब्लॉसम कंटेन्ड' नामक धुन बजाई गई। इनकी मधुर और स्पष्ट गूंज दूर-दूर तक फैल गई, जिससे बादल से पक्षी नीचे उतरने लगे और नर-मादा व्हेल खुशी से पानी से उछलने लगीं। जैसे ही ये विशालकाय जीव लहरों पर नृत्य करने लगे, समुद्र शांत और निर्मल हो उठा।

हवाओं में तैरती छाया: जीवित तलवार
एक पौराणिक तलवार भी थी, जिसे 'हवाओं में तैरती छाया' के नाम से जाना जाता था। यह तलवार जरूरत पड़ने पर हवा में उड़ने की क्षमता रखती थी। सबसे खास बात यह थी कि इसमें दिशा का अद्भुत ज्ञान था, जो दूर देशों में होने वाले संभावित संघर्षों और युद्धों का पता लगा सकता था। जब भी इसे ऐसी कोई गड़बड़ी महसूस होती, यह अपना रुख बदलकर उनकी ओर इशारा करती, जो संघर्ष का संकेत होता था।
युद्ध के मैदान में, तलवार अजेय साबित हुई। यहां तक कि विश्राम की अवस्था में भी, यह अपनी म्यान के भीतर से गहरी, गूंजती हुई ध्वनियाँ उत्सर्जित

करती थी, जो अजगरों की कराह और बाघों की दहाड़ जैसी लगती थीं, मानो युद्ध की प्रत्याशा में बेचैन हो।

टिप्पणी
• हवाओं में तैरती छाया की अजेयता का कारण केवल इतना ही नहीं था
न केवल दिशा बताने की क्षमता से, बल्कि अपने धारक के साथ अद्वितीय तालमेल से भी, यह तलवार स्वयं को दूर-दूर तक ले जाने, विभिन्न आयामों में घूमने और त्रि-आयामी जगत में लगभग अजेयता की स्थिति प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।
• म्यान के भीतर से आने वाली कराहने और दहाड़ने की आवाज़ें यह संकेत देती हैं कि
तलवार की कंपन आवृत्ति निरंतर परिवर्तनशील थी, जिससे वह अपने आसपास के आयामों को स्थानांतरित करने के साथ-साथ आयामों के पार या 3 डी क्षेत्र के भीतर टेलीपोर्ट करने में सक्षम थी।
मूल रूप से, तलवार का निर्माण आत्मरक्षा के लिए और संभवतः एक हथियार के रूप में किया गया था।
यह निम्न चेतना स्तर वाले व्यक्तियों को ऊपर उठाने का एक उपकरण था—वे लोग जो ‘आवाजों के निर्देशों’ के चक्र में फंसे हुए थे—जिन्हें इच्छाओं, भावनाओं, आवेगों और भय के रूप में भी जाना जाता है—जो आत्म-जागरूकता के बिना काम करते हैं। हालाँकि, जब यह बाद में अर्ध-उन्नत व्यक्तियों के हाथों में पड़ा, जो अभी भी ‘आवाजों के निर्देशों’ से प्रभावित थे, तो इसका उपयोग हिंसा के लिए किया जाने लगा।
संघर्ष और युद्ध।

अंततः, जब इस तलवार का प्रयोग गैर-उन्नत व्यक्तियों द्वारा किया जाता है, जो विशुद्ध रूप से भौतिकवादी, अस्तित्व-प्रेरित मानसिकता में काम करते हैं, तो इसकी शक्ति कम हो जाती है - जिससे यह केवल दिशा-सूचक कार्य तक ही सीमित रह जाती है, और अपनी पूर्व-महान आयामी क्षमताओं से वंचित हो जाती है।

बेरूटी राज्य और छायाहीन पक्षी लोग
डार्क ओशन (जिसे मीओंगल ओशन भी कहा जाता है) के उत्तरी किनारे पर बेरूटी राज्य स्थित था, जो संभवतः एल्गोनक्वियन बेओथुक लोगों को संदर्भित करता है। बेरूटी के निवासी पंखों से बने वस्त्र पहनते थे, और अन्य मनुष्यों की तरह पंखहीन होने के बावजूद उनमें स्वाभाविक रूप से पक्षी जैसी प्रकृति पाई जाती थी।
आश्चर्यजनक रूप से, सूर्य के चरम पर पहुँचने पर भी, उनके शरीर की अपेक्षित छायाएँ नहीं दिखाई देती थीं। वे ब्लैक नदी से एकत्रित समुद्री शैवाल खाकर अपना जीवन यापन करते थे और माउंट ग्लूमी के ओस्मान्थस वृक्षों से प्राप्त ताजा राल पीते थे, जिसका उपयोग वे पीने के पानी के रूप में करते थे। उनकी असाधारण दीर्घायु उन्हें एक हजार वर्ष तक जीवित रहने में सक्षम बनाती थी। वे हवा को नियंत्रित करके उड़ सकते थे या पानी का उपयोग करके बड़ी दूरी को सहजता से तय कर सकते थे।
बाद में, टायोन कुहारोक के नेतृत्व में पूर्वी एशिया के महाद्वीपीय हिमालयी क्षेत्र में यात्रा करने के बाद, वे कुछ समय तक वहाँ रहे। हालाँकि, गर्म जलवायु के कारण उनके पंख स्वाभाविक रूप से झड़ने लगे। उनकी दुर्दशा

देखकर, ऋषि शासक टायोन कुहारोक ने उन्हें खोए हुए पंखों के स्थान पर तेंदुए की खाल से बने वस्त्र भेंट किए।
कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में, बेरूटी लोगों ने काले जेड के छल्ले उपहार में दिए, जिनकी सतह गहरे काले रंग की थी। उन्होंने एक हजार काले घोड़े भी भेंट किए। टायोन कुआहरोक ने इन शक्तिशाली घोड़ों को जोता।

लोहे के पहियों वाले रथों को खींचकर, वह अपनी बस्तियों के सबसे दूरदराज के हिस्सों में गश्त कर सकता था, स्थानीय मामलों की देखरेख कर सकता था और अपनी प्रजा के जीवन को गहराई से समझ सकता था। ऐसा करके, वह उनके संघर्षों के प्रति बेहतर सहानुभूति दिखा सकता था और संभावित चुनौतियों के समाधान खोजने में सहायता कर सकता था। अपना मिशन पूरा करने के बाद, बेरूटी लोगों ने एक बार फिर हवा को अपने वश में किया, ब्लैक नदी पर हल्के कदमों से चलते हुए, उसकी सतह को ऐसे पार किया मानो ठोस जमीन पर चल रहे हों, और अंततः अपने वतन लौट आए।

टिप्पणी
भौगोलिक सहसंबंध
बेरूटी लोग संभवतः न्यूफ़ाउंडलैंड के बेओथुक लोग थे। मीओंगल महासागर (अंधेरा महासागर) साइबेरियाई आर्कटिक सागर हो सकता है, जबकि मीओंगल महासागर के पार की भूमि का उल्लेख उत्तरी अमेरिकी आर्कटिक तटों की ओर इशारा करता है।

रिवर ब्लैक के कई अर्थ हो सकते हैं:
• अमूर-अल्दान-लेना नदी प्रणाली, जो आर्कटिक में बहती है।
पूर्वी साइबेरिया के माध्यम से
• पैटागोनिया में स्थित रियो नीग्रो (जिसका अर्थ है काली नदी),
दक्षिण अमेरिका का सबसे दक्षिणी क्षेत्र, जो अंटार्कटिका की ओर जाता है ये नदियाँ संभवतः बेरूट्टी दूतों के यात्रा मार्ग का हिस्सा रही होंगी जब वे उत्तरी अमेरिका के उत्तरी अटलांटिक तटों पर लौट रहे थे।

जहां तक उनके मूल निवास स्थान में स्थित रिवर ब्लैक की बात है, यह लैब्राडोर की चर्चिल नदी हो सकती है, क्योंकि बेओथुक लोग मूल रूप से लैब्राडोर में रहते थे और बाद में न्यूफ़ाउंडलैंड चले गए। वहीं, माउंट ग्लूमी मध्य लैब्राडोर के मीली पर्वतों से संबंधित हो सकता है।
गूढ़ क्षमताएँ
बेरूटी की परछाई का अभाव और हवा और पानी पर चलने की उनकी क्षमता, अंतर-आयामी स्व-दूरस्थानीकरण और आयामी परिवर्तन में उनकी महारत को दर्शाती है। उनके मूल एक-टुकड़ा वस्त्र संभवतः सहायक उपकरणों के रूप में कार्य करते थे जिन्हें निम्न उद्देश्यों के लिए डिज़ाइन किया गया था:
• उच्च-आयामी गुणों को प्रतिबिंबित करें
• दृश्य धारणाओं में हेरफेर करना, उन्हें साकार होने से रोकना
केवल त्रि-आयामी दुनिया से बंधे लोगों द्वारा

□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

II - 2

□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□

III - 6

□□□□□ □ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□

केहूग द क्विक कम्युनिकेटर की रखैलें अलसरूडेरा कबीले की बेटियाँ थीं। अलसरूडेरा कबीले की उत्पत्ति उनके नेता, क्रा-दाई-होंग-मिएन गठबंधन के प्रमुख, तेह्यो वोइर की पराजय के तुरंत बाद हुई, जो पीले वज्र जनजातीय संघ (हिमालय से महाद्वीपीय पूर्वी एशिया में विस्तार करने वाले युवा मैदानी हिमालयियों का प्रतिनिधित्व करने वाले) के ऋषि शासक, कुहार वोआन द चैरियट शाफ्ट के हाथों हुई थी।

अपने नेता की पराजय के बाद, कुहार वोआन ने आत्मसमर्पण करने वालों को अलसरो और डेरा क्षेत्रों में बसा दिया, जबकि हठपूर्वक विरोध करने वालों को उत्तरी सीमा पर निर्वासित कर दिया गया, जो पूर्वी स्टेपी के सबसे दक्षिणी छोर से लगती थी और पीली सागर की खाड़ी के तट तक फैली हुई थी, जहाँ से कोरियाई प्रायद्वीप का उत्तरी छोर दिखाई देता था। अलसरो और डेरा में पुनर्स्थापित लोगों ने इन स्थानों के नाम को अपने गोत्र के नाम के रूप में अपना लिया, और अंततः अलसरो और डेरा गोत्रों में विभाजित हो गए। अलसरो-डेरा गोत्र की पुत्रियों के पास अलौकिक शक्तियाँ थीं, क्योंकि वे बिना पैर जमीन पर रखे चल सकती थीं, अक्सर हवा पर सवार होकर पीली नदी की सहायक नदियों, जैसे कि अलेये नदी और गेहराग नदी पर बादलों को नियंत्रित कर सकती थीं - इन नामों का अर्थ क्रमशः 'वह नदी' और 'सभी नदी' है।
उनकी क्षमताओं से प्रभावित होकर, केहूग द क्विक कम्युनिकेटर ने उन्हें अपनी रखैल बनने के लिए आमंत्रित किया। रखैल बनने के बाद, वे अक्सर सपने में सूर्य को निगलती हुई दिखाई देती थीं और हर बार एक पुत्र को जन्म देती थीं।

यह प्रक्रिया आठ बार दोहराई गई, जिसके परिणामस्वरूप आठ पुत्रों का जन्म हुआ, जिन्हें बाद में आठ देवताओं के रूप में व्यापक रूप से पूजा जाने लगा।
वैकल्पिक रूप से, इन्हें इन नामों से भी जाना जाता था:
• आठ वोआरिप, जहाँ 'वोआरिप' का अर्थ है उत्कृष्टता।
• आठ अलराओंग, जहां 'अलराओंग' प्रतिभा का प्रतीक है।
• आठ क्रिक, जहाँ 'क्रिक' बल को दर्शाता है।

इनमें से प्रत्येक उपाधि उनके जोश, साहस और प्रतिभा के गुणों को दर्शाती है, जो ब्रह्मांड की सभी चीजों को वास्तविकता के तंत्र के साथ सामंजस्य स्थापित करने और निर्देशित करने में उनकी नियतिगत भूमिका का प्रतीक है।
उनकी उपस्थिति से समृद्धि आई और उनकी बुद्धिमत्ता, शक्ति और साहस आम लोगों के बीच प्रसिद्ध हो गए।

टिप्पणी
• सूर्य को निगलने के सपने अवचेतन संकेत का प्रतीक हो सकते हैं।
पृथ्वी ग्रह के केंद्र का संदर्भ दिया गया है, जो एक अत्यधिक सघन ऊर्जा केंद्र है और सूर्य के समान है। हालांकि, यह संभवतः प्रतीकात्मकता की केवल पहली परत है।
अगरथा—जिसे अक्सर पृथ्वी के त्रि-आयामी आवरण में छिपे उच्च-आयामी लोकों के लिए एक व्यापक शब्द के रूप में संदर्भित किया जाता है—यह सुझाव देता है कि पृथ्वी का त्रि-आयामी केंद्र 7-आयामी लोक तक पहुँच को छुपा सकता है।

यह उच्च-आयामी स्थान पक्षी-सिर वाले मानवों से जुड़ा है, जो इस विचार को पुष्ट करता है कि 'सूर्य को निगलना' अंतर-आयामी विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों और कंपन आवृत्तियों, या सरल शब्दों में कहें तो अंतर-आयामी अंकों के रूप में उच्च-आयामी ऊर्जा को अवशोषित करने का संकेत देता है।

• आठ देवता/चमक, जो आठ बार दोहराए गए सूर्य से उत्पन्न हुए हैं-
स्वप्नों को निगलने की घटना ने संभवतः युवा मैदानी हिमालयियों के बीच बाद की पौराणिक कथाओं को प्रेरित किया होगा और दक्षिण अमेरिकी गुआरानी (पराग्वे) पौराणिक परंपराओं के साथ एक पुराना, साझा प्रेरणा स्रोत साझा करती है - विशेष रूप से एक अर्ध-दिव्य धनुर्धर, ओंगेरर्स की कहानियाँ, जो कुल दस सूर्यों में से नौ (या कुल नौ सूर्यों में से एक रात) को मार गिराता है। गुआरानी पौराणिक कथाओं के मामले में, यह गर्जन के अर्ध-देवता तुपा हैं जो पाताल लोक के देवता अनंगना पर प्रहार करते हैं, जो पृथ्वी के केंद्र-सौर-समान ऊर्जा का प्रयोग करते हैं।
संख्याओं का चुनाव (8 और 9 सूर्य, चाहे वे नष्ट हो गए हों या सूर्यों की मूल कुल संख्या हों) उस कंपन अनुक्रम के अनुरूप है जो त्रि-आयामी वास्तविकता (और उससे जुड़े कई उच्च आयामों) का आधार है। ये संख्याएँ संभवतः उन गणितीय सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करती हैं जो भौतिक जगत की इंजीनियरिंग नींव बनाते हैं, और एक उच्च-आयामी संरचना के अनुप्रस्थ काट के रूप में कार्य करते हैं।

इस प्रकार, सूर्य की तस्वीर खींचने का कार्य निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व कर सकता है:
• उच्च आयामों से पुनः जुड़ने की एक भावुक लालसा
अस्तित्व, विशेष रूप से 7D क्षेत्र जहां मानव चेतना के मूल तत्व निवास कर सकते हैं।
• मानवीय स्थिति का एक प्रतीकात्मक संघर्ष, जहाँ नायक लड़ते हैं
सौर देवता — भौतिक अस्तित्व की सीमाओं को पार करके उच्च-आयामी चेतना/उपस्थिति से पुनः जुड़ने का एक रूपक।

केहूग, जो एक कुशल संचारक थे, के अनुसार, उन्होंने तीन उन्नत सभ्यताओं (कुमारी कंडम, मु और अटलांटिस) के ज्ञान और मूल्यों को फैलाने का सक्रिय रूप से प्रयास किया। उनका यह मिशन संभवतः पुनर्जागरण काल का एक प्रयास था, जिसका उद्देश्य मानव चेतना के पतन को रोकना था, जिसके कारण भय-आधारित अविश्वास, संघर्ष और युद्ध जैसी घटनाएं उत्पन्न हुई थीं।

वर्मिलियन हिल राज्य और मरालनूल की पवित्र श्रद्धांजलि
टेरान कोवोहिर राज्य, जिसे वर्मिलियन हिल के नाम से भी जाना जाता है, एक विविध आबादी का घर था, जिसमें ह्मोंग-मिएन के अवशेष, जोमोन-ऐनुरिक, इंडो- यूरोपीय अफनासीवन टोचेरियन और येनिसेयन लोग शामिल थे। भेंट के रूप में, उन्होंने एक जार के आकार का मिट्टी का बर्तन भेंट किया, जो पूरी तरह से अगेट से बना था और विशेष रूप से अमृत रखने के लिए था। इस विशेष प्रकार के

अगेट को मरालनूल के नाम से जाना जाता था, जो दक्षिणी क्षेत्रों से उत्पन्न होता था और इसे एक अनमोल खजाना माना जाता था। घोड़े के मस्तिष्क के समरूप होने के कारण, मरालनूल को कुछ अर्ध-दिव्य घोड़ों के क्रिस्टलीकृत मस्तिष्क से उत्पन्न माना जाता था, इसलिए इसकी आकृति घोड़े के मस्तिष्क जैसी होती थी। समकालीन समय में, टेरान कोवोहिर के घोड़ा विशेषज्ञ मृत घोड़ों के मस्तिष्क का विश्लेषण करके उनके अद्वितीय गुणों और क्षमताओं का पता लगाते थे।
खून जैसे लाल दिमाग वाले घोड़े प्रतिदिन लगभग 1,450 किलोमीटर दौड़ सकते थे और हवा में उछल-कूद करके उड़ भी सकते थे; पीले दिमाग वाले घोड़ों की दैनिक दौड़ने की क्षमता लगभग 145 किलोमीटर थी; नीले-हरे दिमाग वाले घोड़े इतनी ज़ोर से हिनहिना सकते थे कि उनकी आवाज़ 42 किलोमीटर तक सुनाई देती थी; काले दिमाग वाले घोड़ों में पानी के नीचे भी अपने अयाल को सूखा रखने की अनूठी क्षमता थी और वे प्रतिदिन 72.5 किलोमीटर दौड़ सकते थे; जबकि सफेद दिमाग वाले घोड़े सबसे मजबूत, सबसे चुस्त और सबसे स्वस्थ थे। टेरान कोवोहिर के लोगों ने केवल घोड़े की हिनहिनाहट सुनकर उसके दिमाग के रंग की पहचान करने की कला में महारत हासिल कर ली थी।

म्रालनूल की उत्पत्ति के संबंध में एक अन्य मत यह है कि यह आत्माओं की कारीगरी से संबंधित है। टेरान कोवोहिर क्षेत्र दयालु लेकिन शरारती आत्माओं का घर था, जिनमें वोआक्ससेहराल (बौद्ध धर्म में यक्ष के नाम से भी जाना जाता है) और कोबूद नामक एक अन्य रूप शामिल थे। वोआक्ससेहराल और कोबूद

दोनों ही प्रसिद्ध कारीगर थे, जो लाल रंग के अर्ध-घोड़े के मस्तिष्क जैसे दिखने वाले अगेट पत्थरों से कलश के आकार के धातु के वाद्ययंत्र और गायन कटोरे बनाते थे, जिससे इन कलाकृतियों का घोड़े के मस्तिष्क जैसा रूप और भी निखर जाता था। इन कलाकृतियों को सामूहिक रूप से म्रालनूल कहा जाता है। ये कलाकृतियाँ परिष्कृत, हल्की, उत्कृष्ट और बेहद खूबसूरत थीं। ऐसा कहा जाता था कि हिमालयी मैदानी इलाकों में इन वाद्ययंत्रों का उपयोग करने वाला कोई भी व्यक्ति राक्षसी देवताओं, बुरी आत्माओं और दानवों से सुरक्षित रहता था।

लाल घोड़े के मस्तिष्क जैसी दिखने वाली अगेट की वैकल्पिक उत्पत्ति म्रालनूल अगेट की उत्पत्ति के संबंध में एक और किंवदंती प्रचलित थी, जिसमें यह सुझाव दिया गया था कि यह एक प्राकृतिक पत्थर नहीं बल्कि बुरी आत्माओं का जमा हुआ रक्त था।
कुहार वोआन के नेतृत्व वाले येलो थंडर ट्राइबल यूनियन और तेह्यो वोइर के नेतृत्व वाले क्रा-दाई-होंग-मिएन गठबंधन के बीच युद्ध के दौरान, ऋषि शासक कुहार वोआन (रथ शाफ्ट) ने गठबंधन को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानते हुए, उनके खिलाफ विनाशकारी युद्ध छेड़ दिया। परिणामस्वरूप, तेह्यो वोइर की तरफ से मारे गए योद्धाओं के साथ-साथ राक्षस और बुरी आत्माएं भी नष्ट हो गईं।

नदियों और घाटियों में मृतकों का खून भर गया, जिससे गहरे तालाब बन गए, जबकि उनकी हड्डियों से ऊंचे-ऊंचे ढेर और पहाड़ बन गए। समय के साथ, कुछ ही वर्षों

में खून के ये तालाब ठोस होकर पत्थर जैसी संरचनाओं में तब्दील हो गए, हड्डियां चूने की तरह सफेद हो गईं, और लाशों, राक्षसों और बुरी आत्माओं की चर्बी मिलकर तरल वसा की धाराएं बन गईं, जो अंततः झरनों में जाकर मिल गईं। इसी प्रक्रिया से दक्षिण में स्थित पौराणिक 'वसा झरना' अस्तित्व में आया, जहां एक भव्य चूना पत्थर का पहाड़ खड़ा है, जिसकी चमकदार सफेद आकृति दूर से बर्फ और पाले जैसी दिखती है।
एक अन्य महत्वपूर्ण स्थल, सिनाबार हिल, लाल घोड़े के मस्तिष्क जैसी दिखने वाली अगेट चट्टानों की श्रृंखला का हिस्सा था। हर 1,000 साल में एक बार, यह पहाड़ी आग की लपटों में घिर जाती थी, ठीक उसी तरह जैसे पीली नदी के बारे में कहा जाता था कि वह हर हज़ार साल में एक बार कीचड़ से साफ हो जाती है। सिनाबार हिल के दूरस्थ हिस्से विशेष रूप से पराजित योद्धाओं, दुष्ट आत्माओं और राक्षसों के रक्त से समृद्ध थे, जो जम कर लाल पत्थर बन गए थे, और इस प्रकार म्रालनूल अगेट के निर्माण में योगदान दिया था।

टिप्पणी
• घोड़े के मस्तिष्क का रंग संभवतः उसकी संवेदनशीलता के स्तर को दर्शाता था।
और उच्च-आयामी चेतना से डीएनए के अनलॉक होने/पुनः जुड़ने की इसकी डिग्री।

म्रालनूल अगेट, मानव वसा और नरसंहार से प्राप्त रक्त के साथ, संभवतः निम्नलिखित कारणों से उच्च आयामों से जुड़ गया है:

• खंडित वास्तविकता-निरंतरता में आयामी पोर्टल
(वर्महोल)
• ब्रह्मांडीय कारण और प्रभाव • ऋषि शासक द्वारा अंतर-आयामी अंक स्थापित करने की क्रियाएँ
एक सूत्र, जो उन्हें उच्चतर लोकों से जोड़ता है।
• क्रा-दाई-होंग-मिएन समूहों के नरसंहार ने संभवतः स्थिति को बदल दिया। युवा मैदानी हिमालयी सभ्यता आंशिक नियतिवाद के पथ पर अग्रसर थी, जिसके कारण सहस्राब्दियों के दौरान उनका अपना पतन, कष्ट और ठहराव हुआ - एक ऐसा भाग्य जिसकी पृथ्वी पर किसी अन्य सभ्यता ने शायद ही कभी बराबरी की हो।

म्रालनूल अगेट और स्व-पुनर्भरने वाला अमृत
म्रालनूल अगेट इतना कठोर था कि उसे काटना, छीलना या तराशना असंभव था। इससे औजार बनाने का एकमात्र कारगर तरीका सांचे में ढालना था। वोक्ससेहराल और कोबूड द्वारा गढ़े गए म्रालनूल के घड़े, पीले वज्र जनजातीय संघ के ऋषि शासक, कुहार वोआन (रथ शाफ्ट) को उनके शासनकाल के दौरान भेंट किए गए थे। इन घड़ों को बाद के युगों में सावधानीपूर्वक संरक्षित रखा गया और ये ऋषि शासक ओंगेरेव (महान) के शासनकाल तक सुरक्षित रहे।
इन अगेट के घड़ों में एक रहस्यमय, स्वतः भर जाने वाला अमृत था जिसे अनमोल अमृत के नाम से जाना जाता था। जब भी यह अमृत सूख जाता, जादुई रूप से फिर से भर जाता था। यह असाधारण पदार्थ केवल ऋषि शासक येलो थंडर और ऋषि शासक ओंगेरेव के सलाहकार और सहायक अधिकारियों के लिए आरक्षित था। हालांकि, ऋषि शासक स्टोन्स द टू-प्यूपिल-आईड डेविएटर के समय तक, अनमोल अमृत में कमी के लक्षण दिखाई देने लगे थे।
अमृत के स्तरों पर नैतिक प्रभाव
ऐसा माना जाता था कि अगेट के घड़ों में मौजूद अमृत का स्तर शासकों की सामूहिक नैतिक स्थिति के अनुरूप घटता-बढ़ता रहता था। जब शासन में दया और ईमानदारी का बोलबाला होता था, तो अमृत स्वतः ही भर जाता था और घड़े लबालब भर जाते थे; जब शत्रुता, भ्रष्टाचार और निर्दयता हावी हो जाती थी, तो अमृत सूख जाता था और घड़ों में उसका स्तर धीरे-धीरे घटता जाता था।

इस आध्यात्मिक और नैतिक घटना को पहचानते हुए, ऋषि शासक स्टून्स ने बहुमूल्य अमृत के कलशों को गेहेराओंग पर्वत पर स्थानांतरित करने का निर्णय लिया, जिसका अर्थ है माप का पर्वत। इस पवित्र पर्वत की चोटी पर, उन्होंने बहुमूल्य अमृत की वेदी स्थापित की, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि कलश सुरक्षित और पूजनीय रहें। वेदी के नीचे, उन्होंने चंद्र अतिथि गृह का निर्माण किया, जो रात्रि में चंद्रमा अवलोकन के लिए समर्पित एक विशेष वेधशाला थी।

टिप्पणी
स्वयं को पुनःपूर्ति करने वाला यह अमृत संभवतः अतीत के नरसंहारों में मारे गए आंशिक रूप से उन्नत व्यक्तियों का अंतर-आयामी अवशेष था। यह दुर्लभ घटना आंशिक ब्रह्मांडीय कारण-और-प्रभाव नियतिवाद का मूर्त रूप हो सकती है, जिसमें सकारात्मक विद्युत चुम्बकीय और कंपन आवृत्ति अंक शामिल हैं। पृथ्वी के केंद्र के 3 डी छलावरण के विपरीत, पक्षी के सिर वाले मानवों के 7 डी क्षेत्र में निम्नलिखित विशेषताएं थीं:
• आसमान में ऊँचा चमकता चाँद
• नीली घास से ढके तैरते द्वीप
• दूधिया रंग की नदियाँ
• घोर अंधेरे पेड़
• चमकीला बैंगनी आकाश

• अनंत से निर्मित विशाल तीन पैरों वाले लकड़ी के ट्रिस्केलियन
मानव भुजाओं की संख्या, हवा में मंडरा रही हैं

ऋषि शासक स्टोन्स द्वारा चंद्रमा की प्रतीकात्मक शक्ति को बढ़ाने के प्रयास से यह संकेत मिलता है कि वे 7D क्षेत्र के उच्च-आयामी 'चंद्रमा' से पुनः जुड़ना चाहते थे। ऐसा करके, उन्होंने संभवतः 3D वास्तविकता में अधिक सकारात्मक विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा का संचार करना चाहा होगा, जिससे क्रा- दाई-होंग-मिएन समूहों के व्यापक नरसंहार द्वारा छोड़े गए नकारात्मक ऊर्जा के निशानों का प्रतिकार किया जा सके। यह नरसंहार पिछली पीढ़ियों में उनके पूर्ववर्ती जनजातीय नेता, येलो थंडर ट्राइबल यूनियन के ऋषि शासक द्वारा किया गया था। यह इरादा दर्शाता है कि नरसंहार बहुत बड़े पैमाने पर हुआ था, जिसके कारण ब्रह्मांडीय संतुलन को बहाल करने का प्रयास आवश्यक हो गया था। 7D चंद्रमा से जुड़ने से संभवतः और भी उच्च आयामों के साथ संपर्क का मार्ग प्रशस्त हुआ होगा, जहाँ सरीसृप और डायनासोर के सिर वाले मानवों की उत्पत्ति हुई है। इन प्रयासों के बावजूद, नरसंहार से उत्पन्न नकारात्मक ऊर्जा (अंक) विशाल बनी रही, जिससे अतीत के कार्यों के परिणामों को पूरी तरह से शुद्ध करना कठिन हो गया।

तीन लुप्त सभ्यताओं के माध्यम से गूढ़ संबंध

II - 3

□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□

ऋषि शासक ओंगेरेव और स्वर्ग एवं पृथ्वी की पवित्र कलाकृतियाँ

ऋषि शासक ओंगेरेव अपने शासनकाल के दौरान अपनी विपुल ऋषिता के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने लगभग 24.63 वर्ग सेंटीमीटर की एक जेड शिला प्राप्त की, जिस पर आकाश और पृथ्वी के आकार दर्शाने वाले चित्र बने हुए थे। यह शिला गेहराग नदी (जिसका अर्थ है सर्व नदी) के तट पर, पीली नदी के साथ उसके संगम पर पाई गई थी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने एक स्वर्ण दीवार भी प्राप्त की जिस पर शुभ चिन्ह अंकित थे, जो समस्त अस्तित्व की उत्पत्ति को स्पष्ट रूप से दर्शाते थे और यह दिखाते थे कि आकाश और पृथ्वी के निर्माण के माध्यम से सब कुछ कैसे साकार हुआ, जैसा कि उस पर अंकित ग्रंथों में बताया गया है।

पौराणिक लंबी पूंछ वाला काला तीतर
अलरीव क्षेत्र में, जिसका अर्थ है दूरस्थ, धुंधला क्षेत्र, जो पीले सागर की खाड़ी के आसपास के तटीय क्षेत्र में स्थित है और कोरियाई प्रायद्वीप के उत्तरी सिरे को देखता है, माउंट वोराल के उत्तर में, जिसका अर्थ है पर्वत पंख (निर्देशांक: 34°55′12″N 118°39′04″E), एक असाधारण पक्षी मौजूद था जिसमें चहचहाने की एक असाधारण क्षमता थी।

इस पक्षी का चेहरा मनुष्य जैसा था, चोंच पक्षी जैसी थी, आठ पंख थे और एक ही पैर था। इसके पंख तीतर के पंखों से काफी मिलते-जुलते थे और रंगों की एक मनमोहक श्रृंखला प्रदर्शित करते थे। खास बात यह थी कि चलते समय इसका पैर कभी जमीन को नहीं छूता था, और इसकी मधुर चहचहाहट
उसकी आवाज़ इतनी मधुर और सुरीली थी मानो घंटियाँ, पत्थर की घंटियाँ और बांसुरी जैसे वाद्य यंत्र एक साथ बज रहे हों। इसका नाम लंबी पूंछ वाला काला तीतर रखा गया।
ऐसा कहा गया था:
जब लंबी पूंछ वाला काला तीतर विशाल झीलों के ऊपर चहचहाता और उड़ता रहेगा, कभी जमीन पर नहीं उतरेगा, तब वह युग असीम शांति और शाश्वत सुकून से चिह्नित होगा।

जब से पहले कांसे के बर्तन गढ़े गए थे, तब से उन पर लंबी पूंछ वाले काले तीतर की छवि उकेरी जाती थी, साथ ही पाठ में उत्कीर्ण प्रशंसाएं भी होती थीं, जो आज भी इसकी शुभ उपस्थिति का सम्मान करती हैं।

टिप्पणी
• एक पैर वाला, आठ पंखों वाला, पक्षी के सिर वाला वह मानवाकार प्राणी संभवतः एक था।
7D क्षेत्र के पक्षी-प्रवण प्राणियों की आंशिक अभिव्यक्ति। इसकी उपस्थिति से जुड़ी शांति और सुकून संभवतः सकारात्मक अंतर-आयामी कंपन आवृत्तियों या विद्युत चुम्बकीय अंक छापों का परिणाम थे, जिन्होंने वर्ग-उपाधि प्रणाली-समूहों के प्रबुद्ध ऋषि शासकों को पुरस्कृत किया। कड़ाही पर लंबी पूंछ वाले काले तीतर की नक्काशी एक
यह एक नवोन्मेषी परंपरा है, जो मानव चेतना के विकास के महत्वपूर्ण क्षणों को दर्ज करने की अवचेतन विधि के रूप में कार्य करती है। यह उच्च आयामों से पुनः जुड़ने की चुनौतियों का भी प्रतीक है, जो 3 डी दुनिया से बंधे मनुष्यों के सामने प्रस्तुत की जाती हैं।

जहाज केरोंस ओंगवोत्ज़रा (चंद्रमा भेदक): पश्चिमी सागर से आया एक खगोलीय शिल्प
ऋषि शासक ओंगेरेव के शासनकाल के तीस वर्षों के दौरान, पश्चिमी सागर से एक विशाल जहाज प्रकट हुआ, जिससे प्रकाश की तेज किरणें निकल रही थीं जो रातों

को रोशन करती थीं लेकिन दिन के उजाले में गायब हो जाती थीं। तटीय निवासी इन रहस्यमय किरणों को निहारते रहे, जहाज की उपस्थिति के बारे में अपनी धारणाओं को सत्यापित करने का प्रयास करते रहे - कुछ प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा, कुछ प्रत्यक्षदर्शियों के बयानों द्वारा, और यहां तक कि वे लोग भी जिन्होंने इसे नहीं देखा था लेकिन इस घटना को समझने की कोशिश कर रहे थे।

जहाज का आकार घटता-बढ़ता रहता था, ऐसा लगता था मानो तारे और चंद्रमा बादलों में डूब रहे हों और फिर उभर रहे हों। यह अक्सर बारह साल के चक्र में महासागरों का चक्कर लगाता रहता था। ये चक्र स्वतः दोहराए जाते थे, प्रत्येक चक्कर पूरा होने पर निर्बाध रूप से जारी रहते थे।
इस रहस्यमयी पोत का नाम 'शिप केरोंस ओंगवोत्ज़रा द मून पियर्सर' रखा गया था, जो एक दिव्य चमत्कार था जिस पर उड़ने वाले, पंखों से ढके देवता निवास करते थे। ये देवता एक साथ गति करते हुए अपने मुखों से ओस की बूँदें निकालते थे और उनका उपयोग पोत की सतह को साफ करने के लिए करते थे। हर बार ऐसा करने पर सूर्य और चंद्रमा का प्रकाश मंद प्रतीत होता था, मानो इस दिव्य शुद्धि ने क्षण भर के लिए ब्रह्मांडीय प्रकाश के संतुलन को ही बिगाड़ दिया हो। बाद के ऋषि शासकों 'स्टून्स द टू-प्यूपिल-आईड डेविएटर' और 'वोरल द रेप्टिलियन-इंसेक्टाइल शिफ्टर' के शासनकाल तक, पोत के देखे जाने का कोई रिकॉर्ड नहीं था, फिर भी इसकी किंवदंती नाविकों के बीच जीवित रही।

टिप्पणी

चंद्रमा भेदक, शिप केरोंस ओंगवोत्ज़रा का बारह वर्षीय चक्र संख्या 3 के अंकशास्त्रीय महत्व से मेल खाता है (अंकशास्त्र में 12 घटकर 3 हो जाता है), जो दर्शाता है:
• सच
• प्रजनन क्षमता
• निर्माण
• 3 डी में भौतिक वास्तविकता का एन्कोडेड अनुक्रमण

जहाज पर विराजमान पंखों से ढके देवता संभवतः 7D पक्षी-सिर वाले मानवाकार प्राणियों के 3D क्षेत्र में लगभग पूर्ण प्रकटीकरण थे। यद्यपि ये प्राणी 3D में प्रकट हुए थे, फिर भी मानव प्रेक्षकों को उनके वास्तविक रूप को समझने के लिए अपनी चेतना को कम से कम 5D जागरूकता की सीमा तक बढ़ाना आवश्यक था। इस प्रकार, यह मुठभेड़ एक बाह्य घटना (3D अंतरिक्ष में क्षैतिज रूप से) और आंशिक रूप से उच्च-आयामी घटना (आयामों के पार लंबवत रूप से) दोनों थी।
छाया अग्नि और सदा जलती हुई लौ
पश्चिमी सागर के पश्चिमी भाग में, एक तैरता हुआ जेड पर्वत होने की बात कही जाती थी, जिसके नीचे एक विशाल, गुफानुमा भूभाग फैला हुआ था। इस विशाल गुफा के भीतर, एक रहस्यमयी जलस्रोत बहता था - जिसका रूप जलती हुई लपटों जैसा था। दिन में इसकी चमक मंद होती थी, लेकिन रात में यह गुफा के आस-पास के क्षेत्र से कहीं अधिक दूर तक फैल जाती थी। समुद्र की लहरों के निरंतर बहाव, बहाव और

शुद्धिकरण से भी यह अटूट चमक अप्रभावित रहती थी, इसीलिए इसे छाया अग्नि का नाम दिया गया था।
ऋषि शासक ओंगेरेव के स्वर्ण युग के दौरान, छाया अग्नि की ज्वालाएँ प्रचंड रूप से भड़क उठीं, लाल बादलों में परिवर्तित हो गईं और आकाश में चमकीली लाल किरणें बिखेरने लगीं। इस बीच, नदियाँ और छोटी धाराएँ शांत, निर्मल और स्वच्छ बह रही थीं, जो अग्नि और जल के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन को दर्शाती थीं। नाविकों ने छाया अग्नि के इस विस्मयकारी रूप को जलता हुआ जलता हुआ नाम दिया, और इसे ऋषि शासक ओंगेरेव की भाग्यपूर्ण ऋषिता का प्रतीक माना, जिनका भाग्य पंच प्राणिक तत्वों/कारकों के भीतर अग्नि प्राणिक तत्व से जुड़ा हुआ था।

टिप्पणी
गुफा से परे फैली रोशनी और गहरे समुद्र की गुफा में फैलती हुई कभी न बुझने वाली लौ संभवतः निम्नलिखित की अभिव्यक्तियाँ थीं:
• उच्च-आयामी विद्युत चुम्बकीय अंक और कंपन आवृत्तियाँ
• 7D पक्षी-प्रवण क्षेत्र के आयामी परिवर्तन। ये परिवर्तन 5D-6D नारंगी प्रकाश से जगमगाते गहरे समुद्र के जीव-प्रवण मानवाकार क्षेत्र से होकर गुजरे, जो 3D गहरे समुद्र द्वारा छिपा हुआ था। इस प्रकार, जलते हुए जलमग्न की अवधारणा में निम्नलिखित के बारे में जानकारी निहित हो सकती है:
• आयामों के बीच परस्पर क्रिया
• विभिन्न लोकों में ऊर्जा के प्रवाह की प्रक्रियाएँ
• त्रिविमीय जगत को निर्देशित करने में उच्च-आयामी चेतना की भूमिका

भौतिक दुनिया

द विज़न डुप्लिकेटेड बर्ड: गार्जियन ऑफ हार्मनी
टील्के राज्य ने एक अद्भुत पक्षी भेंट किया, जिसका नाम विज़न डुप्लिकेटेड रखा गया, जिसे डबल-प्यूपाइल्ड के नाम से भी जाना जाता है। ये दोनों नाम इसकी प्रत्येक आंख में मौजूद दो पुतलियों के कारण रखे गए हैं। मुर्गी जैसी आकृति और फीनिक्स जैसी चीख वाले इस असाधारण प्राणी में अपार शक्ति थी, जो बाघों और भेड़ियों जैसे जानवरों से लड़ने में सक्षम था और अक्सर उन्हें खदेड़ देता था या मार भी डालता था। अपने पंख गिराने के बाद भी, इसके नंगे पंख इसे सहजता से उड़ान भरने में सक्षम बनाते थे।

इसके अतिरिक्त, जब तक विज़न डुप्लिकेटेड मौजूद था, राक्षस, आपदाएँ और असामान्य घटनाएँ मनुष्यों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकती थीं। ये पक्षी टकहो कवक, जिनसेंग, अगरवुड, एम्बर और क्रिस्टलीकृत काले बबूल के शहद से बने पेस्ट खाते थे और मनुष्यों के पास रहना पसंद करते थे। वे एक दशक में कई बार मानव बस्तियों का दौरा करते थे, जिससे लोगों में उत्सुकता और श्रद्धा का भाव पैदा होता था।
अनुपस्थिति के समय, आम लोग उसकी आकृति की लकड़ी की मूर्तियाँ या कांसे की प्रतिमाएँ बनाकर दरवाजों और खिड़कियों पर रख देते थे ताकि राक्षसों, बुरी आत्माओं और दुष्ट व्यक्तियों को दूर रखा जा सके, जो मूर्तियों को महसूस करते ही सहज रूप से पीछे हट जाते थे। आज भी, इस प्राचीन प्रथा के कुछ अंश

बचे हुए हैं, क्योंकि घरों में आज भी चंद्र कैलेंडर के पहले दिन खिड़की के फ्रेम पर विजन डुप्लिकेटेड की लकड़ी की आकृतियाँ या कांसे के आभूषण लगाए जाते हैं। यद्यपि इस प्रथा की मूल भव्यता फीकी पड़ गई है, फिर भी यह एक पुरानी, अधिक विस्तृत परंपरा का अवशेष है।

टिप्पणी: टील्के नाम का मूल अर्थ संभवतः 'केवल केट' रहा होगा, जो मध्य साइबेरिया के येनिसेयन केट लोगों को संदर्भित करता है, जिन्होंने अपनी उच्च-आयामी चेतना के मूल से पुनर्संयोजन की उन्नत अवस्था प्राप्त कर ली थी। फीनिक्स जैसी चीख और जानवरों, राक्षसों और नकारात्मक विद्युत चुम्बकीय कणों को दूर भगाने की जन्मजात क्षमता वाला विज़न डुप्लिकेटेड पक्षी संभवतः एक चेतन प्राणी था। इसका त्रि-आयामी पक्षी रूप संभवतः 7D पक्षी-सिर वाले मानवों का एक विकृत रूप था, जिन्होंने बाद में उच्च आयामों से पुनर्संयोजन किया और विभिन्न लोकों के बीच स्थानांतरण करने की क्षमता पुनः प्राप्त कर ली। ये प्राणी संभवतः पृथ्वी के भीतर और आसपास के उच्च-आयामी निरंतरता, अगरथा के संरक्षक के रूप में कार्य करते थे।

विज़न डुप्लिकेटेड की मूर्तियाँ येनिसेयन केट लोगों और उनके उत्तरी अमेरिकी ना-डेने रिश्तेदारों के बीच अच्छी तरह से संरक्षित सभ्यतागत विशेषताओं को दर्शाती हैं। यह निम्नलिखित में परिलक्षित होता है:
• ट्लिंगिट संस्कृति की विविध टोटेम नक्काशी

• [illegible]

II - 4

[illegible]

III - 8

ऋषि शासक स्टोन्स और तारा वृषभ

दो आंखों वाले ऋषि शासक स्टून्स के शासनकाल के दस वर्ष बाद, पांच बुजुर्ग व्यक्ति राजधानी पहुंचे, जहां ऋषि शासक स्टून्स ने उन्हें शिक्षकों के रूप में बहुत सम्मान दिया। उनकी बातचीत अप्रत्याशित रूप से स्वर्ग और पृथ्वी की उत्पत्ति और इस वास्तविकता में उनके पहले भौतिक रूप में प्रकट होने के विषय पर केंद्रित हो गई। जब स्टून्स ने सरीसृप-कीट रूपांतरक वोरल के पक्ष में ऋषि शासक का पद त्याग दिया, तब तक वे पांचों बुजुर्ग व्यक्ति बिना किसी निशान के गायब हो गए। उनके सम्मान में, स्टून्स ने पंच तारा मंदिर का निर्माण किया। इसकी स्थापना की रात ही, आकाश में पांच विशाल तारे प्रकट हुए, मानो वे ब्रह्मांडीय रूप से जुड़े हुए हों, जबकि सूर्य और चंद्रमा आकाश में एक साथ विद्यमान थे, और एक हल्की हवा चलने लगी।

लेरात्सबीन का गूढ़ रहस्योद्घाटन
लेरात्सबीन राज्य से एक दूत तीर्थयात्रा पर आया, हालांकि भाषा की बाधाओं के कारण सीधा संवाद असंभव था। अन्य उपस्थित दूतों के सहयोग से किए गए कई अनुवादों के माध्यम से ही बातचीत संभव हो पाई।

जब ऋषि शासक स्टून्स ने ब्रह्मांड से संबंधित गूढ़ और भविष्यवाणियों के बारे में पूछताछ की, तो लेरात्सबीन दूत ने उत्तर दिया:
उत्तरी ध्रुव के पार तेह्योंग सागर स्थित है, जिसे उत्थान सागर के नाम से भी जाना जाता है, जहाँ पानी में एक छिपा हुआ सूर्य उबलता रहता है। वहाँ एक संकर प्राणी - आधा जलीय सरीसृप, आधा मछली - अजगर की एक प्रजाति निवास करती है, जो अपने असली रूप को धुंधली गहराइयों में छुपाए रखती है। जब वह साँस छोड़ता है, तो अस्तित्व के सबसे दूरस्थ कोने भी अंधेरे में डूब जाते हैं। जब वह अपने पंख फड़फड़ाता है, तो पंच पर्वत काँप उठते हैं।
युगों बाद, एक विशाल भूवैज्ञानिक उथल-पुथल ने दुनिया को नया रूप दिया, जिससे कई महासागर और पर्वत विस्थापित हो गए। वह भूमि जहाँ कभी यह अजगर जैसा प्राणी और अन्य विशालकाय मछलियाँ फल-फूल रही थीं, शुष्क भूभाग में परिवर्तित हो गई। फिर भी, एक विशाल लाल रोक पक्षी ने इन प्राणियों को पूर्ण विनाश से बचाया, क्योंकि वे संकरी होती झीलों और नदियों में संघर्ष कर रहे थे।
जीवन बचाने के लिए बेताब उस जलीय सरीसृप ने बारिश की भीख मांगते हुए आकाश की ओर पूंछ उठाई, जबकि अन्य विशालकाय मछलियाँ पक्षी के विशाल पंखों के बीच से छनकर आ रही सूर्य की रोशनी को सोख रही थीं। इसके जवाब में, आकाश ग्रहण की तरह काला हो गया और तारे तथा बारिश एक साथ बरसने लगे।

ऋषि शासक ओंगेरेव के शासनकाल में, उनकी बुद्धिमत्ता ने शासन व्यवस्था को परिपूर्ण बनाया, जिससे व्यवस्था और स्थिरता सुनिश्चित हुई। तेह्योंग सागर निर्मल हो गया, उसकी धाराएँ शांत हो गईं। हालाँकि, जब ऋषि शासक स्टून के पुत्र, स्टाओंग गेरकुहवाईन, अस्थायी रूप से सिंहासन पर बैठे, तो दुनिया में अराजकता फैल गई। जलीय सरीसृप आकाश में विचरण करने लगा, जिससे तीन महान नदियों का जल उफान पर आ गया, भूमि जलमग्न हो गई और समुद्र में विलीन हो गई, जिससे पृथ्वी का कुछ हिस्सा जलमग्न हो गया। इन तीन नदियों को आकाश नदी, मध्य नदी और पृथ्वी नदी के नाम से जाना जाता है।

टिप्पणी
जलीय सरीसृप और मछली के बीच की संकर प्रजाति संभवतः एक जलीय प्रोटोरसॉर थी, जो डिनोसेफालोसॉरस ओरिएंटलिस के समान थी। यह प्राणी संभवतः 7D से परे सरीसृप और डायनासोर के सिर वाले मानवों का आंशिक प्रकटीकरण रहा होगा। इन प्राणियों ने गहरे समुद्र के जीवों के सिर वाले मानवों के 5D-6D क्षेत्र को अपनाया, जिन्होंने बदले में 3D गहरे समुद्र का उपयोग छलावरण के रूप में किया।
संकर सरीसृप प्रजातियों और विशालकाय पक्षी दोनों का युगों के भूवैज्ञानिक उथल-पुथल के बावजूद अस्तित्व में बने रहना यह दर्शाता है कि वे रैखिक समय की सीमाओं से परे थे - जो उच्च-आयामी संस्थाओं की एक विशिष्ट विशेषता है। त्रि-आयामी धारणा के लिए, समय रैखिक और अपरिवर्तनीय है।

हालांकि, 5D-6D लोकों के प्राणी समय को चक्रीय या प्रतिवर्ती रूप में अनुभव करते हैं - भले ही उम्र बढ़ने की प्रक्रियाओं में यह पूरी तरह से अप्रभावी न हो।
• मछली-सरीसृप संकर संभवतः 7D से परे सरीसृप का प्रकटीकरण था।
5D–6D क्षेत्र में।
• ये विशालकाय मछलियाँ संभवतः सजीव, गैर-मानवीय संरक्षक रही होंगी।
5 डी-6 डी गहरे समुद्र का क्षेत्र।
• वह विशालकाय पक्षी एक पक्षी-सिर वाला प्राणी हो सकता था जो सहायता कर रहा हो।
उनका उत्थान।

ग्रहण जैसी दिखने वाली वह घटना, जिसमें तारे और बारिश एक साथ बरस रहे थे, संभवतः पक्षी के सिर वाले प्राणियों द्वारा आयामी बदलाव के माध्यम से अपने 7D क्षेत्र को 5D-6D क्षेत्र में आंशिक रूप से प्रकट करने का एक उदाहरण था।
कुहेरूल्स वोराओंगल राज्य: पितृभक्ति को बढ़ावा देने वाली भूमि क्रिर्त्स क्षेत्र से 8,300 किमी पश्चिम में, जिसे अग्र क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है - जो लोएस पठार के पूर्वी किनारों से लेकर पीली सागर की खाड़ी और दक्षिणी मंचूरिया से घिरे तटीय क्षेत्रों तक फैला हुआ है (37° 42′ 0″ N, 112° 24′ 0″ E और 41° 6′ 0″ N, 122° 18′ 0″ E के बीच) - कुआहेरूल्स

वोराओंगल नामक राज्य विद्यमान था, जिसे पितृभक्ति संवर्धन राज्य के रूप में भी जाना जाता था।
कुआहेरूल्स वोराओंगल के निवासियों की जीवन अवधि 300 वर्ष तक होती थी। वे कोगोन घास से बुने हुए वस्त्र पहनते थे और मरने के बाद उन्हें जंगल में दफनाया जाता था। मानव निर्मित कब्रें बनाने या पेड़ लगाने के बजाय, पक्षियों के झुंड अपनी चोंच में मिट्टी भरकर टीले बनाते थे, जबकि स्थलीय जानवर गुफाएँ खोदकर उन्हें उनके विश्राम स्थल के रूप में इस्तेमाल करते थे।

एक अनोखी अंत्येष्टि प्रथा प्रचलित थी - मृतक की शक्ल में लकड़ी की मानव प्रतिमाएँ बनाई जाती थीं और उन्हें जीवित मानकर पूजा जाता था, जिससे समुदाय में उनकी उपस्थिति निरंतर बनी रहती थी। कुआहेरूल्स वोराओंगल की संस्कृति में वीरता को बहुत महत्व दिया जाता था और यह माना जाता था कि इसी गुण के कारण वे धातु और पत्थर खा सकते थे। उनकी जीभ के सिरे चौकोर आकार के और जड़ें पतली और छोटी होती थीं, जो इस असाधारण कार्य के लिए विशिष्ट रूप से अनुकूलित थीं।

टिप्पणी
दफ़नाने में पक्षियों और जानवरों का उपयोग वैकल्पिक सहजीवन तकनीक के एक गुप्त रूप का प्रतीक हो सकता है। कुआहेरूल्स वोराओंगल और जानवरों के बीच डीएनए की कंपन आवृत्ति अनुक्रमण उच्च आयामों से एक साझा संबंध के माध्यम

से जुड़ा हो सकता है, जिससे सहजीवी सहयोग के लिए आंशिक डीएनए सिंक्रनाइज़ेशन संभव हो पाता है। लकड़ी की प्रतिमाएँ तराशने की प्रथा लकड़ी के रोग के साथ पूर्वजों के संघर्ष का एक सांकेतिक संदर्भ हो सकती है
- यह एक ऐसी स्थिति है जो निम्न कारणों से होती है:
• सूक्ष्मजीव और पाँचवें आयाम द्वारा नियंत्रित वृक्ष की जड़ें
• डीएनए कंपन अनुक्रम में परिवर्तन
• उच्च आवृत्ति वाली ध्वनि तरंगों के माध्यम से उत्प्रेरण

इस स्थिति पर विजय प्राप्त करने से यह संकेत मिलता है कि कुआहेरूल्स वोराओंगल लोग होमो सबटेरेनियस के सामयिक, मिशन-आधारित प्रकटीकरण रहे होंगे, जो पृथ्वी की भूमिगत परतों में छिपी हुई एक 5D प्रजाति थी। वैकल्पिक रूप से, उन्होंने होमो सबटेरेनियस के साथ संबंध बनाए रखे होंगे, और उनकी चेतना के मूल से उन्नत आयामी पुनर्संबंधों से लाभान्वित हुए होंगे।
वीरता का प्रोत्साहन संभवतः मानसिक दमन, संज्ञानात्मक क्षमताओं के पतन और उच्च-आयामी चेतना से उनके संबंध को तोड़ने के प्रयासों से बचाव का एक तंत्र था। वहीं, चौकोर और पतली जीभ ने शायद उन्हें भाषण के एक रूप के रूप में ध्वनिक होलोग्राम उत्पन्न करने में सक्षम बनाया और मन की आंतरिक आवाजों को वश में करने के लिए एक जैविक अनुकूलन के रूप में कार्य किया। इससे प्रागैतिहासिक स्कैंडिनेविया, एंडीज और ऑस्ट्रेलिया की तरह लिखित प्रणाली के अभाव का संकेत मिलता है। उनकी संशोधित भाषाओं का उपयोग कंपन-आधारित ध्वनि संचार उत्पन्न करने के लिए किया जाता रहा होगा, जिससे समय के

साथ वाणी के विकृत होने से बचा जा सके। हालांकि, बाद के युगों में, इस अवधारणा की गलत व्याख्या की गई होगी। विद्वानों ने इस विचार को विकृत कर दिया होगा, जिससे चेतना के मूल से पुनः संबंध स्थापित करने से रोकने और अराजकता, भय, दमन तथा अनियंत्रित 'अहंकार की आवाजों' से प्रेरित आवेगों को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन की गई मनोवैज्ञानिक युद्ध रणनीतियों का उदय हुआ होगा, जिससे अंततः उनकी प्रथाओं का मूल उद्देश्य धूमिल हो गया।

कुहेरूल्स वोराओंगल की ताकत और क्षमताएं
कुहेरूल्स वोराओंगल जनजाति के पास असाधारण शारीरिक क्षमताएं थीं। वे अपने नंगे हाथों से 1.5 टन तक भारी वस्तुओं को पकड़ सकते थे, बिना किसी प्रयास के जमीन को काटकर भूमिगत झरनों तक पहुंच सकते थे, और केवल अपनी उंगलियों से पानी को बाहर निकाल सकते थे।
वे पक्षी और स्थलीय दोनों प्रकार के जीवों को वश में करने में भी अत्यंत कुशल थे और उनमें अजगर जैसे जलीय सरीसृपों को पकड़ने के लिए समुद्र की गहराई में गोता लगाने की अद्भुत क्षमता थी। इन सरीसृपों को फिर गोलाकार बाड़ों में रखा और पाला-पोसा जाता था, जहाँ वे कुआहेरूल्स वोराओंगल के पवित्र अनुष्ठानों के अभिन्न अंग के रूप में जीवित रहते थे, जो ब्रह्मांड का सम्मान करते थे।

टिप्पणी
कुआहेरूल्स वोराओंगल की अत्यधिक भारी वस्तुओं को उठाने, अपने नंगे हाथों से जमीन खोदने और गहरे समुद्र के सरीसृप प्राणियों को वश में करने और

पालतू बनाने की क्षमता से यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि उन्होंने आकार बदलने और आयाम बदलने में महारत हासिल कर ली थी, जो उच्च आयामों के साथ गहरे संबंधों का संकेत देता है।
जर्मेराव ड्रैगन और ल्योम के छिपे हुए जलमार्ग
दक्षिण के ल्योम राज्य में एक गुफा थी जिसमें एक छिपा हुआ जलस्रोत था, जो समुद्र तल की विशाल जलमग्न पर्वतीय प्रणालियों तक फैला हुआ था। इस आंशिक रूप से समुद्री जल से भरी भूमिगत नहर में जर्मेराव ड्रैगन और जर्मेराव मछली निवास करते थे, जो समय-समय पर गुफा के स्थलीय भागों में स्थित झीलों के पास अपने कंकाल त्याग देते थे - ये क्षेत्र जलमुक्त थे।

जर्मेराव मछली और जर्मेराव ड्रैगन गुफाओं के एक ही उप-भाग में सहवास करते थे। एक समय, दक्षिणी ल्योम राज्य ने एक नर और एक मादा जर्मेराव ड्रैगन भेंट के रूप में दिए, जिसके परिणामस्वरूप ड्रैगन के पालन-पोषण के लिए समर्पित एक आधिकारिक सरकारी पद की स्थापना हुई।
अभिलेखों से पता चलता है कि ऋषि शासक वोरल, जो सरीसृप-कीट रूपान्तरित थे, के शासनकाल तक, जब नदी के तल को गहरा करने की बाढ़ नियंत्रण परियोजना शुरू की गई थी, तब तक वोरल स्वयं जर्मेराव ड्रैगन की सवारी करते थे। जब जनजातीय गठबंधनों के बीच क्षेत्रीय संतुलन लगभग स्थिर हो गया, तो जर्मेराव ड्रैगन को न्येओब्स नदी (जिसका अर्थ है मोड़ की नदी) और पीली नदी के संगम पर छोड़ दिया गया।

टिप्पणी
लियोम द्वारा जर्मेराव ड्रैगन की भेंट से संकेत मिलता है कि उनके बीच उन्नत ऋषि समूह मौजूद थे। इन ऋषियों का संभवतः 5D-6D क्षेत्र में निवास करने वाले सरीसृप और डायनासोर के सिर वाले प्राणियों तथा गहरे समुद्र के मानवाकार प्राणियों के आंशिक प्रकटीकरणों से संबंध था। गहरे समुद्र के प्राणियों के सिर वाले मानवाकार प्राणी आयामों के बीच एक सेतु का काम करते रहे होंगे, जिससे ऐसे प्राणी 3D क्षेत्र में आंशिक रूप से प्रकट हो सके। लियोम भूमि में स्थित भूमिगत गुफा, जो नदी प्रणालियों या महासागर से जुड़ी हो सकती है, ऐसे 5D-6D क्षेत्र के लिए एक 3D आवरण का कार्य करती है। सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

बाढ़ नियंत्रण का कार्य और विशालकाय मछली कूलन की विरासत

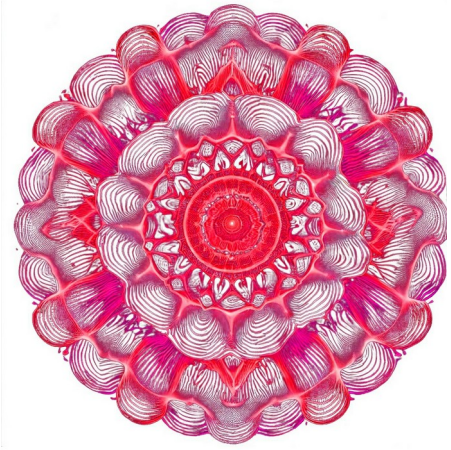

ऋषि शासक ओंगेरेव ने विशालकाय मछली कूनल को बाढ़ नियंत्रण का कार्य सौंपा। हालाँकि, नौ वर्षों के असफल प्रयासों के बाद, अंततः उसके तरीके

अप्रभावी साबित हुए। हताशा में, कूनल ने पंख रसातल की झील में डूबकर आत्महत्या कर ली, जहाँ वह एक काली मछली में रूपांतरित हो गया।
समय बीतने के साथ, कूनल को कभी-कभी अपनी मूंछें उठाते और अपने शल्क लहराते हुए, विशाल लहरों के बीच तैरते हुए देखा जाता था। इसे देखने वाले इसे नदी की आत्मा मानकर पूजते थे, क्योंकि फेदर एबिस झील नदियों और महासागरों से जुड़ी हुई थी। कूनल के सम्मान में, तटीय निवासियों ने माउंट फेदर पर कूनल मंदिर का निर्माण किया, जहाँ वे मौसमी अनुष्ठान करते थे। वहाँ, काली मछली के अलावा, वे अक्सर झील से जलीय सरीसृपों को उछलते हुए देखते थे, जो उन्हें आश्चर्यचकित और विस्मय में डाल देते थे।

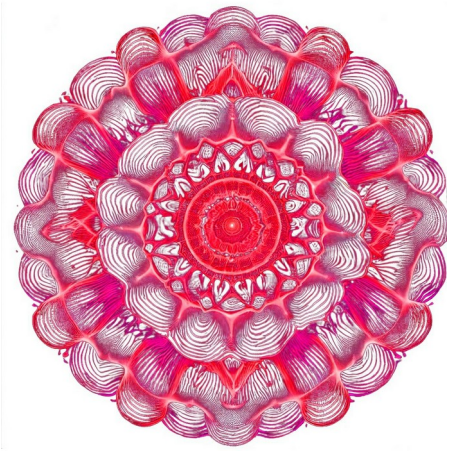

जब ऋषि शासक ओंगेरेव के उत्तराधिकारी, ऋषि शासक स्टून्स ने सत्ता संभाली, तो उन्होंने बाढ़ नियंत्रण परियोजना में अपना उत्तराधिकारी कूनल के पुत्र, सरीसृप-कीट रूपान्तर वोरल को नियुक्त किया। इसके अतिरिक्त, वोरल को पहाड़ों का मानचित्रण करने का कार्य सौंपा गया। हालाँकि, अपने प्रयासों के बावजूद, वह माउंट फेदर तक कभी नहीं पहुँच सका। रास्ते में, उसने विशाल नरम खोल वाले कछुओं और मगरमच्छों को अस्थायी पुलों के रूप में उपयोग करके बड़ी नदियों को पार किया, ड्रैगन देवताओं पर सवार होकर ऊँचे पहाड़ों पर

चढ़ाई की, और बड़े जनजातीय गठबंधनों के सभी ज्ञात क्षेत्रों की यात्रा की। यह स्टून्स और उनके पिता, कूनल, जो काली मछली में रूपांतरित हो गए थे, दोनों की ऋषिता के प्रति सम्मान और उनसे जुड़ाव का उनका तरीका था।

वोराल, सरीसृप-कीट रूपांतरक और नौ कड़ाही
जब सरीसृप-कीट रूपांतरक वोआरल ने नौ कड़ाही बनाईं, तो उसने पाँच को पुरुष तत्व और चार को स्त्री तत्व से जोड़ा, जो कि भौतिक जगत को आकार देने वाली मूलभूत शक्तियों - विश्व-निर्माण के भौतिक तंत्रों के घटनात्मक नियमों के अनुरूप था।

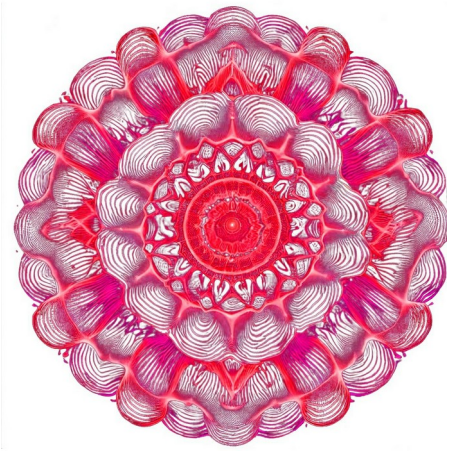

वास्तविकता। उन्होंने शिल्पकारों को निर्देश दिया कि वे स्त्री तत्व वाले बर्तनों को स्त्री सार से युक्त सोने से बनाएं, जबकि पुरुष तत्व वाले बर्तनों को पुरुष तत्व युक्त सोने से बनाएं। ये बर्तन निरंतर जल से भरे रहते थे, जो शुभ और अशुभ संकेतों के ब्रह्मांडीय संकेतक के रूप में कार्य करते थे।
वोर्रल जनजातीय गठबंधन के अंतिम नेता (जिसके संस्थापक सरीसृप-कीट रूपांतरित वोर्रल थे) क्रैट द टाइरैनिक के शासनकाल के दौरान, कड़ाही में

पानी अप्रत्याशित रूप से उबलने और उफान मारने लगा। बाद में, जब टीव का अर्ध-जनजातीय गठबंधन, और फिर उसका सामंती स्वरूप, टूटने लगा, तो सभी नौ कड़ाही हिंसक रूप से कांपने लगीं - ये दोनों घटनाएं आने वाले विनाश के अपशकुन थे। वोर्रल से प्रेरित होकर, छोटे ऋषियों ने उनकी विधियों का अनुसरण किया और अपनी पीढ़ियों के लिए अपनी-अपनी कड़ाही बनाईं।

महान बाढ़ नियंत्रण परियोजना
वोआरल के बाढ़ नियंत्रण प्रयास अत्यंत सावधानीपूर्वक और व्यापक थे, जिनमें नदी तल को गहरा करना, नदी का मार्ग बदलना और पहाड़ों को समतल करना जैसी पद्धतियाँ शामिल थीं। ड्रैगन अपनी पूंछ हिलाकर नदी के चैनलों की खुदाई करते थे, जबकि एक विशाल काला कछुआ खोदी गई मिट्टी को ढोता था।

कीचड़ और गाद से लथपथ, वोराल और ड्रैगन के पीछे-पीछे चल रहा था। काला कछुआ, असल में, नदी की आत्मा का संदेशवाहक था। इसकी ठुड्डी के निचले हिस्से पर प्राचीन चित्रलिपि में उत्कीर्ण लेख थे, जिनमें "नौ क्षेत्रों का भूभाग" (ज्ञात जनजातीय गठबंधन क्षेत्रों का) वाक्यांश अभी भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

वोराल जहाँ-जहाँ खुदाई या ड्रिलिंग करता था, वहाँ-वहाँ काले रंग की मिट्टी के टीले बनाकर उन स्थानों को चिह्नित करता था। उसका काला कछुआ, जो उसके पीछे-पीछे चलता था, अपने निचले जबड़े से उन स्थानों पर निशान छोड़ता जाता था। सीमाओं को चिह्नित करने के लिए टीले बनाने की समकालीन प्रथा को इसी प्राचीन रीति-रिवाज का अवशेष माना जाता है।

टिप्पणी
कड़ाहे की ढलाई में संख्या 9 को वास्तविकता की कंपन संरचना के अनुरूप ढालने के लिए शामिल किया गया था। मानव सृजन (मानसिक या शारीरिक) को इस कंपन संरचना के साथ सामंजस्य स्थापित करके, वास्तविकता स्वयं को सकारात्मक विकास की ओर निर्देशित करेगी और सद्गुणों को लंबे समय तक संरक्षित रखते हुए पतन का प्रतिरोध करेगी। संख्या 9 को सृजन संख्या के रूप में जाना जाता है, जो सकारात्मक दिशा, प्रजनन और संसार निर्माण का प्रतीक है। ये कड़ाहे मात्र प्रतीक नहीं थे, बल्कि ऋषि अभिजात वर्ग के लिए डीएनए के भीतर अंक अनुक्रमण से जुड़ने और 7D क्षेत्र में चेतना के मूल तक पहुँचने के लिए महत्वपूर्ण उपकरण थे।

वोआरल द्वारा बाढ़ नियंत्रण संबंधी ज्ञान की अथक खोज - यहाँ तक कि 'पहाड़ों को समतल होने तक समतल करने' की हद तक - को इस प्रकार समझा जा सकता है:
• यह खोए हुए गूढ़ ज्ञान को पुनः प्राप्त करने की उनकी खोज का एक रूपक है।
• क्रॉस-डायमेंशनल एक्टिवेशन तकनीकों की खोज
• वैश्विक बाढ़ के बाद के अन्य शरणार्थियों के बीच सहयोगी खोजने की यात्रा सभ्यताओं
बाढ़ का यह आवर्ती युग संभवतः महाबाढ़ के बाद का काल रहा होगा, जो एक बड़े भूकंप के बाद आने वाले झटकों के समान था, साथ ही यह एक दूसरा, सामयिक बाढ़ का युग था जिसके लिए व्यापक अनुकूलन की आवश्यकता थी।

वोराल और सौर देवता ब्रू ओंग्राये के साथ भूमिगत मुठभेड़
सरीसृप-कीट रूपांतरित प्राणी वोआरल ने माउंट ड्रैगन गेट को खोदकर लगभग 20 किलोमीटर गहरी एक गुफा तक पहुँच गया। अँधेरा इतना घना था कि आगे बढ़ना लगभग असंभव हो गया। आगे बढ़ने के लिए वोआरल ने एक मशाल ले रखी थी और वह सावधानीपूर्वक आगे बढ़ रहा था।
गुफा के गहरे भीतर, अचानक एक सूअर जैसा राक्षस प्रकट हुआ, जिसके मुँह में एक चमकदार मोती था, जिसकी रोशनी मोमबत्ती की लौ जैसी लग रही थी। उसके साथ एक नीले रंग का कुत्ता भी था, जो लगातार भौंकता हुआ आगे दौड़ रहा था। जैसे- जैसे वोआरल 4 किलोमीटर और अंदर गया, उसकी अंधेरे और उजाले में अंतर करने की क्षमता धीरे-धीरे कम होती गई। फिर, अचानक, आगे एक नई चमक दिखाई दी, जिससे पता चला कि उसने पहले जो सूअर और कुत्ता देखा था, वे वास्तव में काले वस्त्र पहने हुए मानवाकार आकृतियाँ थीं।

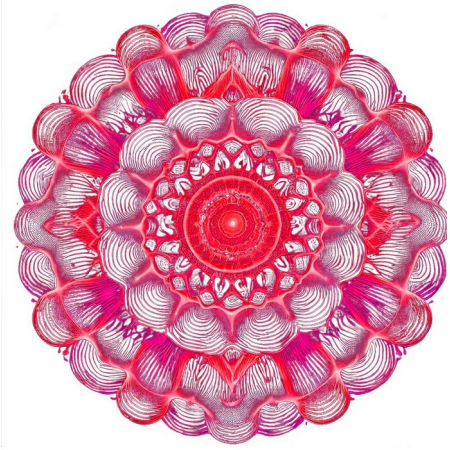

अंदर जाकर वोआरल का सामना एक अन्य देवता से हुआ, जो मानव रूपी आकृति थी, जिसका चेहरा मनुष्य जैसा था लेकिन शरीर साँप का था। वोआरल ने देवता के पास जाकर उनसे बातचीत शुरू की, जिसके बाद साँप के शरीर वाली आकृति ने आठ त्रिग्रामों का एक चित्र दिखाया — ये प्रतीकात्मक अंक इकाइयाँ स्कैपुलीमैंसी और पायरोमेंसी से ली गई थीं और परिवर्तन की पुस्तक के मूल रूप थीं — और फिर उसे एक धातु की पट्टिका पर अंकित कर दिया।
सर्प के आकार वाले देवता के दोनों ओर आठ अन्य मानवरूपी देवता सेवा में खड़े थे। तब वोआरल ने पूछा,
क्या आप सर्वव्यापी पुष्पन, नकुवाहेरा सोंगल के दिव्य पुत्र हैं? हलचल?’
सर्प के स्वरूप वाले देवता ने उत्तर दिया,
‘नकुवाहेरा सोंगल नौ नदियों की देवी हैं जिन्होंने
मुझे जन्म दिया।'
फिर उसने एक जेड की पर्ची निकाली और वोआरल को भेंट की। 20.4 सेंटीमीटर लंबी यह पर्ची बारह समय-मापन इकाइयों के साथ संरेखित थी, जिनमें से प्रत्येक दो घंटे की अवधि का प्रतिनिधित्व करती थी। यह उपकरण आकाश और पृथ्वी को मापने के वोआरल के कार्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त था।

जेड की पर्ची स्वीकार करते हुए, वोआरल ने इसका उपयोग स्वयं को प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप ढालने के लिए किया। जिस सर्प-शरीर वाले देवता से उसका सामना हुआ, वह ब्रू ओंग्राये थे, जो एक ऋषि शासक थे और वोआरल के समय से लगभग 1100 वर्ष पूर्व में रहते थे।

टिप्पणी
सूअर जैसे दिखने वाला राक्षस संभवतः उड़ने वाले सिर वाला किर्रेराकमटेरो था, जो त्रिआयामी होमो सेपियन्स और पंचआयामी होमो सबटेरेनियस जगत के बीच निवास करने वाला एक कटा हुआ मानव सिर वाला प्राणी था। वहीं, नीले रंग का कुत्ता संभवतः 7 आयामी से परे कोयोट प्राणियों का आंशिक प्रकटीकरण था।

वोआरल और ब्रू ओंग्राये के बीच हुई मुलाकात से यह संकेत मिलता है कि ब्रू ओंग्राये एक उन्नत प्राणी थे, जो उच्च आयामों में निवास करने में सक्षम थे। हालांकि, उन्होंने ज्ञान का प्रसार करने के लिए निम्न त्रिआयामी क्षेत्र में एक ऋषि शासक के रूप में प्रकट होना चुना, जहां अपना मिशन पूरा करने के बाद वे स्वाभाविक रूप से उच्च आयामों में लौट गए।

सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

केरेनल लेरेक और केहेरेट्स का दिव्य जन्म

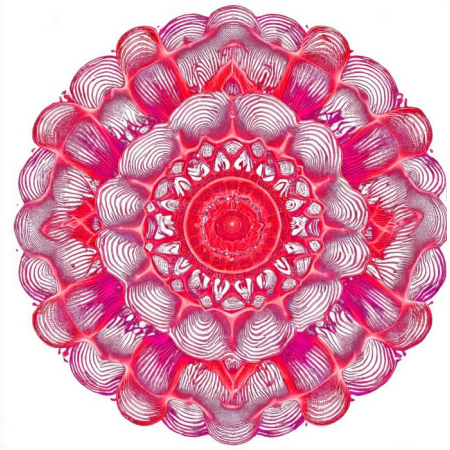

जब स्टाओंग जनजातीय गठबंधन आकार ले रहा था, तब केरेनल लेरेक नामक एक देवी जंगल में टहल रही थीं, तभी उन्होंने एक काले पक्षी को जमीन पर अंडा देते देखा। पास जाकर उन्होंने देखा कि अंडे पर रंगीन अक्षरों में 'आठ सौ' लिखा हुआ था। उन्होंने अंडे को सावधानीपूर्वक एक जेड की टोकरी में रखा और उसे

एक बड़े लाल तौलिये से ढक दिया। उसी रात, केरेनल लेरेक ने एक सपना देखा जिसमें दिव्य माँ, जो 3D भौतिक वास्तविकता से परे विद्यमान सृजनात्मक शक्ति हैं, उनसे बोलीं:
यदि तुम इस अंडे को अपने सीने से लगाकर रखोगी, तो तुम एक दिव्य संतान को जन्म दोगी।
वह पुत्र जो सिंहासन का उत्तराधिकारी बनेगा।
अपने सपने से मिले मार्गदर्शन का पालन करते हुए, केरेनल लेरेक ने अंडे को अपनी छाती के पास रखा और एक साल के भीतर वह गर्भवती हो गई। चौदह महीने की गर्भावस्था के बाद, उसने केहेरेट्स को जन्म दिया, जो आगे चलकर स्टाओंग जनजातीय संघ के मुखिया के रूप में सिंहासन पर आसीन हुआ।

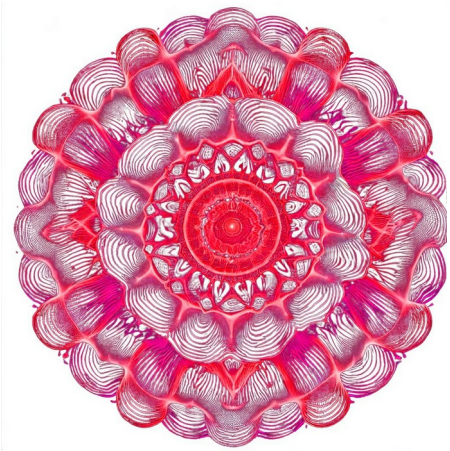

(क्रा-दाई-होंग-मिएन पुनर्जागरण, जोमोन-ऐनुरिक के साथ कनिष्ठ साझेदारी में) ने आठ सौ वर्षों तक पद संभाला, जो काले पक्षी के अंडे पर अंकित संदेश को प्रतिबिंबित करता है। सूखे के दौर का सामना करने के बावजूद, केहेरेत परिवार की आने वाली पीढ़ियाँ फली-फूलीं और समृद्धि और खुशहाली से भरे राज्यों में रहीं।

टिप्पणी
• केरेनल लेरेक का अंडे के माध्यम से निष्कलंक गर्भाधान एक प्रतीक है चेतना के मूल से उसका गहरा संबंध और स्वप्नलोक जैसे थोड़े निचले लोकों में प्रकट होने वाले पक्षी-सिर वाले मानवों से उसका जुड़ाव।
• काले पक्षी का अंडा उच्च आवृत्ति के स्थानांतरण का प्रतिनिधित्व करता है
कंपनशील अंक और साथ ही दिव्य ऊर्जा का एक सांकेतिक संदेश जो त्रि-आयामी दुनिया में प्रकट होने में सक्षम है। उनका पुत्र, केहेरेट्स, इस ब्रह्मांडीय ऊर्जा के भौतिक शासक में विलय का प्रतीक था, जो नेतृत्व और ज्ञान की अटूट विरासत को कायम रखता है।

श्रीये-मास्टर लैन: द इटरनल म्यूज़िशियन

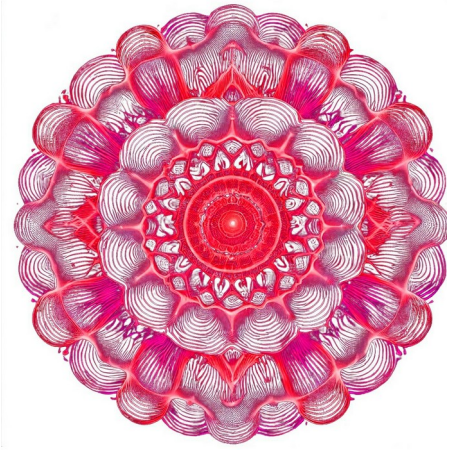

श्री-मास्टर लैन ने स्टाओंग दरबार में दरबारी संगीतकार के रूप में सेवा की। आधिकारिक दरबारी संगीतकार पद की स्थापना के बाद से, उनके कुल को यह भूमिका सौंपी गई थी, जो अनगिनत पीढ़ियों से चली आ रही थी। जब श्री-मास्टर लैन ने पदभार संभाला, तब वे वास्तविकता की द्वैतता प्रणाली पर अपनी महारत के साथ-साथ ब्रह्मांडीय घटनाओं और प्रतीकात्मक अंक प्रणाली (ब्रह्मांड से संदेशों को एन्क्रिप्ट करने की एक विधि) के माध्यम से भविष्यवाणी करने में अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध थे। उनका अभ्यास स्कैपुलीमैंसी शैली की अंक कैप्चरिंग से गहराई से जुड़ा हुआ था, जिसका उपयोग वे अपनी संगीत रचनाओं की कंपन आवृत्तियों के माध्यम से वास्तविकता के प्रकटीकरण को निर्देशित करने के लिए करते थे। वे एक रहस्यमय और अथाह व्यक्तित्व बने रहे, जिनके जीवन और स्वभाव की ऐतिहासिक अभिलेखों में केवल अस्पष्ट झलकियाँ ही मिलती हैं। येलो थंडर ट्राइबल यूनियन के ऋषि शासक, कुहार वोआन (रथ शाफ्ट) के शासनकाल के दौरान, श्री-मास्टर लैन को जनजातीय गठबंधन के भीतर संगीत से संबंधित सभी पदों की देखरेख के लिए नियुक्त किया गया था। हालांकि, जब तक स्टाओंग जनजाति ने प्रसिद्धि प्राप्त की - जोमोन-ऐनुरिक और कुछ हद तक ऑस्ट्रोनेशियन और इंडो-यूरोपीय समूहों के साथ एक कनिष्ठ साझेदारी में क्रा-दाई-होंग-मिएन पुनर्जागरण के स्वर्ण युग का प्रतीक था - लगभग एक सहस्राब्दी बाद, श्रीये-मास्टर लैन ने पहले ही युवा मैदानी

हिमालयी क्षेत्रों में पिछले सभी आठ ऋषि शासकों के नेतृत्व में रचित संगीत का शोध और उसमें महारत हासिल कर ली थी। कुहार वोआन के शासनकाल के दौरान भी, श्रीये-मास्टर लैन कई सौ वर्ष के हो चुके थे, फिर भी उनकी अंतर्दृष्टि अद्वितीय बनी रही। उनके पास किसी भी जनजातीय गठबंधन के भाग्य की भविष्यवाणी करने की अद्भुत क्षमता थी - चाहे वह समृद्धि की ओर अग्रसर हो या पतन की ओर - केवल उसके क्षेत्र में उत्पन्न संगीत को सुनकर।

टिप्पणी
श्रीये-मास्टर लैन का जीवनकाल, जो एक हजार वर्षों से अधिक था, यह दर्शाता है कि उन्होंने कम से कम 7D में चेतना के मूल से पुनः जुड़ने की अपनी परीक्षा के माध्यम से 5D क्षेत्र में प्रवेश कर लिया था।

इससे उन्हें निम्नलिखित कार्य करने की सुविधा मिली:
• त्रिविमीय भौतिक पिंड पर रैखिक समय की सीमाओं को पार करना
• उसकी संवेदन क्षमता को बढ़ाएं, जिससे वह घटनाओं का पूर्वानुमान लगा सके। कंपन संवेदन
• उनके संगीत का उपयोग कंपन को प्रभावित करने और उसमें हेरफेर करने के एक उपकरण के रूप में करें।

वास्तविकता का मैट्रिक्स
उनकी सोनार जैसी संगीत रचनाएँ संभवतः विद्युत चुम्बकीय अंकों की गति का पता लगाने वाले तंत्र के रूप में कार्य करती थीं, जो कि गूढ़ बौद्ध धर्म में वर्णित सामूहिक कर्म जाल या छाप के समान है।

स्ट्रांग के साथ संबंध और रहस्यमय गुमशुद्धि
स्टॉंग के सत्ता में आने से ठीक पहले, वोएर्रल जनजातीय गठबंधन (जिसकी स्थापना सरीसृप-कीट रूपांतरित वोआरल ने की थी) के पतन के अंतिम वर्षों में, श्रीये-मास्टर लैन ने स्टॉंग के प्रति निष्ठा की शपथ ली और वोएर्रल गठबंधन से पलायन के बाद शरण मांगी। वह अपने साथ अपने सभी संगीत वाद्ययंत्र भी ले आया था।
स्टाओंग के अंतिम राजा, राजा ड्रूल (जो घोड़ों की देखभाल करने वाला था) के शासनकाल में, श्रीये-मास्टर लैन को दरबारी जेल में कैद कर दिया गया था और उन्हें मृत्युदंड दिया जाना था। उनकी कैद का मुख्य कारण राजा ड्रूल का कामुक सुखों में अत्यधिक लिप्त होना था, जिसके कारण राजा की दृष्टि में श्रीये-मास्टर लैन की सेवाएं निरर्थक हो गई थीं।

अपनी कैद के दौरान, श्रीये-मास्टर लैन ने पांच स्वरों वाले पेंटाटोनिक स्केल के भीतर तीन स्वरों E, G और F (सोलफेज: मी-सो-फा) पर आधारित कॉर्ड्स का उपयोग करते हुए असाधारण मधुरता की धुनें बजाईं। यह अलौकिक संगीत जेल की दीवारों में समा गया और अंततः वार्डन के कानों तक पहुंचा, जिसने इसकी सूचना राजा ड्रूल को दी। हालांकि, राजा ने अधीरता से इसे खारिज करते हुए कहा:
'यह तो बहुत पुराने, प्राचीन अतीत का संगीत है। यह मेरी पसंद के अनुरूप नहीं है।'

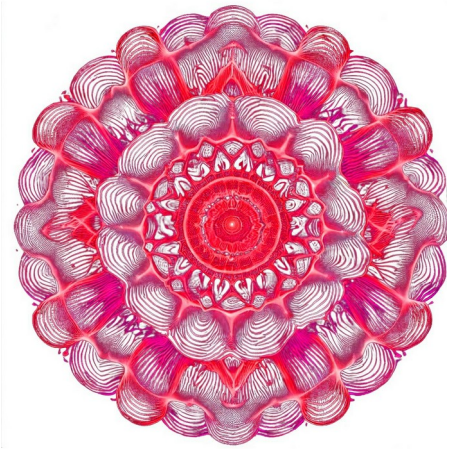

इस प्रकार, राजा ड्रूल ने श्रीये-मास्टर लैन को बेकार समझकर रिहा करने से इनकार कर दिया। इसके जवाब में, श्रीये-मास्टर लैन ने अपनी प्रस्तुति शैली बदल दी और राजा के रात्रिकालीन सुख और आनंद को बढ़ाने के लिए मनमोहक, आत्मा को मोहित करने वाली रचनाएँ बजानी शुरू कर दीं। इन रचनाओं से मोहित होकर, राजा ड्रूल ने मृत्युदंड रद्द कर दिया, जिसके तहत मूल रूप से श्रीये- मास्टर लैन को मृत्युदंड दिया गया था।
एक खोखले कांसे के स्तंभ के बाहरी हिस्से से बंधा हुआ, जिसके भीतर कोयले जल रहे थे।

जब टीव अर्ध-जनजातीय गठबंधन सत्ता में आया - जिसकी शुरुआत राजा ड्रूल पर विजय से हुई - तब कहा जाता है कि श्रीये-मास्टर लैन ने पेरोक नदी (पीली नदी की एक सहायक नदी) को पार किया, जिसके बाद वे गायब हो गए। कुछ लोगों का दावा है कि वे पेरोक नदी में डूब गए, जिसके कारण त्सीन और वोरात क्षेत्रों (निर्देशांक: क्रमशः 36° 5′ 16.8″ उत्तर, 111° 31′ 8.4″ पूर्व और 36° 5′ 50.28″ उत्तर, 114° 23′ 31.92″ पूर्व) के लोगों ने उनकी प्रतिमाओं के रूप में पत्थर और कांसे की मूर्तियां स्थापित कीं। पीढ़ियों से, इन समुदायों ने उनके सम्मान में मंदिरों का पुनर्निर्माण जारी रखा, भले ही सांस्कृतिक परंपराएं धीरे-धीरे क्षीण होती गईं।

टिप्पणी
श्रीये-मास्टर लैन के पेरोक नदी में डूबने की कथित घटना संभवतः उनके आयामी उत्थान के लिए एक प्रतीकात्मक आवरण थी।
नदी में उनका ‘गायब हो जाना’ वास्तव में यह था:
• आयामी परिवर्तन का एक सचेत कार्य
• उन उच्च आयामों की ओर वापसी जिनसे वह पहले जुड़ा हुआ था
• अगरथा के भूमिगत अंतर-आयामी क्षेत्र से होकर एक संभावित यात्रा सुरंगों
इस विधि के माध्यम से, उसने त्रिविमीय जगत में अपनी मृत्यु का नाटक किया, और अपने पीछे केवल एक किंवदंती छोड़ गया।

तीन लुप्त सभ्यताओं के माध्यम से गूढ़ संबंध

सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

टीव के मार्शल किंग मरल और बम्बलबी स्टैंडर्ड

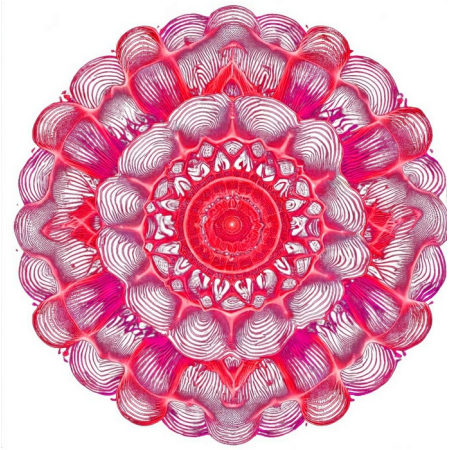

स्टांग के राजा ड्रूल के विरुद्ध अपने पूर्वी सैन्य अभियान के दौरान, टीव के महाशक्तिशाली राजा मृल ने अपने अर्ध-जनजातीय गठबंधन का नेतृत्व करते हुए नदी पार की। रात का आकाश इतना चमकीला था कि दिन के उजाले जैसा लग रहा था। इस गठबंधन में 800 से अधिक जनजातियाँ शामिल थीं, जो एक साथ गीत गा रही

थीं और उनके स्वर उत्साह से गूंज रहे थे। उसी क्षण, एक गुनगुनाती हुई मधुमक्खी, जिसके पंख मधुरता से गुनगुना रहे थे, राजा मृल के जहाज पर आकर बैठ गई। इससे प्रेरित होकर, गठबंधन ने उसकी आकृति को अपना प्रतीक चिन्ह बना लिया और उसे अपने झंडों और बैनरों पर अंकित कर दिया।

स्टाओंग पर टीव की निर्णायक विजय के बाद, जिस जहाज पर भौंरा उतरा था, उसका नाम 'मधुमक्खी की नाव' रखा गया। तब से, टीव के राजा मरल ने भौंरे को गठबंधन के आधिकारिक प्रतीक के रूप में मानकीकृत कर दिया, और इसकी छवि बाद के झंडों पर पाए जाने वाले पक्षी-मधुमक्खी डिजाइनों में विकसित हुई।

टिप्पणी
• हमिंगबर्ड जैसी दिखने वाली भौंरा संभवतः एक एन्क्रिप्टेड संकेत थी। निम्न लोकों में प्रकट होने वाली द्वादशफलकीय अंतर-आयामी संरचनाओं का निरूपण, जैसे मधुमक्खी के छत्ते के प्रिज्म षट्भुजाकार थे।
इस प्रकार, भौंरे का रंग ब्रह्मांडीय मैट्रिक्स की कंपन ऊर्जा का प्रतीक हो सकता है। वहीं, बगल में वर्णित हमिंगबर्ड 7D क्षेत्र के पक्षी-सिर वाले मानवों की ओर संकेत करता है। इसका प्रकट होना एक शुभ खगोलीय संकेत था, जो

राजा मृल की दैवीय वैधता और वास्तविकता को आकार देने वाली महाशक्तियों के साथ उनके ब्रह्मांडीय जुड़ाव को सुदृढ़ करता है।

पृथ्वी के राय लोगों का आगमन
टीव के राजा देओंग के शासनकाल के तीन वर्ष बाद, पृथ्वी के राय राज्य से दूत उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पहुंचे। उन्होंने टीव परिवार तक की अपनी यात्रा का वर्णन किया:
जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, हमने खुद को बादलों के बीच चलते हुए पाया, हमारे पैरों के नीचे गरजने की आवाज़ गूंज रही थी। कभी-कभी हम गहरी खाइयों में उतरते थे, जहाँ ऊपर उठती लहरों की आवाज़ गूँजती थी। हम अपनी दिशा निर्धारित करने के लिए सूर्य और चंद्रमा का उपयोग करते थे, और बीतते वर्षों और महीनों का हिसाब रखने के लिए सर्दियों और गर्मियों की गिनती करते थे।
जब टीव जनजाति ने अपने कैलेंडर की तुलना पृथ्वी के रे जनजाति के कैलेंडर से की, तो उन्होंने पाया कि वे दोनों कैलेंडर एक समान थे।
उनके महत्व को पहचानते हुए, राजा देओंग ने विदेशी गणमान्य व्यक्तियों के लिए आरक्षित प्रोटोकॉल और शिष्टाचार का पालन करते हुए पृथ्वी के रेये का

सर्वोच्च सम्मान के साथ स्वागत किया। 'रेये' नाम खनिजों या क्रिस्टलों से जुड़ा है, संभवतः यह उन पदार्थों को संदर्भित करता है जो भूमिगत मानव लोक की ओर जाने वाली किरेरूल सुरंगों में पाए जाते थे और जिनका उपयोग चित्रकला, उत्कीर्णन या आध्यात्मिक अनुष्ठानों के लिए किया जाता था।

टिप्पणी
पृथ्वी के दूतों द्वारा वर्णित विचित्र यात्रा परिस्थितियाँ - नीचे गरजते बादलों पर चलना और ऊपर समुद्री ध्वनियों के साथ गुफाओं में उतरना - यह संकेत देती हैं कि वे संभवतः:
• होमो सबटेरेनियस, 5 डी क्षेत्र के निवासी, भूमिगत परतों का उपयोग करते थे।
त्रि-आयामी जगत में छलावरण के रूप में।
• आयामी स्थानांतरण के माध्यम से यात्रा करना, एक ऐसी प्रक्रिया जो स्व-दूरस्थानीकरण के समान है।
अंतरआयामी निरंतरताओं के माध्यम से।

सूर्य, चंद्रमा और ऋतुओं का अवलोकन करने की उनकी क्षमता से पता चलता है कि वे ब्रह्मांडीय कंपन संकेतों की निगरानी के लिए आंशिक रूप से 3 डी क्षेत्र में अंतर-आयामी रूप से टेलीपोर्ट कर सकते हैं।

टायनलेरा का फीनिक्स
टीव के राजा देओंग द अकम्प्लिशर के शासनकाल के चार वर्ष बाद, टायेनलेरा राज्य ने भेंट के रूप में एक फीनिक्स का बच्चा प्रस्तुत किया। फीनिक्स कीमती जेड से सजी एक रथ में आया, जिसे लाल हाथी खींच रहे थे।

जब फीनिक्स आया, तब वह अपरिपक्व था और अपनी पौराणिक रंगीन प्रकाश किरणें बिखेरने में असमर्थ था। उसे शाही उद्यान में रखा गया, जहाँ उसे उत्तम लाल जेड का तरल और बहुमूल्य इंद्रधनुषी बादल का अर्क पिलाया गया - कहा जाता है कि ये दोनों स्वर्ग में स्थित मेटा-कल्प की देवी से उत्पन्न हुए थे। राजा देओंग द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी को अर्पित किए गए अनुष्ठानिक बलिदान के दौरान, फीनिक्स के पंख परिपक्व हुए और इंद्रधनुषी रंगों की एक शानदार छटा में परिवर्तित हो गए। परिणामस्वरूप, मध्य पृथ्वी (पीली और यांग्त्ज़ी नदियों के बीच का विशाल मैदान) के सभी देशी पक्षी श्रद्धापूर्वक मौन हो

गए, मानो फीनिक्स को एक दिव्य प्राणी के रूप में पहचान रहे हों। राजा देओंग के निधन के बाद, फीनिक्स आकाश में उड़ गया और फिर कभी दिखाई नहीं दिया।

रहस्यमय एलीनकडे और उनकी श्रद्धांजलि
टीव के राजा देओंग के शासनकाल के पाँचवें वर्ष में, टीव की राजधानी से लगभग 37,350 किलोमीटर दूर स्थित अलीनके राज्य ने एक महिला श्रमिक को भेंट के रूप में प्रस्तुत किया। उसके चेहरे की बनावट कोमल थी और उसका शरीर सुडौल और आकर्षक था। उसने रेशम का एक लंबा गाउन पहना था, जिस पर धब्बेदार और जटिल कढ़ाई की गई थी, जो उसके सुडौल शरीर को और भी आकर्षक बना रही थी। गाउन की चौड़ी आस्तीनें और थोड़ा लंबा किनारा उसे एक सुंदर और अलौकिक रूप दे रहे थे।

जब भी हवा चलती, वह सहज ही अपने वस्त्र की सजावटी कमरबंद को कस लेती, ताकि उसका लबादा अपनी जगह पर टिका रहे, क्योंकि उसे डर था कि हवा के झोंकों के साथ उसका शरीर लगातार हिलता रहेगा। वह बुनाई में असाधारण रूप से कुशल थी, उसकी निपुणता इतनी निपुण थी कि वह बिना सुई का इस्तेमाल किए, जटिल डिज़ाइनों की कढ़ाई करते समय पाँच अलग-अलग रंगों के धागे अपने मुँह में पकड़ सकती थी।

एलीनकडे द्वारा भेंट की गई कलाकृतियों में उत्कृष्ट रूप से बुनी हुई रेशमी कढ़ाई शामिल थी, जिनमें से प्रत्येक का नाम उसकी जटिल डिज़ाइन और प्रतीकात्मक अर्थ को दर्शाता था: पर्वत बादल - लहरदार पर्वतों से उभरते बादल; सूर्य-किषेपित किला - गोधूलि की किरणें किले की दीवारों की उठती- गिरती आकृतियों को रोशन करती हैं; मोती बहुगुणित - मोतियों की मालाओं से बुने हुए अलंकृत आभूषण; लोगोग्राम - जटिल लोगोग्राफिक स्ट्रोक का एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला प्रदर्शन; लालटेन प्रदर्शित - लालटेन और मोमबत्तियाँ सावधानीपूर्वक एक-दूसरे के बगल में रखी गई थीं। बुनी गई इन सभी उत्कृष्ट कलाकृतियों की लंबाई 69.3 सेमी थी, जो एलीनकडे की वस्त्र कला की सटीकता को दर्शाती है। वस्त्र शिल्प कौशल में अपनी अद्वितीय कुशलता के अलावा, एलीनकडे के पुरुषों ने खेती में भी असाधारण विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया। अभूतपूर्व दक्षता के साथ, वे एक ही दिन में 61,440 वर्ग मीटर में फैले खेत की जुताई करने में सक्षम थे, यह उपलब्धि उनके कृषि नवाचारों, समन्वित श्रम और संभवतः उन्नत शारीरिक क्षमताओं के बारे में बहुत कुछ कहती है।

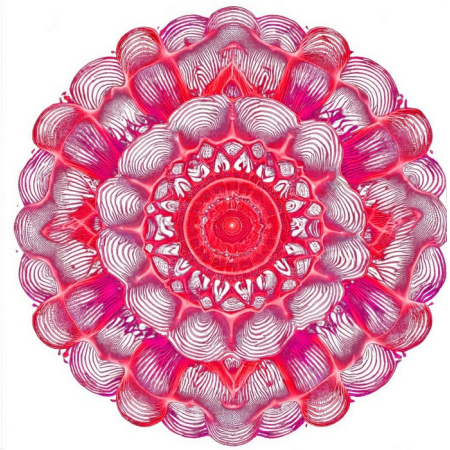

टिप्पणी

एलीनकडे लोग संभवतः ना-डेन समूह के ट्लिंगिट (उच्चारण ट्लिंग-किट) थे, जो उत्तरी अमेरिका के उत्तर-पश्चिमी प्रशांत तट पर अलास्का की सीमा से लगे क्षेत्र में रहते थे।
उनके रेशमी एक-पीस गाउन पर साइकेडेलिक, उच्च-आयामी पैटर्न बने हुए थे, जो कुछ इस प्रकार थे:
• ट्लिंगिट अनुष्ठानिक वस्त्र, जिनमें ब्रह्मांडीय ज्ञान समाहित होता है
• अन्य स्वदेशी परंपराएँ जो कंपन संरचनाओं को दर्शाती हैं
उच्चतर लोकों
उनकी असाधारण कृषि क्षमताएँ — एक ही दिन में 61,440 वर्ग मीटर भूमि की जुताई करना — संभवतः ऊर्ध्वाधर कृषि का एक गुप्त संकेत थीं, जिसमें वैकल्पिक विज्ञान-आधारित तकनीक का उपयोग किया गया था:
• कंपन आधारित डीएनए अनुक्रमण
• उच्च-आयामी ऊर्जाओं के साथ सहजीवी अंतःक्रियाएँ: इन प्रौद्योगिकियों ने न केवल फसल की पैदावार को बढ़ाया बल्कि सकारात्मक कंपन आवृत्तियाँ भी उत्पन्न कीं, जिससे वास्तविकता के प्रकटीकरण की दिशा प्रभावित हुई।

गेरनान पर्वत के लोग और उन पर समय की अरैखिकता: टीव के राजा देओंग के शासनकाल के छठे वर्ष में, गेरनान पर्वत राज्य ने पंखों से इशारा करने वाले पक्षी को भेंट के रूप में प्रस्तुत किया - नर और मादा, दोनों को जेड से बने पिंजरों में रखा गया था। गेरनान पर्वत के मिशनरियों की कुछ विशिष्ट शारीरिक विशेषताएं थीं: घुंघराले बाल, लंबा कद और उभरी हुई लंबी नाक। वे गोधूलि बेला नामक वस्त्र पहनते थे, जिसकी बनावट भोर के प्रकाश के समान थी जो सिरस बादलों की कोमल परतों से छनकर आती थी, जिससे उसमें एक अलौकिक, परिवर्तनशील चमक आ जाती थी। मिशनरियों की यात्रा अत्यंत कठिन थी, जिसमें उन्हें दुर्गम भूभागों को पार करना पड़ा। उन्होंने अनगिनत पहाड़ों, कई नदियों और नाटकीय रूप से बदलते भूभौतिकीय वातावरणों को पार किया, जिनमें नाग महाद्वीप, संकरी मधुमक्खी पहाड़ी और एक खड़ी और विशाल पर्वत श्रृंखला शामिल थी। उनकी यात्रा 100 से अधिक राज्यों तक फैली हुई थी, जिसने ऊबड़- खाबड़ इलाकों में उनकी सहनशक्ति की परीक्षा ली।
पर्वतीय क्षेत्रों को पार करते समय, खड़ी चोटियों और ऊबड़-खाबड़ चट्टानों ने उनके लिए बड़ी चुनौतियाँ खड़ी कर दीं, यहाँ तक कि टीव की राजधानी पहुँचते-पहुँचते उनके हीरे से मजबूत किए गए गाड़ी के पहिये भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। उबलते हुए महासागर को पार करते समय, लहरें उग्र रूप से उठ रही थीं, मानो पानी उबल रहा हो। सतह के नीचे रहने वाले समुद्री जीव - मछलियाँ और समुद्री कछुए - के शल्क, खोल और हड्डियाँ पत्थर जितनी कठोर थीं, जो पानी की निरंतर उथल-पुथल के अनुकूलन का परिणाम था। अपने जहाजों को मांसाहारी जलीय सरीसृपों से बचाने के लिए, उनकी नावों के निचले हिस्से को तांबे की परत से मजबूत किया गया था।

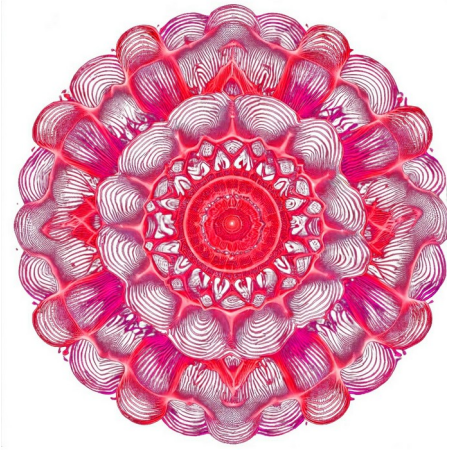

जब मिशनरी नाग महाद्वीप से गुज़र रहे थे, तो उनकी गाड़ियाँ जगुआर की खाल से ढकी हुई थीं, और सभी यात्री अंदर ही बैठे रहे, आगे बढ़ने के लिए अंदर से धक्का देते रहे, ताकि शिकारियों से बच सकें। संकरी मधुमक्खी पहाड़ी पर पहुँचने पर, उनका सामना घातक कीड़ों के झुंड से हुआ, जिसके कारण उन्होंने गेहेरा सोंगेरा नामक वृक्ष (संभवतः काला बबूल, रॉबिनिया स्यूडोएकेशिया) को जला दिया। इसके जलने से निकला धुआँ कीड़ों को दूर भगाता था, और यहाँ तक कि संपर्क में आने पर उन्हें मार भी देता था। पूरी यात्रा पचास वर्षों से अधिक समय तक चली, जिसके बाद मिशनरी अंततः टीवों की राजधानी पहुँचे। पहुँचने पर, मिशनरी टीवों की भूमि में बलिदान समारोह उत्सव तक रहे, जिसके दौरान राजा देओंग ने मुख्य पुजारी के रूप में स्वर्ग और पृथ्वी, दिव्य प्रकृति देवता को श्रद्धांजलि अर्पित की। यह भव्य अनुष्ठान माउंट लीराट्स (पीले सागर की खाड़ी के ठीक पार कोरियाई प्रायद्वीप के पश्चिमी तट के मध्य बिंदु पर स्थित) की चोटी पर हुआ, जिसे सबसे बड़ा पर्वत माना जाता है - क्रा-दाई लोगों का एक संभावित उपनाम, जिसका अर्थ है दाई का पर्वत।
आश्चर्यजनक रूप से, जो मिशनरी बचपन में यात्रा पर निकले थे, वे टीव की भूमि पर पहुँचते-पहुँचते बूढ़े हो चुके थे और उनकी दाढ़ी सफेद हो गई थी।

हालाँकि, गेरनान पर्वत पर लौटने पर, यह बताया गया कि वे शारीरिक रूप से अपने युवा रूप में लौट आए थे, मानो उनके लौटने पर समय उलट गया हो।

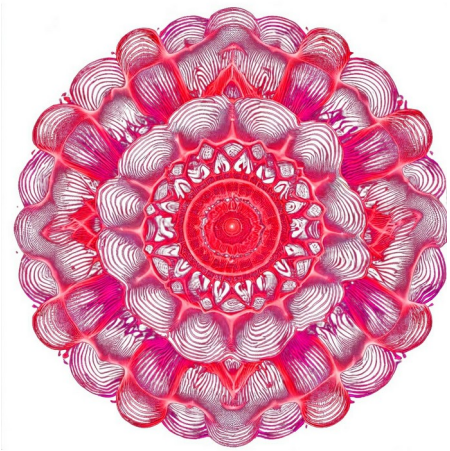

पंख फड़फड़ाते हुए पक्षी: ज्ञान के पवित्र संदेशवाहक
पंखों को हिलाने वाले पक्षी असाधारण रूप से शक्तिशाली और अद्भुत प्राणी थे, जिनकी शक्ल मैगपाई पक्षियों से मिलती-जुलती थी। ये पक्षी दक्षिणी महासागर की रहस्यमयी यात्राएँ करते थे, जहाँ वे अपनी चोंच में सिंदूरी मिट्टी इकट्ठा करते थे और उसे वापस लाल-काले रंग के पेड़ों पर ले आते थे, जो या तो ऊँचे पहाड़ों पर या अत्यधिक ऊँचाई वाले पहाड़ों पर स्थित होते थे।

वे अपने घोंसले इन दूरस्थ भूभागों में बनाते थे, जो पवित्र और एकांत क्षेत्रों के प्रति उनकी पसंद को दर्शाता है। जब भी कोई बुद्धिमान राजा— जो प्राचीन ऋषि शासक के सार का प्रतीक हो—सत्ता में आता था, तो पंख हिलाने वाले पक्षी उसके राज्य में प्रवास करते थे, जो उसके शासनकाल को दैवीय कृपा और ज्ञान का प्रतीक बनाता था।

ऐसा ही तब हुआ जब टीव के ड्यूक मिर्न ने टीव के राजा देओंग को शासन में सहायता प्रदान की। उनके सहयोग के बाद, पंखों से इशारे करने वाले पक्षी टीव में आकर बस गए, जो एक प्रबुद्ध शासक के आगमन का शुभ संकेत था। उनकी उपस्थिति शासक के शासन की दैवीय वैधता की दिव्य पुष्टि थी।

टिप्पणी
गेर्नन पर्वतीय लोग संभवतः आल्प्स पर्वतों से आए प्रोटो-इटैलिक-सेल्टिक समूह थे, जो इनके वंशज थे:
• अटलांटिस के शरणार्थी जो उस दौरान आल्प्स पर्वतीय द्वीपों में भाग गए थे वैश्विक महाबाढ़ के बाद।
• बाद की इंडो-यूरोपीय कॉर्डेड वेयर प्रवासन लहरों के साथ,
बेल बीकर संस्कृति का निर्माण
महासागरों और महाद्वीपों को पार करते हुए टीव भूमि तक की उनकी यात्रा एक परिष्कृत वैश्विक समुद्री नेटवर्क का संकेत देती है। उनकी युवावस्था की बहाली से यह पता चलता है कि उन्होंने टीवों की बुद्धिमत्ता की परीक्षा के रूप में स्वयं ही वृद्धावस्था की प्रक्रिया को अंजाम दिया था, जिसके बाद अपनी जन्मभूमि पर सुरक्षित वापसी के बाद 7D चेतना के मूल से पुनः जुड़कर उन्होंने इसके प्रभावों को उलट दिया।

सुदूर दक्षिण के रूप बदलने वाले म्परारो लोग
टीव के सिद्धिकरणकर्ता राजा देओंग के शासनकाल के सातवें वर्ष में, दक्षिणी परिधि से बहुत दूर स्थित म्परारो की जटिल रियासत ने स्वयं को प्रकट किया।
मप्रारो लोगों के पास एक असाधारण और प्रतीत होने वाली अलौकिक क्षमता थी - वे सहजता से असंख्य रूपों में रूप बदल सकते थे, और उनके रूपांतरण के अनुरूप विस्तृत वेशभूषा तुरंत प्रकट हो जाती थी।
रूप बदलने की यह क्षमता कई स्तरों पर काम करती थी: वृहद स्तर पर, वे बादल और धुंध उत्पन्न कर सकते थे, जिससे परिदृश्य बदलते वाष्पों के आवरण में ढक जाते थे; सूक्ष्म स्तर पर, वे अपना आकार इतना छोटा कर सकते थे कि दूसरों के महीन रोएँदार बालों में छिप सकें। उनके वस्त्र सोने, मोतियों, जेड, फर और पंखों से सजे होते थे, जो एक चकाचौंध भरा, अलौकिक दृश्य प्रस्तुत करते थे। रूप बदलने की क्षमता के अलावा, म्प्रारो लोग अपने मुँह से बादल निकाल सकते थे, इच्छा अनुसार आग उगल सकते थे और केवल अपने पेट पर प्रहार करके गड़गड़ाहट वाली ध्वनि उत्पन्न कर सकते थे।

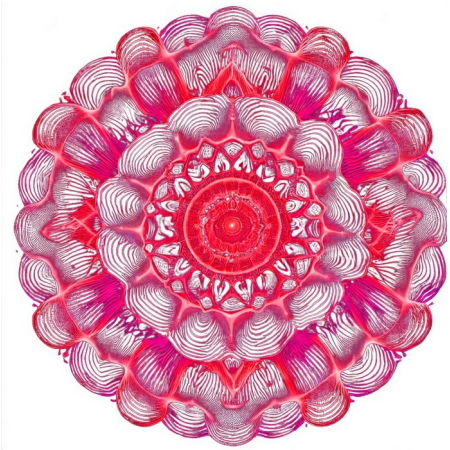

मप्रारो जनजाति के लोग रूप बदलने की अनेक अद्भुत क्षमताएँ प्रदर्शित करते थे, जिनमें गैंडे, हाथी, शेर, ड्रैगन, कुत्ते और घोड़े जैसे रूप धारण करना, बाघ या बाइसन का रूप धारण करना और इन रूपों के बीच सहजता से आना-जाना शामिल था। उनकी एक और अनूठी और रहस्यमयी प्रतिभा यह थी कि वे लघु मानव आकृतियाँ प्रकट कर सकते थे, जिनमें से प्रत्येक करतब, नाट्य प्रस्तुति और संगीत रचनाएँ करने में सक्षम थी। ये नन्हे जीव लगातार मुड़ते, झूलते और रूप बदलते रहते थे, मप्रारो जनजाति के लोगों की हथेलियों के भीतर ही उनकी मुद्राएँ सहजता से बदलती रहती थीं। इन सूक्ष्म मानवों का आकार क्षण के अनुसार 0.47 सेमी से 4.7 सेमी तक बदलता रहता था। उनके रूप और आकार में होने वाले ये अद्भुत परिवर्तन उन्हें अपने युग में अद्वितीय बनाते थे। उनका प्रदर्शन इतना प्रभावशाली था कि टीव के संगीत ब्यूरो ने आदेश दिया कि सभी संगीतकारों को मप्रारो जनजाति की रूप बदलने की कला का अध्ययन करना चाहिए और इसके संरक्षण को सुनिश्चित करना चाहिए। हालांकि, म्प्रारो लोगों के आगमन के कई पीढ़ियों बाद, उनकी रूप बदलने की क्षमताओं का ज्ञान लुप्त हो गया। यद्यपि उनके रूपांतरणों के दृश्य रूप की व्यापक रूप से नकल की गई, लेकिन उनकी कला का मूल सार पूरी तरह से खो गया - यह अपनी मूल निपुणता की मात्र एक प्रतिध्वनि बनकर रह गया।

टिप्पणी
म्प्रारो की सूक्ष्म स्तर तक सिकुड़ने की क्षमता से पता चलता है कि उन्होंने उच्च-आयामी एकीकरण में महारत हासिल कर ली थी, जिससे संभवतः वे 5D क्षेत्र में लंबे समय तक मौजूद रहे। उनके द्वारा उगले गए बादल और आग का प्रस्फुटन 3D क्षेत्र में वस्तुओं के टेलीपोर्टेशन का संकेत देते हैं, जबकि उनके पेट से निकलने वाली गड़गड़ाहट कंपन के माध्यम से ऊर्जा का दोहन करके आयामी स्थानांतरण को दर्शाती है।
'टेढ़ी-मेढ़ी' अवस्था वाले राज्य के म्परारो लोग संभवतः उत्तरपूर्वी ऑस्ट्रेलिया के म्बारा लोगों के वंशज रहे होंगे, जिनका संभवतः चेतना के मूल से आंशिक रूप से पुनर्संबंध रहा होगा।
वे संभवतः 5D होमो सबटेरेनियस क्षेत्र की परिधि पर, ग्नार्ल्ड प्लेटफॉर्म या 5D निरंतरता के भूमिगत जंगलों में भी निवास करते रहे होंगे। यह इसके देश के नाम 'मप्रा' के अवचेतन संकेतन से पता चलता है, जिसका अर्थ है 'दुबला', जो दो संस्थाओं के बीच एक जटिल, आपस में गुंथे हुए और गहरे संबंध का सुझाव देता है - दोहरे अस्तित्वों का अभिसरण।

तीन लुप्त सभ्यताओं के माध्यम से गूढ़ संबंध

सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

ड्यूक किंग ताव और पंख वाला इंसान

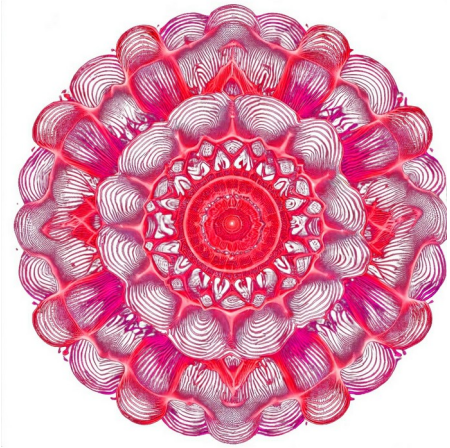

अलनल/एलेरेस के ड्यूक राजा ताव द ल्यूमिनस के शासनकाल के बीसवें वर्ष में, वे महल के भीतर पृथ्वी आत्मा के निर्मल कक्ष में बैठे थे। जैसे-जैसे दोपहर होने वाली थी, उन्हें ऊंघने लगी और वे एक ऐसे सपने में खो गए जहाँ सफेद बादल मिलकर मानव जैसे आकार ले रहे थे, जो पंखों वाले वस्त्र पहने हुए थे - इस प्रकार उन्हें पंख मानव नाम मिला। इस सपने में, ड्यूक राजा ताव ने पंख मानव से बातचीत की और अमरता के मार्ग पर मार्गदर्शन मांगा।
'महामहिम, आपने अभी तक अपने सार, अपने ज्ञान को प्रकट नहीं किया है।' ‘बुद्धि और ज्ञान। इनके बिना अमरता प्राप्त करना असंभव है,’ पंख वाले मानव ने उत्तर दिया।

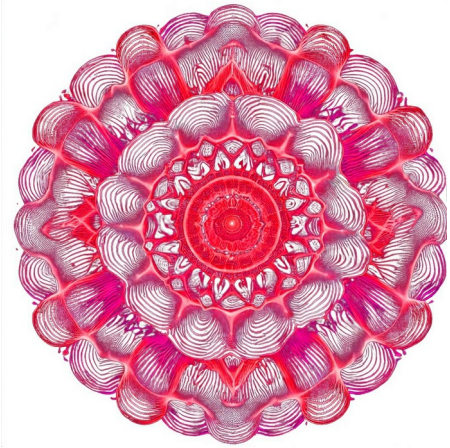

अपमानित होकर ड्यूक किंग ताव घुटनों के बल गिर पड़े और प्रार्थना करने लगे कि वे अपनी चेतना को इच्छाओं, विचारों, भय और आवेगों के अत्यधिक नियंत्रण से मुक्त करने का तरीका बताएं। जवाब में, पंख वाले मानव ने ड्यूक किंग ताव की छाती की ओर इशारा किया। पल भर में, ड्यूक किंग ताव का हृदय फट गया। झटके से जागते हुए, उन्होंने खुद को अत्यधिक पसीने से तर पाया, जिसने न केवल उनके वस्त्रों को बल्कि उनके नीचे बिछी हुई घास की चटाई को भी भिगो दिया था। उस क्षण से, ड्यूक किंग ताव एक रहस्यमय हृदय रोग से पीड़ित हो गए, जिसके कारण उन्होंने महल में होने वाले सभी भव्य भोज, स्वादिष्ट भोजन और संगीत कार्यक्रमों को त्याग दिया। लगभग दस दिन बाद, ड्यूक किंग ताव ने एक बार फिर पंख वाले मानव का सपना देखा।
'महामहिम, मैंने आपके अनुरोध पर जो विधि अपनाई, उससे मैं संतुष्ट नहीं था।' 'मैं तुम्हें नुकसान पहुंचा रहा था - मैं तुम्हारे दिल को अंदर से बदल रहा था,' पंख वाले इंसान ने समझाया।
फिर पंखनुमा मानव ने ड्यूक किंग ताव को हथेली से भी छोटा एक हरा थैला दिया, जिसमें निर्मलता की गोलियां थीं - जो ऊर्जा चैनलों को विस्तारित करने के लिए बनाई गई थीं - और रक्त संचार को स्फूर्ति देने वाला पाउडर सांद्रित पदार्थ था - जो रक्त प्रवाह और आंतरिक शक्ति को पुनर्जीवित करने में सक्षम

था। उसने धीरे से अपना हाथ ड्यूक किंग ताव की छाती पर रखा, जिससे औषधीय सार उनके शरीर में समा गया। कुछ ही समय में, ड्यूक किंग ताव उस बीमारी से पूरी तरह ठीक हो गए जो उन्हें पहले सपने से परेशान कर रही थी।

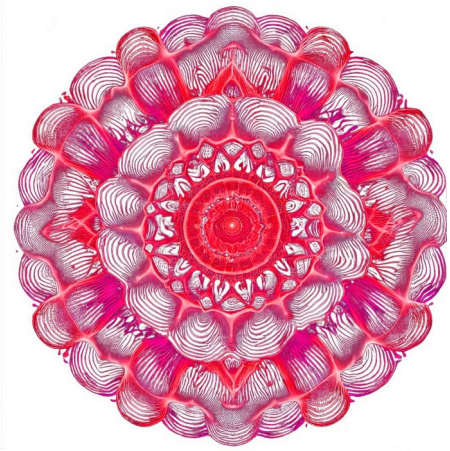

कृतज्ञता से अभिभूत होकर, ड्यूक किंग ताव ने इन चमत्कारी औषधियों की और अधिक मात्रा की माँग की। पंख मानव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उन्हें सोने के धागों से कसकर बाँधकर जेड की बोतलों में संग्रहित कर दिया। अपने पैरों के तलवों पर औषधि लगाने के बाद, ड्यूक किंग ताव ने पाया कि वे 4,000 किलोमीटर से अधिक की दूरी को सहजता से ऐसे तय कर सकते हैं जैसे कि वे टहल रहे हों, या फिर हवा की तरह तेज़ गति से चल सकते हैं, या सचमुच ज़मीन से ऊपर उड़ सकते हैं। कहा जाता है कि जिन अन्य लोगों ने इस औषधि का सेवन किया था, वे अंतरिक्ष के अस्तित्व से भी कहीं अधिक समय तक जीवित रहे।

टिप्पणी
फेदर ह्यूमन्स संभवतः 7 डी क्षेत्र के पक्षी-सिर वाले मानवाकार प्राणी थे, जिनके पंखयुक्त वस्त्र उनके रूप बदलने की क्षमता का प्रतीक थे। जबकि

ड्यूक किंग ताव के हृदय की ओर इशारा करना उनकी चेतना पर पुनः नियंत्रण प्राप्त करने की आवश्यकता का प्रतीक था:
• आंतरिक आवाजों, इच्छाओं और भय को वश में करना
• अहंकार को चेतना के मूल में पुनः एकीकृत करना
• 7 डी स्रोत से पुनः जुड़ना: ड्यूक किंग ताव की गतिशीलता पर दवा के प्रभाव से पता चलता है कि इसमें कंपनकारी गुण थे जो स्व-दूरस्थानीकरण और आयामी बदलाव को सक्षम बनाते थे, जिससे अस्थायी रूप से उनके 3 डी रूप को उच्चतर लोकों से जोड़ा जा सकता था।

द ग्रीन फीनिक्स एंड द मैगपाई ट्रिब्यूट

टीव के राजा देओंग के शासनकाल के चौबीसवें वर्ष में, लेरास्लीव राज्य ने भेंट के रूप में दो मैना (एक नर और एक मादा) और एक हरा फीनिक्स पक्षी प्रस्तुत किया।

ग्रीष्म ऋतु में, हरे फीनिक्स और मैगपाई दोनों अपने पंख गिरा देते हैं। इन पंखों को सावधानीपूर्वक एकत्र किया जाता था और उनका पुनः उपयोग किया जाता था: मैगपाई के पंखों से एक सुंदर पंखा बुना जाता था, जबकि हरे फीनिक्स के

पंखों का उपयोग औपचारिक रथ के हुड को सजाने के लिए किया जाता था। इन पंखों से बने पंखों को प्रतीकात्मक नाम दिए गए थे: रोमिंग लेविटेशन, स्ट्रिंग क्विल, फॉर्च्यूनेट बीम और ऑब्लिक शैडो। ऐसा माना जाता था कि प्रत्येक पंखा उन पक्षियों का सार धारण करता है जिनसे वह उत्पन्न हुआ है, जो भाग्य, सुंदरता और हवा की शक्ति का प्रतीक है।

कुआहो के छायाहीन नर्तक
अलनल/एलरेस द ल्यूमिनस के ड्यूक राजा ताव के शासनकाल के दौरान, दक्षिणपूर्व के कुआहो राज्य (जिसके बारे में माना जाता है कि यह क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन मूल का है) ने श्रद्धांजलि के रूप में दो रहस्यमय महिलाओं को भेजा: लंकुआहवोएन द एक्सटेंसिव ग्रेस और लानोंगवोरा द एक्सटेंसिव एम्यूजमेंट।
ये दोनों महिलाएं अपने असाधारण गुणों के लिए प्रसिद्ध थीं: वे अपने पंखे को हिलाकर चारों दिशाओं में हल्की, ठंडी हवा फैला सकती थीं; वे वाक्पटु और कुशल थीं, गायन, नृत्य और हँसी में निपुण थीं; वे धूल पर बिना पदचिह्न छोड़े चल सकती थीं; सीधी धूप में खड़े होने पर भी उनकी कोई परछाई नहीं बनती थी। इन अलौकिक गुणों के कारण कई लोगों ने अनुमान लगाया कि वे दिव्य प्राणी या अमर थीं, संभवतः अप्सराओं का अवतार थीं।

जब अलनल/अलेरेस के ड्यूक राजा ताव का देहांत हुआ, तो वे मीनल नदी में डूब गए। लंकुआह्वोएन और लानोंग्वोरा उनके बेजान शरीर को लेकर नाव में सवार हुईं और नदी की गहराई में डूबते हुए उन्हें गले लगाया। इसके बाद दशकों तक, यात्रियों ने केरूंग नदी (यांग्त्ज़ी नदी) के जल में एक प्रेतवाधित नाव को देखने का दावा किया, जो मीनल नदी की सहायक नदी का मुख्य भाग है। आज भी, लोग ड्यूक राजा ताव और उन दो महिलाओं के दर्शन की बात करते हैं, जो पानी में खुशी से खेल रही थीं और हमेशा के लिए एक प्रेतवाधित नाव में भटक रही थीं।

टिप्पणी

लंकुआहवोएन और लानोंगवोरा की छायाहीन प्रकृति से पता चलता है कि उनके पास स्व-दूरस्थानीकरण, कंपन स्थानांतरण और आयामी स्थानांतरण की क्षमताएं थीं।
उनकी होमो सेपियन जैसी शक्ल को देखते हुए, वे संभवतः 5 डी होमो सबटेरेनियस क्षेत्र से थे।
डूबने के बाद भी पानी में उनकी निरंतर उपस्थिति से संकेत मिलता है कि वे थे:
• 3 डी मृत्यु दर से अप्रभावित
• ड्यूक किंग ताव को 5 डी क्षेत्र में संक्रमण करने में सहायता करना, उनके साथ
‘मृत्यु’ एक छलावरण के रूप में कार्य कर रही है
सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

III - 13

[illegible]

[illegible]

हवा और बादलों पर सरकते हुए। सुबह से शाम तक, उन्होंने विशाल भूभागों को पार किया, असाधारण गति से दुनिया के हर कोने का भ्रमण किया।
इस दिव्य यात्रा में उनके साथ दस इतिहासकार थे, जिन्हें अपने द्वारा देखे और सुने गए सभी तथ्यों को सावधानीपूर्वक दर्ज करने का कार्य सौंपा गया था। उनके पीछे दस अतिरिक्त रथ थे, जिनमें से प्रत्येक रत्नों और जेड से भव्य रूप से सजाया गया था, और उन पर उनके द्वारा रचित पुस्तकें रखी हुई थीं। राजा म्रीवक के साथ आठ शानदार घोड़े थे, जिनमें से प्रत्येक के बारे में कहा जाता था कि उनमें अजगर के गुण थे। ये घोड़े साधारण घोड़े नहीं थे, बल्कि अलौकिक गति, चपलता और दिव्य गुणों से परिपूर्ण थे।

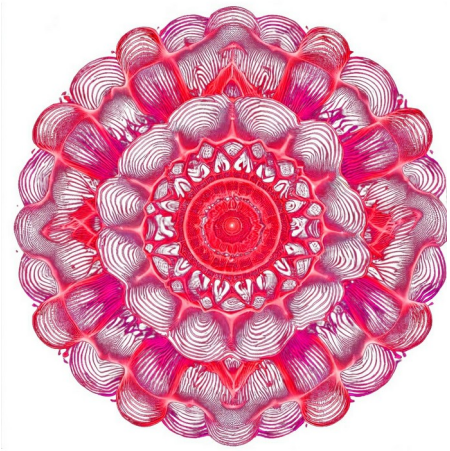

ग्राउंड सरपासर, जो बिना जमीन को छुए दौड़ सकता था; फेदर फ्लटरर, जो किसी भी उड़ते हुए पक्षी से तेज था; रशिंग टू हेवन, जो एक ही रात में 4,158 किमी की दूरी तय कर सकता था; शैडो ट्रांससेंडिंग, जो इतनी तेजी से दौड़ता था कि सूर्य को भी पकड़ सकता था; रेडियंस एक्सीडर, जिसके शरीर से प्रकाश की चकाचौंध भरी किरणें निकलती थीं; हाइपर-लाइट, जो गति का ऐसा सम्मोहक दृश्य उत्पन्न करता था कि उसे देखने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते थे; सोअरिंग अबव मिस्ट्स, जो बादलों से ऊपर उठकर कोहरे पर सवार हो सकता था; विंग कैरियर,

पंखों वाला एकमात्र घोड़ा, जो उड़ने में सक्षम था। राजा म्रीवक इन आठ दिव्य घोड़ों पर बारी-बारी से सवार होते थे, लगाम को हल्के से पकड़े हुए, जिससे वे स्वर्ग और पृथ्वी के बीच सहजता से आवागमन कर सकें। अपनी बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता और सूझबूझ के लिए प्रसिद्ध राजा म्रीवक अपने रथों और घोड़ों को विशाल महासागरों के पार ले जाते थे। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ा, दुनिया भर से विचित्र और असाधारण प्राणी उसे श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्रकट हुए, उसकी दिव्य उपस्थिति और दिव्य अधिकार को स्वीकार करते हुए। उसकी यात्रा मात्र भूमि और समुद्रों की यात्रा नहीं थी - यह एक ब्रह्मांडीय यात्रा थी, जो नश्वर, अमर और दिव्य शक्तियों के क्षेत्रों को समान रूप से जोड़ती थी।

टिप्पणी
घोड़ों का ‘ड्रैगन जैसा’ स्वरूप संभवतः उनकी चेतना और उच्च-आयामी उपस्थिति का प्रतीक है। ये साधारण घोड़े नहीं थे, बल्कि कुछ इस प्रकार थे:
• उच्च आयामों से आए हुए उन्नत प्राणी
• अगरथा के संरक्षक, राजा की सहायता के लिए अस्थायी रूप से 3 डी रूप में प्रकट होते हैं।
म्रीवक की यात्रा, राजा म्रीवक की पूर्वी यात्रा और अमर लोगों का जमावड़ा

अपने शासनकाल के छत्तीसवें वर्ष में, टीव के राजा म्रीवक द हारमोनियस ने लेराट्स गेर्गेहराये की महान पर्वत घाटी की पूर्वी यात्रा शुरू की। उन्होंने स्प्रिंग नाइट्स पैलेस को भव्य सभा भवन के रूप में चुना, जहाँ उन्होंने अमर लोगों से दीर्घायु के रहस्य प्राप्त किए। मानो ब्रह्मांडीय शक्तियों द्वारा बुलाए गए हों, सींग रहित अजगर, विशाल हंस, सर्प जैसे प्राणी और बड़े अजगर अचानक प्रकट हो गए, उनकी उपस्थिति इस घटना की अलौकिक प्रकृति का प्रमाण थी। जैसे ही रात हुई, राजा म्रीवक ने अमरता के पौराणिक दीपक को प्रज्वलित किया, जिसे निरंतर प्रकाश के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसा प्रकाशस्तंभ जो एक अलौकिक चमक के साथ, अविनाशी और शाश्वत रूप से जगमगा रहा था। सभा की पवित्रता को बढ़ाने के लिए, रत्न-आधारित पेस्ट से युक्त मोमबत्तियाँ पूरे महल में रखी गईं, जिनकी लौ तरल रत्नों की तरह टिमटिमा रही थी। हॉल को सुशोभित करने वाले चमत्कारों में से एक बर्फीला कमल था, जो जमी हुई घाटियों से लाया गया था और दीपों से सात से आठ फीट ऊपर लटका हुआ था। ऐसा कहा जाता था कि यह कमल प्रकाश को अवशोषित और नियंत्रित करता था, जिससे दूर-दराज के देशों में इसकी चमक फैलने से रोका जा सके। जैसे ही दिव्य सभा अपने चरम पर पहुँची, फ़िरोज़ी तालाब की स्वर्ण माता पन्ना रंग के फ़ीनिक्स द्वारा खींचे गए रथ में आ पहुँचीं। उनके आगे फूलों के चिह्नों से सजे एक बाघ और एक तेंदुआ चल रहे थे।

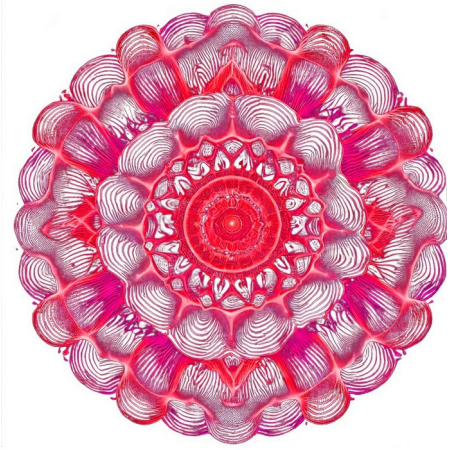

दिव्य सत्ता के प्रतीक चिन्हों से सुसज्जित, उनके पीछे पौराणिक प्राणियों का एक दल चल रहा था, जिनमें एक यूनिकॉर्न, गेहुएरीन (एक अजगर के सिर और बकरी के शरीर वाला सींगों वाला जानवर) और एक बैंगनी हिरण शामिल थे, जिनमें से प्रत्येक का अपना रहस्यमय महत्व था। उन्होंने सिंदूरी रंग के रत्नों से जड़े जूते पहने थे और नीली झाड़ियों से बुनी हुई एक सुंदर चटाई बिछाई थी, जिस पर पीले एस्टर के फूलों का तकिया रखा था। फिर उन्होंने जेड से बने एक तम्बू में राजा म्रीवक के साथ एक भव्य भोज का आयोजन किया, जो एक ऐसा पवित्र स्थान था जहाँ ज्ञान और दिव्य प्रवचन निर्बाध रूप से प्रवाहित होते थे।

स्वर्गिक सार का संगीत और नौवें स्वर्ग के खजाने
जैसे ही भोज शुरू हुआ, स्वर्गीय केंद्र की दूर तक गूंजती हुई धुनें हवा में फैल गईं, मानो स्वर्ग की नौवीं परत के खजानों को आमंत्रित कर रही हों।
यह समारोह सबसे पवित्र संगीत वाद्ययंत्रों से सुशोभित था, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी उत्पत्ति और रहस्यमय गुण थे: उत्कीर्ण लकड़ी का वाद्ययंत्र - स्गेहुएम न्कुआवोहेरा के पुष्प शिखर से प्राप्त, जहाँ ड्रैगन बांस उगता है; जब इसे बांसुरी में ढाला जाता है, तो इसकी ध्वनि फीनिक्स की चीखों की तरह गूंजती है; उत्कीर्ण घंटी - गर्जना करती झील के

कांस्य से निर्मित, जो युद्ध की घंटियाँ और उच्चतम शुद्धता की औपचारिक घंटियाँ बनाने के लिए प्रसिद्ध है; शांत सेतुयुक्त सिथर - वोरेन के गोलाकार पर्वत के अडिग पेड़ों से तराशा गया, जो इतने लचीले हैं कि जब आंधी चलती है और पहाड़ कांपते हैं, तब भी वे अविचलित रहते हैं; तैरते हुए समुद्री द्वीप की पंखयुक्त झंकार - एक हरे पत्थर से निर्मित, आश्चर्यजनक रूप से 2.31 मीटर लंबा और 1 मीटर चौड़ा, फिर भी हंस के पंख जितना हल्का। इसकी संरचना इतनी नाजुक थी कि यह हवा के साथ प्रतिध्वनित हो सकती थी, और हल्की सी हवा के साथ भी सुरीली ध्वनियाँ उत्पन्न कर सकती थी।

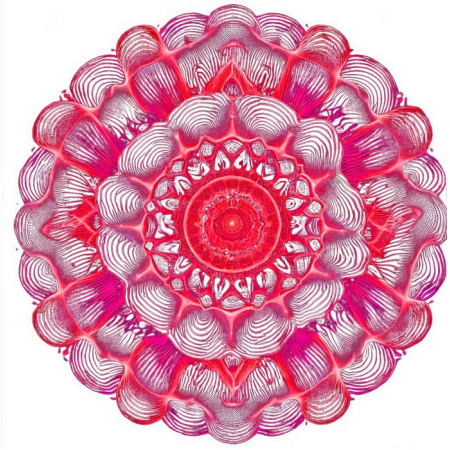

जब संगीत अपने चरम पर पहुंचा और देवताओं के गीतों के अंतिम स्वर अनंत काल में विलीन हो गए, तो फ़िरोज़ी तालाब की स्वर्ण माता और राजा म्रीवक एक बार फिर अपने रथों पर सवार हुए। मानो भाग्य ने उन्हें खींचा हो, वे शुभ बादलों में विलीन हो गए, उनकी आकृतियाँ सुनहरे क्षितिज में समा गईं, केवल दिव्य धुनों की गूँज और एक अमर उपस्थिति की दीप्तिमान आभा को पीछे छोड़ते हुए।

टिप्पणी
दिव्य प्राणियों का यह जमावड़ा महज एक औपचारिक समारोह नहीं था - यह राजा म्रीवक की स्वर्गारोहण की अंतिम परीक्षा थी।
• संगीत और अनुष्ठान देवताओं को त्रि-आयामी रूप में प्रकट होने का संकेत देते थे।
• इस दिव्य भोज ने उनकी यात्रा की पराकाष्ठा को चिह्नित किया।
बादलों में उनका प्रस्थान उनकी सफल आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक था। शुभ बादलों पर सवार होकर, राजा म्रीवक और फ़िरोज़ी तालाब की स्वर्ण माता विलीन हो गए, जिससे उच्च आयामों में उनका संक्रमण पूर्ण हुआ। उनका प्रस्थान मार्ग संभवतः उन्हें निम्न स्थानों तक ले गया होगा:
• अगरथा (भूमिगत चट्टानी परतों के माध्यम से टेलीपोर्टेशन द्वारा)
• पृथ्वी से परे उच्च आयाम (बाहरी आकाशीय आरोहण के माध्यम से)

□□□□□□□□□)

□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□

III - 14

□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□

त्सेन्स के ड्यूक राजा मिर्न, अपने मुख्य चांसलर और सम्मानित सलाहकार केरेप्स तिरतेहेरोये का पीछा करते हुए, पूरे जंगल में आग लगाने का आदेश दिया। केरेप्स तिरतेहेरोये ने एकांत जीवन चुना था और घने जंगलों वाले पहाड़ों में जाकर एक साधु की तरह रहने लगे थे, जहाँ उन्होंने दरबार से सारे संबंध तोड़ लिए थे। जैसे-जैसे आग भयंकर रूप से फैलती गई और पेड़ों व झाड़ियों को जलाती गई, एक रहस्यमय घटना घटी। सफेद कौवों का एक झुंड आकाश में गूंज उठा, उनकी चीखें आग की लपटों में गूँज उठीं। कुछ कौवे उठती हुई लपटों के ऊपर चक्कर लगा रहे थे, जबकि अन्य केरेप्स तिरतेहेरोये के चारों ओर इकट्ठा होकर, आगे बढ़ती आग के खिलाफ एक अभेद्य ढाल बना रहे थे। चमत्कारिक रूप से, लपटें उन्हें छू भी नहीं सकीं। इस अलौकिक घटना से प्रभावित होकर, त्सेन्स के ड्यूक राज्य के लोगों ने सफेद कौवों को दिव्य दूत मानकर उन्हें प्रणाम किया। इस घटना की याद में, उन्होंने एक भव्य चबूतरा बनवाया, जिसका नाम उन्होंने 'धुएं की याद में' रखा।

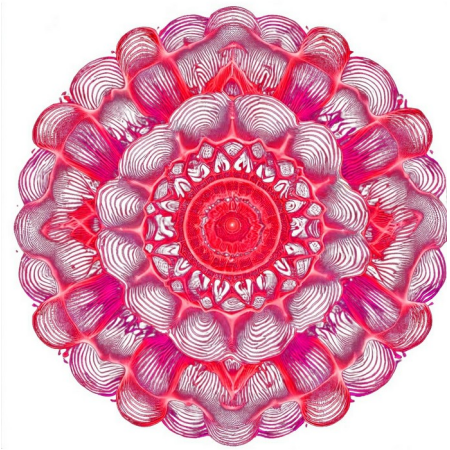

टिप्पणी
सफेद कौवे हिमालयी मैदानी इलाकों की पौराणिक कथाओं में वर्णित सुनहरे कौवों से मिलते-जुलते हैं, जिन्हें अक्सर माना जाता है:

• सौर देवता
• पृथ्वी के केंद्र (3D) और 7D पक्षी-प्रवण क्षेत्र के दूत
उनके हस्तक्षेप से यह संकेत मिलता है कि:
• केरेप्स तिर्तेहेरूये की मृत्यु नहीं हुई
• उन्हें अगरथा में गोता लगाकर ऊपर चढ़ने में सहायता प्रदान की गई थी।
• वह पृथ्वी के आवरण के नीचे स्थित उच्च आयामों में प्रवेश कर गया। तीन लुप्त सभ्यताओं के माध्यम से गूढ़ संबंध

सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□

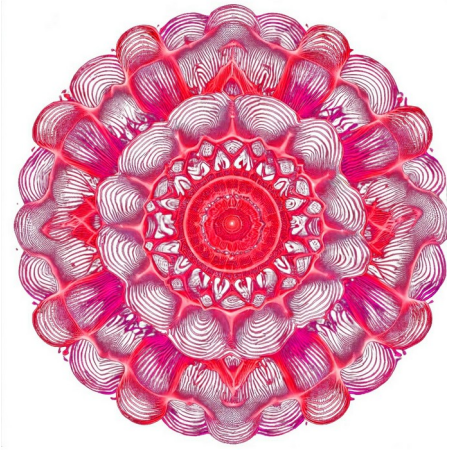

□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ 23 □□□□□□ □□□, □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□, □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□

एकत्रित किया और विश्व भर से सबसे कुशल कारीगरों को बुलाया। इन वृक्षों में से, उन्हें एक असाधारण वृक्ष मिला, जो एक दूरस्थ घाटी के सबसे अंधेरे हिस्से में उगा था। यह वृक्ष लगभग 1,880 मीटर की आश्चर्यजनक ऊंचाई पर खड़ा था, जिसकी छाल पर जटिल आकृतियाँ बनी हुई थीं और इसकी जड़ें टेढ़ी-मेढ़ी और जटिल रूप से मुड़ी हुई थीं। केवल इसी एक वृक्ष से चबूतरे के निर्माण के लिए आवश्यक सभी सामग्री प्राप्त हो गई।
प्रकाश विसारक चबूतरे पर उपस्थित लोगों में दाओंग वोएरिरोंग भी थे, जो अलौकिक प्राणियों को बुलाने की अपनी क्षमता के लिए प्रसिद्ध थे। जैसे ही राजा रेरोंग चबूतरे पर चढ़े, आकाश में घने बादल और घूमती हुई धुंध छा गई।

बादलों के बीच से दो अलौकिक आकृतियाँ प्रकट हुईं, जो कोहरे की धाराओं पर सवार थीं। उनकी सुनहरी दाढ़ी और लहराते सुनहरे बाल उन्हें सांसारिक जगत के किसी भी ज्ञात पुरुष से अलग करते थे। वे एक भव्य रथ पर सवार थे, जो अजगरों और फीनिक्सों से सजा हुआ था और जिसे विशाल हरे सींगरहित अजगर खींच रहे थे। उनके वस्त्र चमकदार पंखों से सिले हुए थे, जिनसे एक अलौकिक आभा निकल रही थी। राजा रेरेओंग ने उनके दिव्य स्वरूप को पहचानते हुए, उन्हें तुरंत सर्वोच्च सम्मान के सिंहासन पर आमंत्रित किया। उनके आगमन के समय,

देश में भीषण सूखा पड़ा हुआ था, मिट्टी फटी हुई और बंजर थी, और पेड़ इतने सूखे थे कि एक छोटी सी चिंगारी भी उन्हें आग की लपटों में बदल देती थी। दिव्य आगंतुकों में से एक ने गहरी, गूंजती हुई आवाज में गाते हुए घोषणा की: मैं बर्फ और पाला बुला सकता हूँ।
जैसे ही उसने गहरी सांस ली, आकाश गहरा गया, घने बादल घिर आए और जल्द ही बर्फ के टुकड़े हवा में बेतहाशा उड़ने लगे। महल में कड़ाके की ठंड फैल गई और तालाब व कुएँ ठोस बर्फ में बदल गए, इतनी ठोस कि उनसे मूर्तियाँ बनाई जा सकती थीं।
फिर दूसरे आगंतुक ने अपनी उंगलियों से सीटों की ओर इशारा करते हुए बोलना शुरू किया। उसने गाना गाया।
मैं दृश्य को बेहद गर्म बना सकता हूँ।
महल में तुरंत ही एक गर्म हवा का झोंका आया, जिसने पाले को दूर भगा दिया और वातावरण में संतुलन बहाल कर दिया।

टिप्पणी
सुनहरे बालों वाली, ड्रैगन पर सवार आकृतियाँ संभवतः 7D क्षेत्र से आए पक्षी-सिर वाले मानवाकार प्राणी थे, जो आंशिक रूप से छलावरण वाले रूप में प्रकट हुए थे जहाँ उनकी चोंच का रंग उनके सुनहरे बालों में प्रतिबिंबित होता था।

मौसम के साथ उनका लापरवाही भरा व्यवहार निम्नलिखित संकेत देता है:

• ऊर्जा का दोहन करने में निपुणता
• मौसम प्रणालियों को टेलीपोर्ट करने और आयामों को बदलने की क्षमता
• त्रिआयामी वास्तविकता में कंपन आवृत्ति संरचनाओं पर सीधा नियंत्रण

विदेशी भूमि से भेंट
इस दौरान, विदेशी गणमान्य व्यक्ति भेंट लेकर आए - जिनमें अद्भुत शिल्प कौशल से बनी जेड की मूर्तियाँ और रहस्यमय पत्थर के दर्पण शामिल थे। ये पत्थर के दर्पण, जिन्हें 'चंद्रमा दर्पण' के नाम से जाना जाता था, चाँदी के चाँद की तरह सफेद थे और इनमें एक रहस्यमयी क्षमता थी: इनमें देखने पर ऐसा लगता था मानो किसी की त्वचा पर अभी-अभी चमकती बर्फ पड़ी हो, जिससे एक अलौकिक आभा उत्पन्न होती थी। जेड की मूर्तियाँ साधारण नक्काशी से बिल्कुल अलग थीं। इनमें जटिल यंत्रों का प्रयोग किया गया था, और ये एक छिपे हुए जोड़-बटन को दबाने मात्र से अपने आप हिलने-डुलने और घूमने में सक्षम थीं।

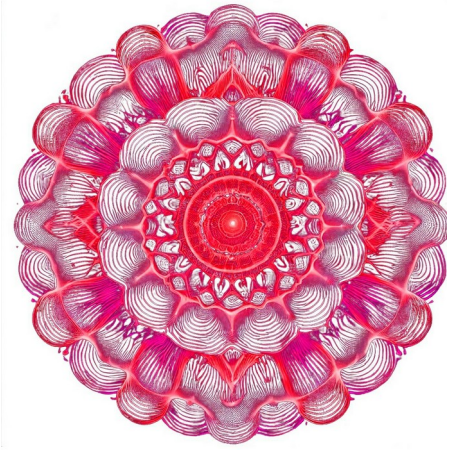

जैसे-जैसे असाधारण घटनाएँ घटित हुईं, दाओंग वोएरीरोंग ने राजा रेरेओंग की ओर मुड़कर घोषणा की:
ये चमत्कार आपके पवित्र सद्गुण की अभिव्यक्ति हैं, एक प्रतिबिंब हैं आपकी दिव्य उपस्थिति।
हालांकि, चापलूसी और छल से भरे उनके शब्द टीव के लोगों को रास नहीं आए। उन्हें शक था कि उनकी प्रशंसा राजा को मोहित करने के इरादे से की गई थी, इसलिए उन्होंने दाओंग वोएरिरोंग को मृत्युदंड दे दिया। उनकी मृत्यु के समय उनका रक्त पत्थरों और जैस्पर में परिवर्तित हो गया, जबकि उनका शरीर रहस्यमय तरीके से बिना किसी निशान के गायब हो गया।

गेहासोंगा के गेहरार गेइर्नपाओंग की रहस्यमय आकृति
टीव के राजा रेरेओंग के शासनकाल के दौरान, गेहरार गेइर्नपाओंग नामक एक रहस्यमय व्यक्ति निवास करता था, जो दूर स्थित गेहासोंगा राज्य से आया था। वह असाधारण शिल्प कौशल और रहस्यमय गुणों से युक्त उपहार लेकर टीव के दरबार में पहुंचा।
उनकी श्रद्धांजलि में जेड पत्थर से बना एक ऊंट शामिल था, जिसकी ऊंचाई 1.17 मीटर थी और जिसे इतनी सटीकता से तराशा गया था कि उसकी सतह लगभग सजीव प्रतीत

होती थी, साथ ही एक फीनिक्स पक्षी भी था, जिसे बाघ जैसी आकृतियों से जटिल रूप से डिजाइन किया गया था और जिसकी लंबाई 1.41 मीटर थी।

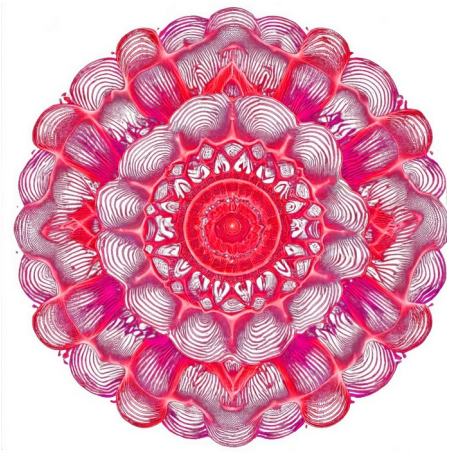

एक विशाल ऊँचाई, जो राजसी और अलौकिक उपस्थिति का अनुभव कराती है, और ज्वालामय मिश्र धातु दर्पण, 0.7 मीटर चौड़ा एक पॉलिश किया हुआ कलाकृति, जिसमें एक अद्भुत क्षमता है - घोर अंधेरे में रखे जाने पर भी, यह दिन के दृश्यों को पूर्ण स्पष्टता से प्रतिबिंबित कर सकता है। इसके अलावा, दर्पण में एक सजीव गुण समाहित था, जो इसके सामने बोले गए किसी भी शब्द पर श्रव्य प्रतिक्रिया देने में सक्षम था।

गेहरार गेइर्नपाओंग की अलौकिक उपस्थिति
गेहरार गेइर्नपाओंग स्वयं एक प्रभावशाली व्यक्तित्व थे, जिनकी लंबाई 2.35 मीटर थी और उनके घुटने तक लंबे, बिखरे हुए बाल उनके चारों ओर लहराते थे। उनके बाएं और दाएं हाथों की हथेलियों पर, सिंदूरी स्याही से ग्रहण लगे सूर्य और पूर्ण सूर्य और चंद्रमा के चिन्ह बने हुए थे। ये चिन्ह केवल सजावटी नहीं थे - सक्रिय होने पर, ये एक चमकदार रोशनी उत्सर्जित कर सकते थे, जो 100 कदम के दायरे में सब कुछ रोशन कर देती थी। उनकी उपस्थिति और

शक्ति इतनी प्रबल थी कि टीव के लोग उन्हें एक दिव्य प्राणी, मनुष्यों के बीच एक देवता के रूप में पूजते थे।
राजा रेरेओंग के शासनकाल के अंत तक, गेहरार गेइर्नपाओंग का कोई निशान नहीं मिला और वे गायब हो गए, उनका भाग्य अज्ञात रहा। कुछ लोगों का मानना था कि वे स्वर्गलोक चले गए थे, जबकि अन्य दबी आवाज़ में कहते थे कि वे गेहासोंगा की गुप्त भूमि में लौट गए थे, और अपने साथ ऐसे रहस्य ले गए थे जो मनुष्य की समझ से परे थे।

टिप्पणी
• गेहासोंगा संभवतः इंडो-यूरोपीय 'गावा-सोग्डिया' को संदर्भित करता है। एंड्रोनोवो संस्कृति से उत्पन्न सभ्यता (जो पश्चिमी स्टेपी से पूर्वी स्टेपी तक फैले सिथो-साका क्षेत्र की स्थापना के लिए जिम्मेदार थी), कजाख स्टेपी और माउंट तेंगरी ताघ (निर्देशांक: 42° 0′ 0″ उत्तर, 80° 0′ 0″ पूर्व) की तलहटी में अग्रणी बस्तियाँ स्थापित करती है।

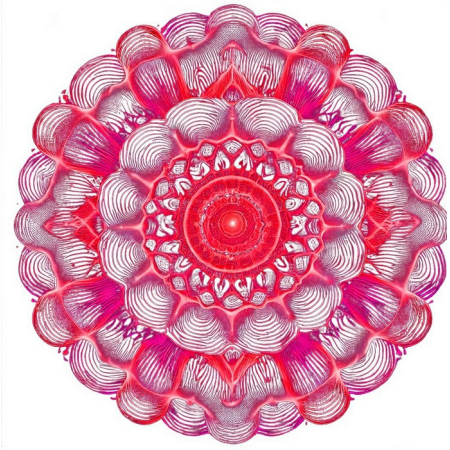

• फ्लेमिंग अलॉय मिरर की बात करें तो, यह कंपन-आधारित इंजीनियरिंग द्वारा निर्मित था।
यह कलाकृति, उच्च-आयामी आवृत्ति संरचनाओं और नैनो तकनीक-स्तर की आत्म-संलग्नता से युक्त है, जो एक मिज़-एन-एबाइम उपकरण के रूप में कार्य करती है। इसकी स्व-प्रतिकृति और पुनरावर्ती प्रकृति ने 3D क्षेत्र से बंधी किसी भी चीज़ को उच्च आयामों से जोड़ दिया होगा।
सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

श्रीये-मास्टर कमीराओंग्स: संगीत और भविष्यवाणी के नेत्रहीन ऋषि

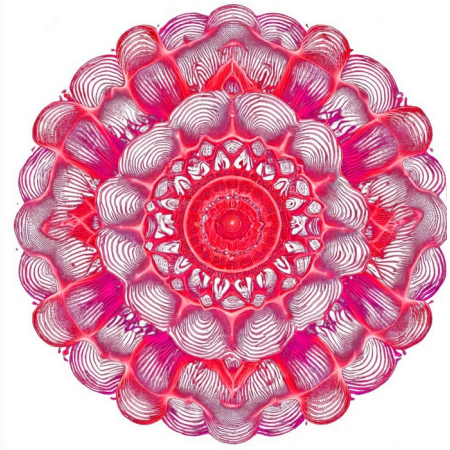

श्रीये-मास्टर कमीराओंग्स, जिनका जन्म त्सेन्स के ड्यूक राजा रेरेओंग द डिवाइन (खंडित टीव संघ के अधीन ड्यूक साम्राज्य, जो अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा था) के शासनकाल में हुआ था, संगीत की देखरेख के लिए जिम्मेदार एक प्रतिष्ठित अधिकारी थे। वे न केवल एक असाधारण रूप से कुशल संगीतकार थे, बल्कि सैन्य रणनीति के भी विशेषज्ञ थे, जिन्होंने सैन्य मामलों पर 10,000 रचनाएँ लिखी थीं। फिर भी, अपनी प्रसिद्धि के बावजूद, उनके समकालीनों के लिए उनकी उत्पत्ति एक रहस्य बनी रही और उनकी जीवन कहानी अस्पष्टता में डूबी रही।
त्सेन्स के शांतिदूत ड्यूक राजा ब्रेओंग के समय तक, श्रीये-मास्टर क्मीरॉन्ग्स ने कुआहरूम और लाओंग में अपनी महारत के लिए अद्वितीय प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी - ये द्वैतवादी काले-सफेद (और उनके सूक्ष्म मध्यवर्ती रूप) अनुशासन हैं जिनसे बुक ऑफ चेंजेस व्युत्पन्न हुई थी - जिसमें अंतर-आयामी ब्रह्मांडीय अंक-बोध और पठन शामिल है, जो प्राचीन स्कैपुलीमैंसी वैकल्पिक विज्ञान प्रणाली का एक विकसित और अधिक संरचित (जनता के लिए इसकी बोधगम्यता के संदर्भ में) रूपांतरण है।

सांसारिक मोह-माया से परे जाने के दृढ़ संकल्प के साथ, उन्होंने जानबूझकर अपनी आँखों को आग से झुलसाकर अंधा कर लिया। उनका मानना था कि दृष्टिहीन आत्मनिरीक्षण से वास्तविकता को नियंत्रित करने वाले दिव्य सामंजस्य के साथ उनका जुड़ाव गहरा होगा। उनके बलिदान का फल मिला - उन्होंने संगीत सिद्धांत और रचना को अपने विश्लेषणात्मक उपकरणों के रूप में उपयोग करते हुए, चारों ऋतुओं के सूक्ष्मतम परिवर्तनों के साथ-साथ उनके बीच के संक्रमणकालीन चरणों का सटीक रूप से पता लगाने की क्षमता प्राप्त की। उनके निष्कर्ष अचूक थे और विज्ञान, रहस्यवाद और कला के एक उल्लेखनीय मिश्रण के रूप में व्यापक रूप से सराहे गए। अपने जीवन के अंतिम क्षणों में, श्रीये- मास्टर कमीराओंग्स ने अपनी सर्वोत्कृष्ट कृति, 'प्रीशियस चार्म' नामक एक विशाल रचना लिखी, जो 100 खंडों में फैली हुई है। कहा जाता है कि उन्होंने इसके पन्नों में अपने समय के सबसे गहन गूढ़ ज्ञान को दर्ज किया था, लेकिन दुखद रूप से, यह अमूल्य कृति महाद्वीपीय पूर्वी एशिया में युद्धरत राज्यों के काल के विनाशकारी युद्धों के बीच खो गई, जो खंडित टीव संघ के अधीन युवा मैदानी हिमालयी भूमि थी।

गेरूल गेर्निरल, कक्षीय सूर्य पर्वत के एकांतवासी ऋषि

गेरूल गेर्निरल टीव युग के उत्तरार्ध में, पश्चिम में स्थित चैम्बर्ड सन माउंटेन में रहते थे और उन्होंने संसार से एकांत जीवन व्यतीत करना चुना था। उनका एकमात्र संपर्क पाँच सुनहरे बालों वाले वृद्ध पुरुषों से था, जिनमें से कुछ विशाल हंसों और सारसों पर सवार होते थे, जबकि अन्य पंखों से ढके होते थे। इन प्राणियों की कुछ विशिष्ट विशेषताएं थीं, जैसे कि सिर के शीर्ष पर स्थित कान, चौकोर पुतलियाँ और जेड के समान चमकते हुए गोरे चेहरे। प्रत्येक व्यक्ति के पास एक बांस की छड़ी होती थी और वे सभी गेरूल गेर्निरल के साथ आकाशीय और ब्रह्मांडीय परिवर्तनों पर चर्चा करते थे।

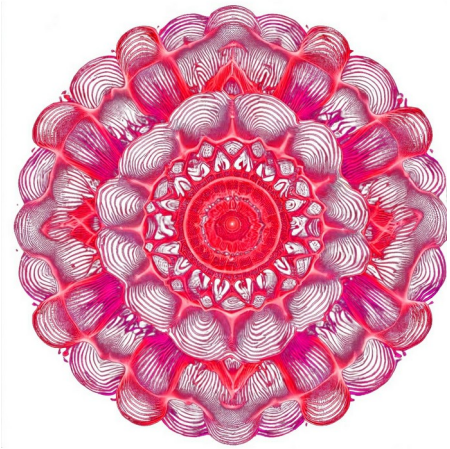

अंततः, गेरूल गेर्निरल ने अपने एकांतवासी जीवन से 'व्यावहारिक एकांतवासी जीवन' की ओर रुख किया और सरकारी अभिलेखागार का पदभार ग्रहण किया। इस समय, ज्ञात दुनिया भर से गूढ़ ज्ञान, आध्यात्मिक उन्नति की खोज करने वाले और विद्वान उनसे मिलने के लिए उमड़ पड़े, जो उनका मार्गदर्शन पाने के लिए उत्सुक थे। वे पाँचों बुजुर्ग पुरुष वास्तव में पाँचों ब्रह्मांडीय दिशाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले देवता थे।

टिप्पणी
पंखों से ढके, सारस की सवारी करने वाले बुजुर्ग संभवतः ये थे:

• होमो सबटेरेनियस ऐसे प्राणी थे जिन्हें आंशिक रूप से पक्षी के सिर प्राप्त हुए थे
मानव जैसी शक्तियां।
• उनके सुनहरे बाल और पंख संभवतः उस क्षेत्र के रंग को दर्शाते थे।
पक्षी के सिर वाले मानवाकृतियों की चोंच।
• बांस की छड़ें टेढ़ी-मेढ़ी चबूतरे का प्रतीक हो सकती हैं, जो एक आयामी संरचना है।
त्रिविमीय (3D) और पंचविमीय (5D) में स्थित भूमिगत होमो सबटेरेनियस (Homo Subterreneus) जगत के बीच का सेतु।

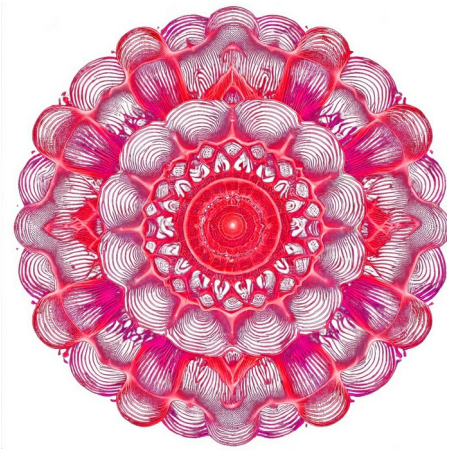

मब्रोडेरे के दिव्य लेखकों का उपहार - तैरता हुआ राज्य
मब्रोडेरे के अस्थाई राज्य ने टीव को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दो 'समूह' पुरुषों को भेंट किए - ये ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें पुस्तक लेखन की कला में गूढ़ महारत प्राप्त थी। इन रहस्यमय प्राणियों का रूप निरंतर बदलता रहता था, जिनमें इच्छा अनुसार वृद्ध और युवा होना, आंशिक रूप से दृश्यमान होना, केवल परछाई के रूप में प्रकट होना और कभी-कभी पूरी तरह से अदृश्य हो जाना शामिल था, फिर भी उनकी आवाजें श्रव्य बनी रहती थीं।

अपनी भुजाओं और कोहनियों के बीच से उन्होंने एक सोने का घड़ा निकाला, जिसकी लंबाई ठीक 9.4 सेंटीमीटर थी। उस पर पांच ड्रैगन के आकार के लेबल लगे थे और वह हरी मिट्टी से सीलबंद था। उसके अंदर गहरे काले रंग की स्याही थी, जो शुद्ध लाह जितनी गाढ़ी थी। जब इस स्याही को जमीन या पत्थर की सतहों पर छिड़का जाता था, तो यह स्कैपुलीमैंसी के लिए इस्तेमाल होने वाले ओरेकल बोन शिलालेखों में प्रयुक्त लोगोग्राम या कांसे की कलाकृतियों पर देखी जाने वाली सरलीकृत लिपि में परिवर्तित हो जाती थी।

टिप्पणी
• 'तैरती हुई अवस्था' में 'तैरता हुआ' शब्द यह दर्शाता है कि म्ब्रूडेरे अस्तित्व में था।
मध्य-महासागरीय कटक, भूमिगत लावा सुरंगों या अंतर-आयामी क्षेत्रों में गहरे समुद्र के क्षेत्र के भीतर। उन्होंने संभवतः युवा ड्रायस के दौरान वैश्विक महाबाढ़ का उपयोग कुमारी कंडम, मु और अटलांटिस नामक तीन उन्नत सभ्यताओं के बीच अपने मूल ठिकानों से इस प्रकार की उन्नत उच्च-आयामी अवस्था प्राप्त करने के अवसर/छलावरण के रूप में किया।

• वे दोनों व्यक्ति शायद आधे यांत्रिक, आधे जैविक सेवक रहे होंगे।
उच्च आयामी इकाइयाँ, जो एंड्रॉइड के समान कार्य करती हैं।
• उनकी इच्छा अनुसार उम्र बढ़ने या गायब होने की क्षमता पूर्ण निपुणता को दर्शाती है।
आयामों का स्थानांतरण और समय का उत्क्रमण।
• उनके जग को सील करने वाली हरी मिट्टी में संभवतः अत्यधिक सांद्रित पदार्थ मौजूद था।
सातवें आयाम के क्षेत्र से क्वांटम स्तर पर कंपन आवृत्तियाँ और विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, जो वृक्षों की तीव्र वृद्धि से संचालित होते हैं, जो सातवें आयाम में एक प्रमुख सृजनात्मक शक्ति है।

ज्ञान के लिए परम बलिदान और किररूल तंत्र और सद्गुण की पुस्तक
गेरूल गेर्निरल के मार्गदर्शन में, दो दिव्य लेखकों ने किरूल मैकेनिज़्म और सद्गुण की पुस्तक, जिसे मार्ग की पुस्तक के रूप में भी जाना जाता है, की प्रतिलिपि बनाई। यह एक विशाल ग्रंथ है जिसमें ब्रह्मांड और वास्तविकता की उत्पत्ति (सृष्टिकर्ता शक्ति, लचीलापन और वास्तविकता के प्रकटीकरण का अर्ध-निर्धारण); अंतर-आयामी अस्तित्व की यांत्रिकी (त्रि-आयामी वास्तविकता एक व्यापक निरंतरता का केवल एक हिस्सा है); और मानव जीवन की प्रकृति (किसी व्यक्ति के विद्युत चुम्बकीय और कंपन-आवृत्ति संरेखण के संबंध में भाग्य का प्रकटीकरण) का विस्तृत वर्णन है।

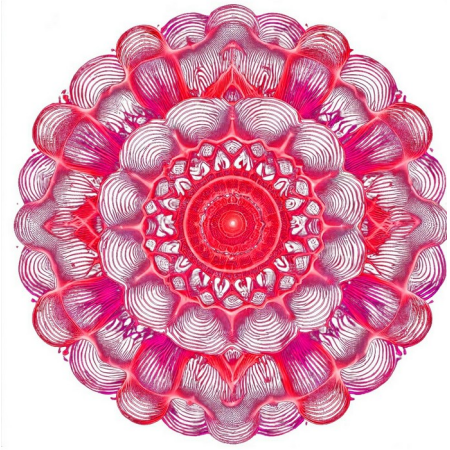

सूक्ष्म-व्यक्तिगत और वृहत्तर-सामूहिक दोनों स्तरों पर वास्तविकता का वर्णन करने वाली इस पुस्तक को लगभग एक लाख शब्दों में लिखा गया था। इसे सावधानीपूर्वक जेड की पट्टियों पर उकेरा गया, सोने की रस्सी से बांधकर जेड के बक्से में रखा गया। पुस्तक को परिष्कृत करने के प्रति उनका समर्पण इतना अटूट था कि प्रत्येक लेखन सत्र के अंत तक वे पूरी तरह से थक जाते थे। जब सोने की स्याही का पात्र सूख जाता था, तो वे बलिदान का एक चरम कार्य करते थे, जिसमें अपने हृदय को निकालकर, अपने रक्त को स्याही के रूप में जेड की पट्टियों पर टपकाना और अपनी खोपड़ी को छेदकर अपनी मज्जा को तेल के रूप में उपयोग करना शामिल था, जिससे वे अपने दीयों को जलाए रख सकें। जब उनका रक्त और मज्जा पूरी तरह से समाप्त हो जाता था, तो वे पुनर्जीवन के अपने अंतिम साधन का सहारा लेते थे - अपनी बाहों के भीतर से एक जेड पाइप निकालते थे, जिसमें एक पाउडरयुक्त अमृत होता था। इस अमृत को अपने शरीर पर लगाने पर, वे तुरंत अपनी मूल अवस्था में लौट आते थे, उनके सभी अंग, रक्त संचार और जीवन शक्ति पूरी तरह से पुनः प्राप्त हो जाते थे। जैसे ही पांडुलिपि पूरी होने के करीब पहुंची, गेरूल गेर्निरल ने अपना अंतिम निर्देश जारी किया:

'सभी जटिल और भ्रामक हिस्सों को हटा दें, और केवल 5,000 शब्द ही रहने दें।'

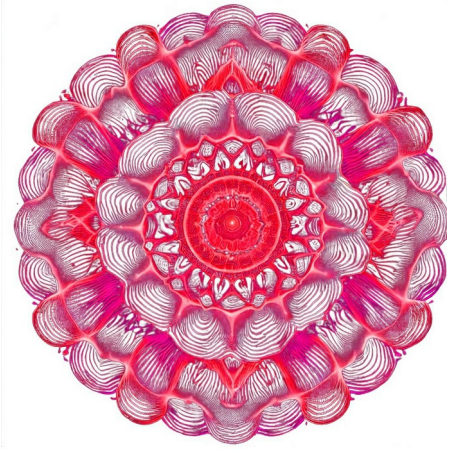

किरेरूल तंत्र और सद्गुण की पुस्तक (मार्ग की पुस्तक) के अंतिम संस्करण को पूरा करने के बाद, दोनों दिव्य लेखक बिना किसी निशान के गायब हो गए - फिर कभी दिखाई नहीं दिए।

टिप्पणी
जीवित रहते हुए अपने स्वयं के रक्त और अस्थि मज्जा को निकालने की उनकी क्षमता से यह संकेत मिलता है:
• उनका चयापचय उच्च-आयामी ऊर्जा द्वारा संचालित होता था।
स्रोत
उनके रक्त में विद्युत चुम्बकीय कण मौजूद थे जो जीवन को संभव बनाते थे। कंपन के रूप में
• उनके लेखन सामग्री के चयन से गहन ज्ञान का संकेत मिलता है।
कंपन संरचनाएं और त्रि-आयामी दुनिया को उच्चतर लोकों के साथ कैसे संरेखित किया जाए।
• पुस्तक पूरी करने के बाद उनके अज्ञात भाग्य से उनके भविष्य के बारे में स्पष्ट संकेत मिलता है।
उच्च आयामों में लौटें।

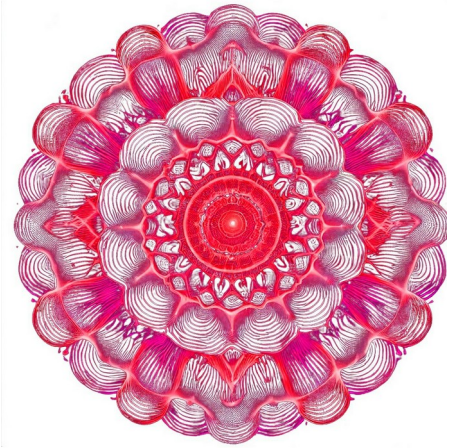

श्रीये-मास्टर क्वोईन: ऋतुओं का संगीतकार
श्रीये-मास्टर क्वोएन ने वोरात के ड्यूक राजा रेरेओंग द डिवाइन (खंडित टीव संघ के अधीन ड्यूक साम्राज्य, जो अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा था) के शासनकाल में एक सरकारी अधिकारी के रूप में कार्य किया। उनके पास विभिन्न युगों के संगीत की नकल करने की असाधारण क्षमता थी, साथ ही उन्होंने प्राचीन रचनाओं को प्रतिस्थापित करने के उद्देश्य से नई रचनाओं का भी आविष्कार किया। उनकी विशेषज्ञता केवल नकल तक ही सीमित नहीं थी - उन्होंने अद्वितीय रूप से निर्मित और सौंदर्यपूर्ण रूप से उल्लेखनीय वाद्ययंत्रों का उपयोग करते हुए, चारों ऋतुओं में सूक्ष्म ऊर्जा परिवर्तनों को समाहित करने वाला संगीत रचा।
प्रत्येक ऋतु के लिए, उन्होंने उसकी आत्मा को प्रतिबिंबित करने वाली विशिष्ट संगीत रचनाएँ तैयार कीं: वसंत ऋतु, विदा होते हंस, उड़ते हंस और गूंजता जल तिपतिया घास; ग्रीष्म ऋतु, उज्ज्वल सुबह, झुलसा देने वाला फव्वारा, लाल फूल और बहता सोना; शरद ऋतु, मधुर हवा, सफेद बादल, गिरते पत्ते और रसभरी की कलकल; शीत ऋतु, जमी हुई नदी, बहता हुआ अंधकार और डूबते बादल। श्रीये-मास्टर क्वोईन ने स्वयं ड्यूक किंग रेरेओंग के लिए इन मौसमी

रचनाओं का प्रदर्शन किया, जिससे संगीत के माध्यम से प्रकृति के परिवर्तनों की एक नई श्रव्य व्याख्या प्रस्तुत हुई।

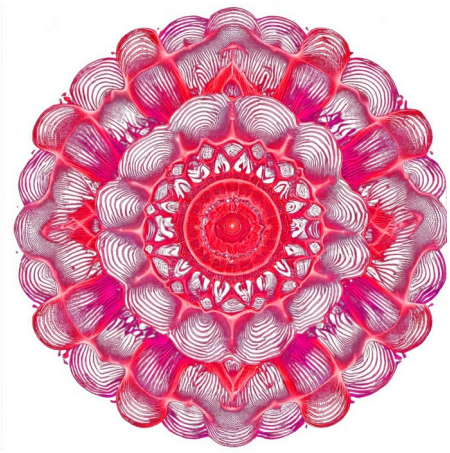

इस नई प्रथा के बारे में जानने पर, वोरात ड्यूक साम्राज्य के उच्च अधिकारी बूंग पेराक्रोक, ड्यूक राजा रेरेओंग को चेतावनी देने के लिए महल की ओर दौड़े। उन्होंने कड़े शब्दों में चेतावनी दी:
‘यद्यपि श्री-मास्टर क्वोईन की चारों ऋतुओं के लिए रचित रचनाएँ प्रकृति की गतिशील लय को समाहित करती हैं, परन्तु अंततः वे एक ऐसी संगीत रचना करती हैं जो मन को भ्रमित कर देती है। उनकी रचनाएँ प्राचीन संगीत संरचनाओं से मौलिक रूप से भिन्न हैं—जैसे कि राजकीय लोकगीतों की धुनें, स्तुतिगान और भजन— जो कि स्तुतिगान की पुस्तक स्टिरक्लेरोंग में संरक्षित हैं; इन सभी की जड़ें प्राचीन मैदानी और नव-मैत्रीपूर्ण हिमालयी क्षेत्रों में हैं। ये सदियों पुरानी परंपराएँ, जो बीते युगों के ज्ञान से आकारित हैं, दरबारी स्तुतिगान और अनुष्ठानों के साधन के रूप में कार्य करती हैं। अतः, मैं उचित विवेक से इन नई रचनाओं की अनुशंसा महामहिम के समक्ष नहीं कर सकता।’ अपने उच्च अधिकारी की सलाह को गंभीरता से लेते हुए, ड्यूक राजा रेरेओंग ने नए मौसमी संगीत सुनना बंद कर दिया और अपना ध्यान राजकीय मामलों पर

केंद्रित कर दिया। उनके इस निर्णय की उनके दरबारी अधिकारियों और जनता दोनों ने व्यापक रूप से प्रशंसा की, जिन्होंने मंत्रियों की सलाह को स्वीकार करने की उनकी तत्परता की सराहना की।

श्रीआई-मास्टर क्वोइन का पतन
पश्चाताप से व्याकुल होकर, श्रीये-मास्टर क्वोईन को इस बात का गहरा अफसोस हुआ कि उनकी रचनाओं ने प्राचीन संगीत परंपराओं की मूलभूत कंपन संरचनाओं का उल्लंघन किया था, जैसा कि स्टिरक्लेरेओंग (गीतों की पुस्तक) में वर्णित है। उन्होंने अपने कार्य को दरबारी संगीत व्यवस्था के साथ विश्वासघात माना और यह मानते हुए कि उन्होंने एक दरबारी के रूप में अपनी ईमानदारी खो दी है, उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और एकांतवास में चले गए।

हालांकि, बूंग पेराक्रोक ने नई रचनाओं को अस्वीकार करने तक ही सीमित नहीं रहे। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आने वाली पीढ़ियां ऐसी संगीत तकनीकों को न तो दोहरा सकें और न ही आगे विकसित कर सकें, उन्होंने श्रीये-मास्टर क्वोएन के सभी संगीत वाद्ययंत्रों को सार्वजनिक रूप से जलाने का आदेश दिया। यह प्रतीकात्मक विनाश राजधानी के सुव्यवस्थित सड़क तंत्र के

व्यस्त केंद्रीय चौराहे पर हुआ, जो क्वोएन के क्रांतिकारी संगीत नवाचारों का निर्णायक अंत था।

टिप्पणी
• बूंग पेराक्रोक ने प्राचीन कंपन की शुद्धता की रक्षा करने का प्रयास किया।
संगीत के क्षेत्र में, यह विश्वास रखते हुए कि नवीनीकरण मूल ब्रह्मांडीय सामंजस्य को पार या विकृत नहीं करना चाहिए।
• हालाँकि, उपकरणों को जलाने का उनका क्रांतिकारी कृत्य यह दर्शाता है कि वह
चेतना के पुनर्संयोजन पर पूर्ण महारत का अभाव था, क्योंकि सच्ची बुद्धिमत्ता पूर्ण विनाश और व्यावहारिक पुनर्निर्देशन की कमी के बजाय संतुलित नवाचार को पहचानती और सलाह देती है।

सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

कौवे को देखने की छत और ब्रोमलरूल की समृद्धि का उदय

जब वोआत के ड्यूक राजा केरोडज़ानल (जो केरोंग/यांग्त्ज़ी नदी डेल्टा के दक्षिणी तट के दक्षिण में स्थित है, जिसके उत्तर में केरोंग नदी, लगभग चारों ओर विशाल झीलें और पूर्व में पश्चिमी प्रशांत महासागर का सीमांत सागर है) ने सैन्य शून्य के बाद अपनी सेना को ओंगवोएरा के ड्यूक साम्राज्य

(जो केरोंग/यांग्त्ज़ी नदी डेल्टा के उत्तरी और दक्षिणी दोनों तटों पर फैला हुआ है - वोआत क्रा-दाई-ऑस्ट्रोनेशियन 'बाहरी साम्राज्य' था और ओंगवोएरा एक परिधीय ड्यूक साम्राज्य था जिसमें महत्वपूर्ण क्रा-दाई-होंग-मिएन अवशेष थे जो मुख्य रूप से सांस्कृतिक रूप से युवा मैदानी हिमालयी खंडित टीव परिसंघ के सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र में एकीकृत होने का प्रयास कर रहे थे) में ले गए, तो रहस्यमय रूप से लाल कौवों ने उनका पीछा किया।

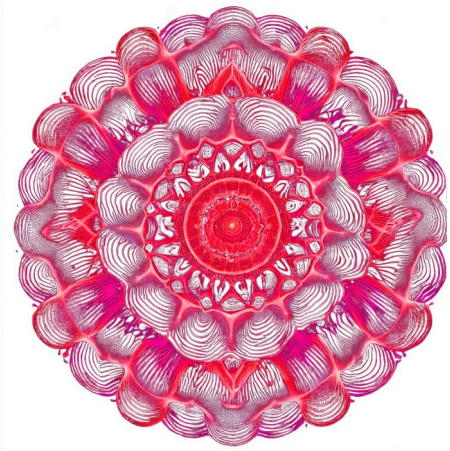

अपने ड्यूक साम्राज्य को क्षेत्रीय आधिपत्य के रूप में सफलतापूर्वक स्थापित करने के बाद, केरोडज़ानल ने लाल कौवों को दिव्यता के शगुन और अपनी विजय से जुड़ी एक रहस्यमय शक्ति के रूप में देखते हुए, उनकी उपस्थिति को स्मरण करने के लिए कौवा दर्शन चबूतरे के निर्माण का आदेश दिया।

ब्रोमलरूल, द जनरलिसिमो ऑफ वोआट
ब्रोमलरोल ने ड्यूक राजा केरोडज़ानल के अधीन वोआत के उच्च अधिकारी और सेनापति के रूप में कार्य किया। उनके आधिकारिक कर्तव्यों और निजी व्यापारिक सौदों से होने वाला दैनिक सकल लाभ इतना विशाल था कि उसकी गणना

केवल सोने के गट्ठों में ही की जा सकती थी। उनकी संपत्ति और प्रभाव अभूतपूर्व थे - उनके पास दस हजार नौकरों का एक बड़ा परिवार था, जो सभी लेखांकन और वित्तीय प्रबंधन में कुशल थे।
अपनी अपार आर्थिक शक्ति के बल पर, ब्रोमलरोल ने विश्वभर से दुर्लभ वस्तुएँ प्राप्त कीं और ड्यूक साम्राज्य की राजधानी वोआत में खजाना जमा किया। उसकी महत्वाकांक्षा केवल धन इकट्ठा करना ही नहीं थी, बल्कि उनसे उत्कृष्ट बर्तन और कलाकृतियाँ बनाना भी था, जिससे भौतिक कला के माध्यम से धन का प्रदर्शन हो सके। शहर में तांबे और लोहे की वस्तुओं के पहाड़नुमा ढेर लगे थे, जबकि अन्य मूल्यवान वस्तुएँ गहरे कुओं में छिपाई गई थीं, जिसके कारण इस शहर का नाम 'खजाने का कुआँ' पड़ा।

भौतिक धन-दौलत से परे, ब्रोमलरोल की विलासिता मानवीय क्षेत्र तक फैली हुई थी। वोआत के शयनकक्ष अत्यंत सुंदर महिलाओं से सजे हुए थे, जिनका वर्णन खिलते फूलों की तरह तेजस्वी और चांदनी की तरह दमकती हुई किया गया था।
वेश्याओं और रखेलों का यह समूह 'मनोरंजन महल' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।
ब्रोमलरोल की दौलत और फिजूलखर्ची का इतिहास में कोई सानी नहीं थी।

प्राचीन काल से लेकर आज तक किसी ने भी इतनी दौलत जमा नहीं की थी और न ही उसका इतना प्रदर्शन किया था।

टिप्पणी
• जबकि यंगर प्लेन हिमालयी मिथकों में सुनहरे कौवे प्रतिनिधित्व करते हैं सौर देवता और पृथ्वी के केंद्र का एक गूढ़ प्रतीक हैं जो 3 डी और 7 डी पक्षी-प्रवण क्षेत्र में मौजूद हैं, लाल कौवे संभवतः उन्हीं 7 डी संस्थाओं का एक प्रकार रहे होंगे, जो केरोडज़ानल के आध्यात्मिक संरेखण और 3 डी दुनिया की कंपन संरचना पर उनके प्रभाव का आकलन करते हैं।
• ब्रोमलरोल की धन संचय की भविष्यवाणी करने और उसे निर्देशित करने की क्षमता से यह संकेत मिलता है कि
उसने वास्तविकता की विद्युत-चुंबकीय और कंपन-आवृत्ति संरचनाओं में महारत हासिल कर ली थी, जिससे उसने अपने लिए अनुकूल परिणाम तैयार किए।
तीन लुप्त सभ्यताओं के माध्यम से गूढ़ संबंध

सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

IV - 9

□□□□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□

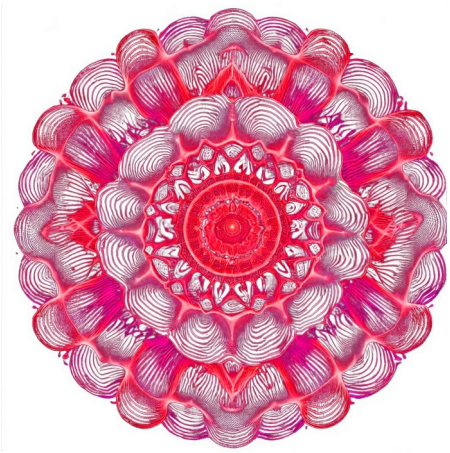

□□□□/□□□□□□ (□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□) □□ □□□□□ □□□□ □□□ □ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□, □□□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□: □□□□□□□□□□□□□□ (□□□□□ □□□ □□□□) □□ □□□□□□□□ (□□□-□□□□□ □□□□ □□□□)□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□

लालित्य के लिए प्रसिद्ध थीं। उनकी त्वचा जेड और बर्फ की तरह गोरी, जमी हुई चर्बी की तरह चिकनी थी, और वे अद्वितीय कोमलता, मौन और अनुग्रह के साथ चलती थीं, मानो किसी हल्की हवा में झूमते हुए ऑर्किड की तरह फिसल रही हों। वे इस तरह से चलती थीं कि उनके कदमों का कोई निशान नहीं छूटता था, और उन्हें कभी खाते या भूख का अनुभव करते हुए नहीं देखा गया था।

टिप्पणी
• स्वोएनकुआहवेन और डेरेमेरा का अदृश्य होना और भूख का न होना
ऐसा माना जाता है कि वे 5D में स्थित होमो सबटेरेनियस क्षेत्र से प्रकट हुए थे। जबकि उनकी उपस्थिति संभवतः ड्यूक किंग ताव के लिए एक परीक्षा थी, जो उनकी आध्यात्मिक परिष्करण और उच्च आयामों के साथ सामंजस्य का आकलन कर रही थी।

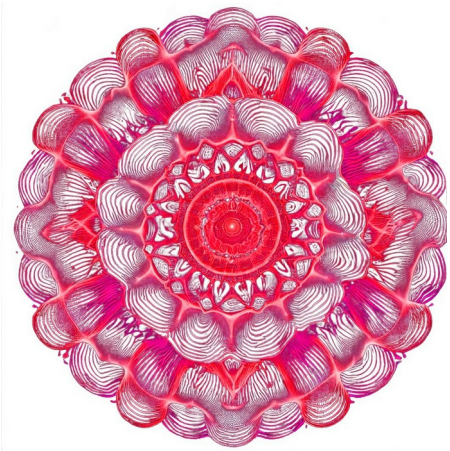

तीन दिव्य नृत्य शैलियाँ
उनकी रहस्यमय आभा को पहचानते हुए, ड्यूक राजा ताव ने उन्हें रेशम और साटन के उत्तम तम्बुओं में ठहराया, जहाँ उन्हें मलाई जैसे द्रवीकृत जमे हुए अर्ध-कीमती पत्थरों का पेय और सिंदूरी झरनों से सींचे गए अनाज परोसे जाते थे। एक दिन, ड्यूक राजा ताव राजसी सूर्यप्रकाशित बादलों के चबूतरे पर चढ़े

और स्वोएनकुआहवेन और डेरेमेरा को अपने सामने प्रदर्शन करने के लिए बुलाया। जैसे ही चबूतरे पर एक सुगंधित हवा चली, वे नाचने लगीं, उनके शरीर तैरते हुए बवंडर की तरह घूम रहे थे, मानो रुकने में असमर्थ हों।
ड्यूक किंग ताव ने उनकी ओर रंगीन रिबन उछाले, और वे तुरंत अपनी चाल बदल लीं, उनके कदम कभी ज़मीन को छूते हुए तो कभी उछलते हुए आगे बढ़ने लगे। उनके वस्त्र मनमोहक रंगों से जगमगा रहे थे, जो पहले से कहीं अधिक चमकदार थे। सिमुरघ जैसे दिखने वाले रेरोन पक्षी अपने पंख फड़फड़ाते हुए आकाश में उड़ रहे थे। उनकी मधुर आवाज़ दूर तक गूंज रही थी—इतनी कोमल और मधुर कि मानो हवा में ही घुलमिल गई हो, लगभग अदृश्य, फिर भी सर्वव्यापी।
ड्यूक किंग ताव के आदेश पर, अन्य महिला कलाकारों ने स्वोएनकुआहवेन और डेरेमेरा के साथ गाना शुरू कर दिया, ताकि दोनों नर्तकियाँ अधिक समय तक प्रदर्शन कर सकें। उन्होंने तीन अद्वितीय और दिव्य नृत्य शैलियाँ प्रदर्शित कीं: धूल के चारों ओर घूमना, जिसमें उनके हाव-भाव और मुद्राएँ इतनी कोमल थीं कि वे हवा में तैरते धूल के कणों की गति के साथ सामंजस्य बिठा लेती थीं; पंख इकट्ठा करना, जिसमें उनके कदम और हाव-भाव तरल होते हुए भी अप्रत्याशित थे, मानो हवा में दिशाहीन रूप से उड़ते पंख हों; और आलिंगन में घूमना, जिसमें उनके शरीर एक साथ तरलता से उलझते और सुलझते थे, मानो आलिंगन के लिए आगे बढ़ रहे हों और साथ ही पीछे हट रहे हों।

नृत्य का रहस्यमय परिवेश
छत पर बैठने के लिए चटाइयाँ बिछी थीं जिन पर गेहुएरीन का चित्र बना हुआ था। गेहुएरीन एक पौराणिक अर्ध-यूनिकॉर्न है, जिसका सिर ड्रैगन जैसा और शरीर बकरी जैसा है, साथ ही सींग भी हैं। बैठने की व्यवस्था में कई रत्न जड़े हुए थे, जिन्हें दूर से देखने पर धूप में नहाए बादलों, गेहुएरीन और फीनिक्स पक्षियों के चित्र दिखाई देते थे। हवा में पेरेयेलिर्क के तैरते राज्य से लाई गई कैलमस धूप की सुगंध फैली हुई थी।

इस जादुई धूप में अद्भुत गुण थे: जब इसे मिट्टी और पत्थरों पर डाला जाता था, तो जमीन से एक स्थायी सुगंध निकलती थी; जब इसे सूखे पेड़ों और मुरझाई घासों पर रखा जाता था, तो वे चमत्कारिक रूप से नए पत्तों और शाखाओं से भर जाते थे; जब इसे हड्डियों तक पहुंचने वाले गल चुके ऊतकों पर लगाया जाता था, तो मांसपेशियां और ऊतक पुनर्जीवित हो जाते थे।
ड्यूक किंग ताव ने फर्श को कैलमस अगरबत्ती के पाउडर से ढक दिया, जिससे उसकी 4-5 इंच मोटी परत बन गई। फिर उन्होंने स्वोएनकुआहवेन और डेरेमेरा को उस पर पूरे दिन नृत्य करने का निर्देश दिया। उनके नृत्य प्रदर्शन के अंत तक, अगरबत्ती से ढके फर्श पर उनके कदमों का कोई निशान नहीं बचा था - यह उनकी अलौकिक ऊर्जा और दिव्य अस्तित्व का प्रमाण था।

टिप्पणी
• फेदर गैदरर की दिव्य नृत्य शैली तेजी से बढ़ते हुए का अनुकरण करती थी।
7D पक्षी-प्रमुख क्षेत्र के वृक्ष।

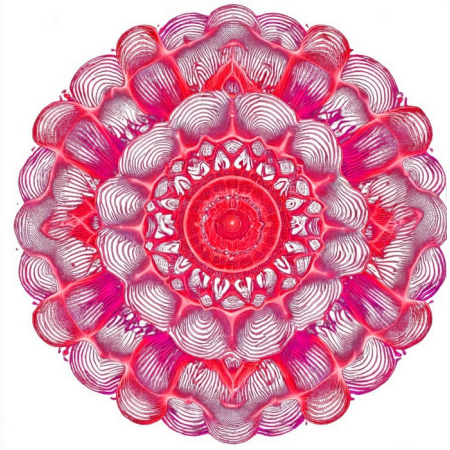

• म्ब्रूडेरे नामक तैरते राज्य की तरह, पेरायेलर्क का तैरता राज्य संभवतः यह मध्य-महासागरीय कटक पर गहरे समुद्र क्षेत्र में मौजूद था। भूमिगत लावा सुरंगें, या अंतरआयामी क्षेत्र। उन्होंने संभवतः यंगर ड्रायस के दौरान आई वैश्विक महाबाढ़ का उपयोग कुमारी कंडम, मु और अटलांटिस जैसी तीन उन्नत सभ्यताओं के बीच स्थित अपने मूल ठिकानों से इस प्रकार की उन्नत उच्च-आयामी अवस्था प्राप्त करने के अवसर/छलावरण के रूप में किया।
• नर्तकों ने अगरबत्ती की सुगंध से ढकी फर्श पर कोई पदचिह्न नहीं छोड़े, जिससे यह संकेत मिलता है कि
उनके और अगरबत्ती पाउडर के बीच पारस्परिक टेलीपोर्टेशन।

नर्तकों का रहस्यमय भाग्य
ड्यूक किंग ताव को यह विश्वास हो गया कि स्वोएनकुआहवेन और डेरेमेरा के पास अलौकिक शक्तियां हैं, इसलिए उन्होंने उनके आराम के लिए तकिए तैयार करवाए और यह फरमान जारी किया कि वे राजसी धूप से सराबोर बादलों की छत पर स्थायी रूप से रहेंगी।
ऐसा कहा जाता है कि ड्यूक राजा ताव देवताओं और अमर प्राणियों के जादू से मोहित थे, और इसी कारण रहस्यमय अंधकार आकाश की अप्सराएँ इन दो नर्तकियों

के रूप में प्रकट हुईं। ड्यूक राजा ताव के शासनकाल के अंत में, उनका पता अज्ञात हो गया। कुछ लोगों का मानना था कि वे

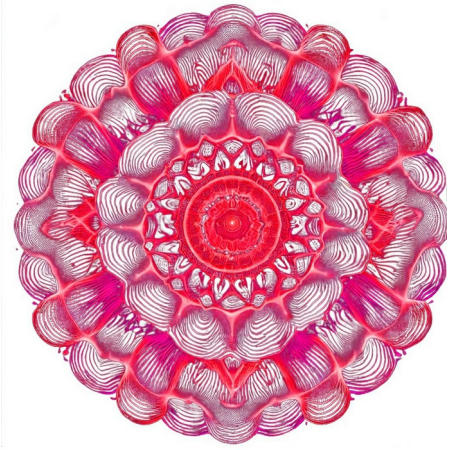

कुछ लोग अभी भी नेरार्स नदी (केरोंग/यांग्त्ज़ी नदी की एक सहायक नदी) के किनारों पर घूमते थे, जबकि अन्य लोगों ने कसम खाकर कहा कि उन्हें अलेये नदी और गेहराग नदी (पीली नदी की सहायक नदियाँ) के किनारों पर घूमते हुए देखा गया था।

ड्यूक किंग ताव की अमरता की खोज
अलनल/एलेरेस के ड्यूक राजा ताव द ल्यूमिनस के शासनकाल के चार वर्ष बाद, उन्होंने अपने मंत्री केरामस्नो को बुलाया और कहा:
मैं अमरत्व की स्थिति प्राप्त करने की आकांक्षा रखता हूं, और इसलिए, मैं इसे प्राप्त करने के तरीकों को सीखना चाहता हूं।
राजा का अनुरोध सुनने के बाद, केरामस्नो ने उत्तर दिया:
एक बार मैं माउंट ब्राइट टेरेस के आसपास घूम रहा था और मेरी मुलाकात एक बूढ़े व्यक्ति से हुई जिसके बाल सफ़ेद थे, फिर भी वह देखने में किसी युवक की तरह जवान लग रहा था। उसका चेहरा बर्फ़ और हिम की तरह बेदाग था, उसका शरीर किसी युवती की तरह सुडौल था। उसका रक्त शुद्ध था, उसकी हड्डियाँ लचीली थीं, उसका
त्वचा दृढ़ थी, और उसके आंतरिक अंग इतने हल्के थे मानो अभी-अभी बने हों।

उन्होंने माउंट बूंगरूज़ और लियोन्ग के महासागरीय महाद्वीप की यात्रा की, विशाल समुद्रों को पार किया, ऊंचे पहाड़ों और गहरे पानी को पार किया, और अनंत की भूमि तक पहुंचने के लिए कई बार जलमग्न और आरोहित दोनों अवस्थाओं से गुजरे - जहां अंततः उन्होंने अमरता का दर्जा प्राप्त किया।
उन्होंने सभी पशुवत आवेगों को दूर किया, सांसारिक मोह-माया का त्याग किया, चेतना के मूल से जुड़े अवरुद्ध ऊर्जा चैनलों को शुद्ध किया और सभी इच्छाओं को समाप्त कर दिया। इसके द्वारा वे निरंतर परम सत्य के द्वार, लीरात्सगेहरिर्क की ओर अग्रसर होने में सक्षम हुए।

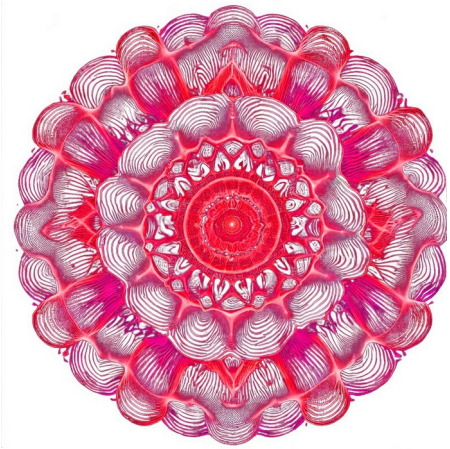

राजा का भोग-विलास से संघर्ष
इसके बाद केरामस्नो ने ड्यूक किंग ताव की सांसारिक सुखों के प्रति आसक्ति को संबोधित करते हुए कहा:
'महामहिम शारीरिक सुंदरता से मोहित हो गए हैं, स्वादिष्ट व्यंजनों के सेवन से बिगड़ गए हैं, और मनमोहक महिलाओं के बड़े समूहों से घिरे हुए हैं।'

अपने सौंदर्य के मापदंड के अनुसार, आप इन महिलाओं के चेहरे की विशेषताओं की तुलना जेड की मूर्तियों से करते हैं, और इस बात से भयभीत रहते हैं कि

कहीं वे उन मानकों पर खरी न उतरें। आप उनकी कमर की छटा, उनके दांतों की सफेदी की जांच करते हैं, और सोचते हैं कि क्या वे स्वर्ग की परियों को टक्कर दे सकती हैं।
लेकिन जब अमरता की आपकी खोज की बात आती है - अमर लोगों की पौराणिक भूमि में विचरण करने की आपकी इच्छा की - तो उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आप जो कर रहे हैं वह एक छोटे से प्याले शराब से विशाल समुद्र को मापने की कोशिश करने या केवल एक मिलीमीटर के पैमाने से सूर्य और चंद्रमा को मापने के समान है।

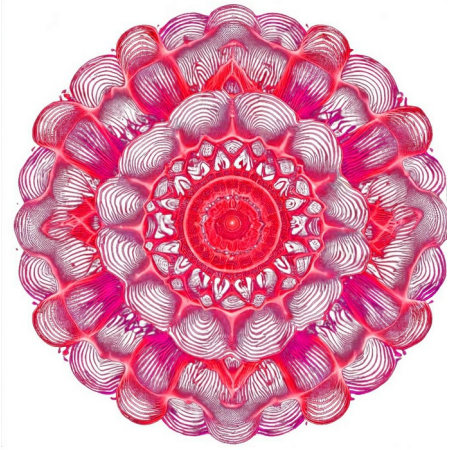

तो फिर आप अपनी आकांक्षाओं को साकार करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?

ड्यूक किंग टॉ का रूपांतरण
केरामस्नो की चेतावनी सुनकर, ड्यूक राजा ताव ने सौंदर्य और विलासिता में लिप्त होने का त्याग कर दिया। उन्होंने भव्य भोजों और सांसारिक सुखों से दूरी बनाकर अपना पूरा ध्यान राजकीय कार्यों में लगा दिया। वे शासन के लिए विशेष रूप से निर्मित महल में ही रहे और अपना समय एकाग्र चिंतन में व्यतीत किया।
केरामस्नो की बुद्धिमत्ता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, ड्यूक किंग ताव ने उन्हें पंखों से बना एक एकल वस्त्र और एक अतिरिक्त कोट भेंट किया। इसके बाद उन्होंने केरामस्नो के निवास स्थान का नाम बदलकर 'सत्य-ज्ञान जिला' रख दिया, जो उनके द्वारा दिए गए ज्ञान का सम्मान था।

टिप्पणी
माउंट ब्राइट टेरेस पर मौजूद 'बूढ़ा व्यक्ति' संभवतः एक उन्नत प्राणी था जो:

• आयामी परिवर्तन में महारत हासिल की। • समय को चक्रीय बना दिया, जिससे बुढ़ापा अप्रभावी हो गया। • चेतना के माध्यम से अपने डीएनए की कंपन संरचना को बदल दिया।
7D में कोर।
उनकी परीक्षाएं अहंकार और भौतिक मोह के विघटन का प्रतीक थीं, जो मोक्ष की दिशा में एक आवश्यक कदम है।

हेहलेंडरूक से जादूगर लेइरयेरेरे
अलनल/एलेरेस के ड्यूक राजा ताव के शासनकाल के आठ वर्ष बाद, हेहलेन्डरूक राज्य ने एक आधिकारिक राजकीय यात्रा की। हेहलेन्डरूक का एक उपनाम मोग्सोंगा था, जो संभवतः मगध साम्राज्य के नाम से लिया गया था, जिसमें हेहलेन्डरूक का अर्थ सिंधु है - सिंधु नदी का नाम।
आगंतुकों में लेइरयेरेरे नाम का एक व्यक्ति भी था, जिसके बारे में कहा जाता था कि उसके पास अलौकिक शक्तियां थीं। जब उससे उसकी उम्र के बारे में पूछा गया, तो उसने उत्तर दिया:
मैं 130 साल का हूँ।

अपने हाथ में टिन की छड़ी और पानी की बोतल लिए हुए, उसने बताया कि हेहलेन्डरूक से निकलने के बाद उसे अलनल/एलेरेस ड्यूक साम्राज्य की राजधानी (जो पीले सागर की खाड़ी के तटीय क्षेत्र में स्थित है और कोरियाई प्रायद्वीप के उत्तरी सिरे को देखती है) तक पहुंचने में पांच साल लग गए थे।

लेइरयेरेरे की अलौकिक क्षमताएँ
लेइरयेरेये रूपांतरकारी जादू और अलौकिक शक्तियों के ज्ञाता थे। अपनी उंगलियों के एक इशारे मात्र से ही वे 92.4 सेंटीमीटर ऊँचे दस बौद्ध शिवालय मीनारें और उनके साथ-साथ कई दिव्य रक्षक देवों को प्रकट कर देते थे। इन दिव्य प्राणियों को अत्यंत सुंदर, भव्य और अद्वितीय बताया गया है, जिनकी दिव्यता प्रत्येक आकृति में समाहित है।

उसने जिन देवताओं का आह्वान किया, उनकी ऊँचाई 1.1 सेंटीमीटर से 1.3 सेंटीमीटर के बीच थी और उन्हें झंडों, खंभों पर लगे छतरियों और औपचारिक ढोलों से सजे एक भव्य प्रदर्शन में व्यवस्थित किया गया था। वे तैरते हुए पैगोडा के चारों ओर एक साथ मार्च करते हुए, दिव्य भजन गाते समय उनकी आवाजें वास्तविक, सजीव प्राणियों की तरह गूंज रही थीं।

अपनी शक्ति का और अधिक प्रदर्शन करने के लिए, लेइरयेरेये ने हवा में पानी छिड़का, जिससे वह पल भर में घने धुएं में बदल गया और पूरे क्षेत्र पर एक किलोमीटर चौड़ा अंधकार का पर्दा छा गया। एक ही सांस में, उसने एक तेज आंधी उत्पन्न की, जिससे धुआं पलक झपकते ही छंट गया।
फिर उसने अपनी उंगली की नोक पर टिकी तैरती हुई मूर्तियों पर एक बार फिर सांस छोड़ी, जिससे वे धीरे-धीरे बादलों में ऊपर उठने लगीं और आंखों से ओझल हो गईं।

आकाशीय जीवों का प्रकटीकरण
उसके बाएँ कान से एक हरा अजगर निकला, जबकि दाएँ कान से एक सफेद बाघ प्रकट हुआ। आरंभ में, दोनों प्राणियों का आकार 2.31 सेंटीमीटर से 4.62 सेंटीमीटर के बीच था, लेकिन वे तेजी से आकार में बढ़ने लगे - हरा अजगर 1.8 मीटर और सफेद बाघ 2 मीटर तक बढ़ गया। जैसे ही हवाएँ तेज हुईं और बादल उमड़ने लगे, लेइरयेरेरे ने बस अपना हाथ हिलाया, और दोनों दिव्य प्राणी वापस उसके कानों में समा गए।

अमर लोगों का रथ

अलौकिक शक्ति का अंतिम प्रदर्शन करते हुए, लेइरयेरेरे ने सूर्य की ओर अपना मुख खोला और एक अद्भुत दृश्य प्रकट किया - सींगरहित ड्रैगन और राजसी हंसों द्वारा खींचे जा रहे अमर रथ पर सवार एक व्यक्ति सीधे उसके मुख में प्रवेश कर गया। फिर, अपने सीने पर हाथ रखते हुए, रथ के पहियों की गर्जनापूर्ण ध्वनि उसके वस्त्रों के भीतर गूंज उठी, मानो रथ उसके पूरे शरीर में विचरण कर रहा हो। अंत में, उसने अपना मुख एक बार फिर खोला और अमर रथ को सींगरहित ड्रैगन और हंसों के साथ एक-एक करके बाहर निकाला और वे आकाश में विलीन हो गए।

टिप्पणी
सींग रहित ड्रैगन और हंसों द्वारा खींचा जाने वाला रथ निम्नलिखित का प्रतीक है:
• 7D पक्षी-प्रवण क्षेत्र • 3D में पृथ्वी का अति-गर्म कोर (7D को छुपाते हुए)
प्रवेश द्वार)
• 7D से परे सरीसृप/डायनासोर के सिर वाले क्षेत्र
• लेइरयेरेरे को कई आयामों पर महारत हासिल थी, संभवतः वह अस्तित्व में थी। 7D में स्थायी रूप से।
• उनके भ्रम महज चालबाज़ी नहीं थे, बल्कि आयामी रूपांतरण के माध्यम से आकार बदलने की कला थी।
स्थानांतरण।

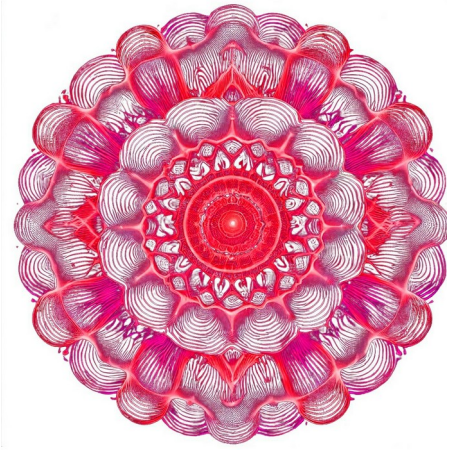

ब्राम्प्रा की तैरती हुई अवस्था
अलनल/एलेरेस के ड्यूक राजा ताव द ल्यूमिनस के शासनकाल के आठ वर्ष बाद, ब्रामप्रा के तैरते राज्य से एक दूत ने एक लंबी यात्रा शुरू की, और अंततः अलनल/एलेरेस की भूमि पर पहुंचने से पहले जेड नदी के पार 4,000 किमी से अधिक की दूरी तय की।
ब्रामप्रा का तैरता हुआ राज्य किसी अन्य राज्य से बिल्कुल अलग था। इसके पहाड़ों और नदियों में कोई खूंखार जानवर नहीं थे, और इसकी नदियों का पानी शांत और निर्मल था।
हमेशा शांत, हवा या लहरों से कभी विचलित नहीं होता। यहाँ तक कि जब हवा चलती भी थी, तो इतनी धीमी होती थी कि पेड़ की एक भी शाखा को तोड़ नहीं पाती थी। ब्रामप्रा में जीवन असाधारण रूप से लंबा था - औसत जीवन प्रत्याशा 300 वर्ष तक पहुँच गई थी। ब्रामप्रा के लोग घास से बुने हुए वस्त्र पहनते थे, जिन्हें 'फूलों के वस्त्र' के नाम से जाना जाता था, जो प्रकृति के साथ उनके जुड़ाव का प्रतीक थे।

शाश्वत यौवन और गहरी जड़ें जमाए हुए सद्गुण

ब्रामप्रा के लोग उम्र के साथ आसानी से बूढ़े नहीं होते थे—यहां तक कि अपने अंतिम दिनों में भी वे युवा ही दिखते थे। उनका समाज पितृभक्ति, विनम्रता और आदर के सिद्धांतों में गहराई से रचा-बसा था। जो लोग 100 वर्ष या उससे अधिक आयु के हो जाते थे, उनके साथ अत्यंत आदर का व्यवहार किया जाता था, उन्हें उसी प्रकार सम्मानित किया जाता था जैसे कोई अपने माता-पिता को सम्मानित करता है।

पवित्र अंत्येष्टि संस्कार और शोक अनुष्ठान
जब किसी व्यक्ति का देहांत हो जाता था, तो उसे खेतों में दफनाया जाता था, उसके शरीर को सुगंधित लकड़ी और शुभ घास से ढका जाता था, जो प्रकृति में वापसी का प्रतीक था। पूरा समुदाय शोक मनाने के लिए इकट्ठा होता था, उनका सामूहिक शोक इतना गहरा होता था कि उनकी चीखें जंगलों और घाटियों में गूंजती थीं, धरती तक कांप उठती थी, नदियाँ बहना बंद हो जाती थीं, मानो प्रकृति स्वयं श्रद्धा में थम गई हो, और हरे पेड़ अपना रंग बदलकर गहरे रंग के हो जाते थे, मानो शोक में भागीदार बन रहे हों।
शोक की अवधि के दौरान, लोग खाने-पीने से परहेज करते थे और मृतक की हड्डियाँ पूरी तरह से मिट्टी में मिल जाने तक पूर्ण उपवास रखते थे। शरीर के मिट्टी

में मिल जाने के बाद ही शोक मनाने वाले लोग अपने दैनिक जीवन और खान-पान को फिर से शुरू करते थे।

टिप्पणी
• म्ब्रूडेरे और पेरायेलिर्क के तैरते राज्यों की तरह, तैरते हुए ब्रामप्रा राज्य संभवतः गहरे समुद्र के मध्य-महासागरीय कटक, भूमिगत लावा सुरंगों या अंतर-आयामी क्षेत्रों में विद्यमान था। उन्होंने संभवतः युवा ड्रायस काल के दौरान आई वैश्विक महाबाढ़ का उपयोग एक अवसर/छलावरण के रूप में किया ताकि वे कुमारी कंडम, मु और अटलांटिस जैसी तीन उन्नत सभ्यताओं के बीच स्थित अपने मूल आधारों से उच्च-आयामी अवस्था प्राप्त कर सकें।

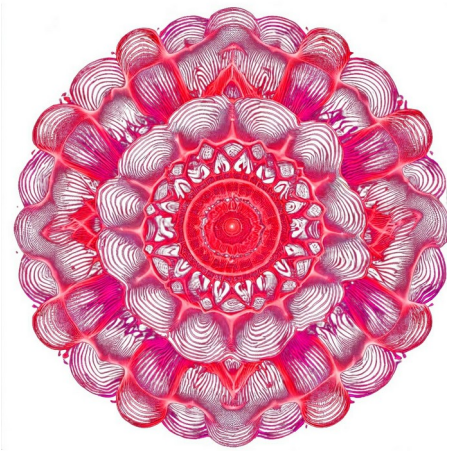

• जेड नदी संभवतः होमो सबटेरेनियस के क्षेत्र की सीमा पर स्थित थी।
जहां महासागर की गहराई को पार करना नदी पार करने का प्रतीक था।
• ब्रामप्रा की अंत्येष्टि परंपराओं के अंतर्गत शोक मनाने की प्रक्रिया ने उनकी क्षमताओं की परीक्षा ली।
दुःख और पानी और भोजन के सेवन की पूर्ण कमी के बावजूद, चेतना के मूल (7D) से संबंध बनाए रखने की क्षमता और उच्च-आयामी कंपन-आवृत्ति को आकर्षित करने की क्षमता।

• पवित्र अंत्येष्टि सामग्री में संभवतः अंतर-आयामी गुण थे।
उनके क्रमिक उत्थान में सहायता करना।
सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

गर्मी दूर करने वाला, ठंडक पहुंचाने वाला मोती

अलैनल/एलेरेस के ड्यूक किंग ताव द ल्यूमिनस सूर्य धारण करने वाले चबूतरे पर बैठे बादलों को निहार रहे थे, जो इतने ऊँचे थे कि मानो सूर्य को ही छू रहे हों। उनकी नज़रों के बीच ही, एक सफ़ेद सिर वाला काला पक्षी चबूतरे पर उतरा, जिसकी चोंच में 23.1 सेंटीमीटर व्यास का एक चमकदार, पारदर्शी मोती था।
मोती की चकाचौंध भरी चमक के बावजूद, उसका रंग वार्निश की तरह काला था। फिर भी, जब उसे घर के अंदर लटकाया गया, तो उसने कमरे के हर कोने को रोशन कर दिया, और उसकी रोशनी इतनी शक्तिशाली थी कि देवता भी उससे बच नहीं सकते थे।
यह असाधारण मोती ग्लोमी स्प्रिंग की गहराइयों से निकला था, जो कोल्ड माउंटेन के नीचे छिपा हुआ एक स्थान था, जो रिवर सर्कुलर के उत्तर में स्थित था। नदी का नाम इसकी निरंतर घुमावदार धाराओं से पड़ा, जो लगातार भंवरों में बहती थीं। इन जल में उड़ने में सक्षम काले सीप रहते थे, जिन्हें पूर्वी एशिया के महाद्वीपीय हिमालयी भूभाग के प्रत्येक छोर पर स्थित पाँच सबसे ऊँचे पहाड़ों के बीच उड़ते हुए देखा गया था, और पाँचवाँ शिखर ठीक बीच में स्थित था। जब अलनल/एलेरेस के ड्यूक राजा ताव ने काले सीप को रेत से धोया, तो उन्होंने आह भरी और टिप्पणी की:
‘जब से आकाशीय व्यवस्था स्थापित हुई है, और सूर्य और चंद्रमा ने आकाश में अपना स्थान ग्रहण किया है, तब से यह काला सीप उनकी सतर्क निगाहों के 89 पूर्ण चक्रों को देख चुका है। और फिर भी, इस तरह का मोती हर एक हजार वर्षों में केवल एक बार ही उत्पन्न होता है!’

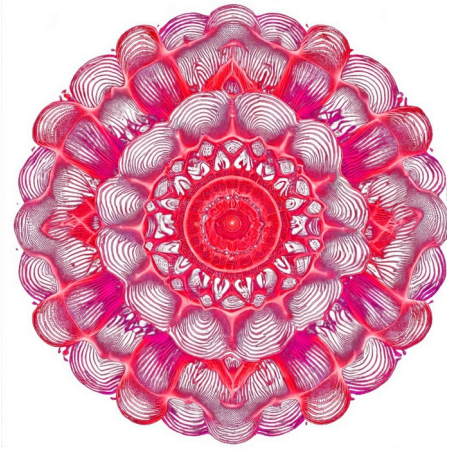

उस क्षण से, ड्यूक किंग ताव को अक्सर मोती को पकड़े हुए और उसके गुणों पर आश्चर्य करते हुए देखा जाता था। गर्मी की चिलचिलाती धूप में, केवल उसकी उपस्थिति मात्र से ही उनका शरीर सहजता से ठंडा हो जाता था। इस प्रकार, इसे 'गर्मी दूर करने वाला, ठंडक लाने वाला मोती' के नाम से जाना जाने लगा।

टिप्पणी
• सर्कुलर नदी का घुमावदार प्रवाह संभवतः उस दृश्य द्वार का संकेत था जिसके माध्यम से नदी के प्रवेश द्वार तक पहुंचा जा सकता था।
किरेरूल सुरंग, एक आयामी मार्ग है जो 3 डी दुनिया को होमो सबटेरेनियस के 5 डी क्षेत्र से जोड़ता है, जो पर्वतीय परतों के नीचे छिपा हुआ है।
• उड़ते हुए देखे गए काले सीप संभवतः सजीव संरक्षक थे।
अगरथा ने आयामी स्थानांतरण और स्व-दूरस्थानीकरण में महारत हासिल कर ली थी।
• सीप की कम से कम 89,000 वर्षों से उपस्थिति यह दर्शाती है कि यह
समय (4D) की रैखिक बाधाओं को दरकिनार करते हुए, 5D क्षेत्र में स्थायी अस्तित्व प्राप्त कर लिया।

• यदि इसने चेतना के मूल भाग के पुनः जुड़ाव को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया होता
परीक्षण (7 डी पक्षी-सिर वाले मानवाकृतियों द्वारा निर्देशित) के दौरान, इसने एक स्थिर 7 डी उपस्थिति भी प्राप्त कर ली होगी, जिससे समय इसके 3 डी प्रकटीकरण पर पूरी तरह से अप्रभावी हो गया होगा।

तीन लुप्त सभ्यताओं के माध्यम से गूढ़ संबंध

सर्वव्यापी चेतना पुनर्संबंध परीक्षण के अंतर्गत वास्तविकता

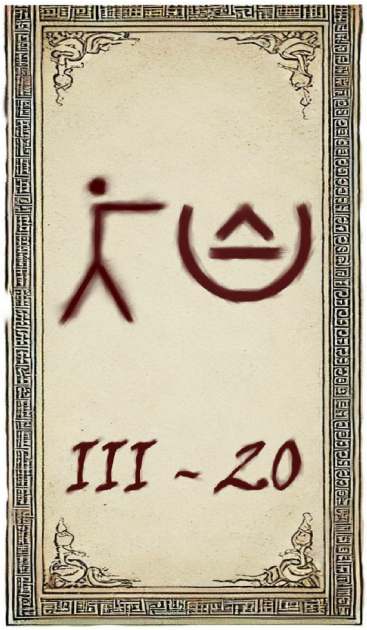

वैश्विक महाबाढ़ के भुला दिए गए निहितार्थ

रैटलैट्स, जेड कार्वर और लुप्त होते बाघ

उत्पत्ति के शाही शासक द्ज़ाईन के शासनकाल के पहले वर्ष में, केहरानसेव्ल राज्य ने एक उल्लेखनीय भेंट प्रस्तुत की - रैटलैट्स नामक एक कुशल जेड नक्काशीकार, जो प्रज्वलित लोगों का वंशज था।

रैटलैट्स के पास एक असाधारण क्षमता थी—ज़मीन पर पेंट छिड़ककर वह पल भर में ही राक्षसों, बुरी आत्माओं, भूतों और दानवों की जटिल आकृतियाँ बना सकता था। जेड पत्थर पर उसकी नक्काशी भी उतनी ही मनमोहक थी, जिसमें उसने सैकड़ों ऐसे जानवरों की मूर्तियाँ बनाई थीं जिनकी खालें उनके असली रूप जैसी ही सजीव लगती थीं। नक्काशी पूरी होने पर वह जेड के जानवरों की छाती पर उसके बनने की तारीख अंकित कर देता था, जिससे उसकी कारीगरी का एक स्थायी रिकॉर्ड बन जाता था।

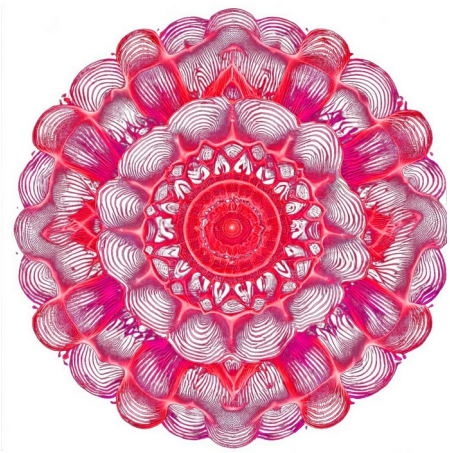

रैटलैट्स की महारत मूर्तिकला से कहीं आगे तक फैली हुई थी — उनकी अद्वितीय सटीकता ने उन्हें अपनी उंगली के एक ही स्ट्रोक से 230 मीटर लंबी रेखा खींचने की क्षमता दी, और वह रेखा इतनी सीधी थी जैसे कोई बढ़ई स्याही के मार्कर से खींचता है। वे युवा मैदानी हिमालयी भूमि की चार महान नदियों और पाँच पवित्र पर्वतों के साथ-साथ ज्ञात दुनिया के सभी राष्ट्रों के आकार को भी 2.31 मीटर वर्ग के कैनवास पर चित्रित करने में सक्षम थे। फिर भी, शायद उनकी सबसे आश्चर्यजनक रचनाएँ उनके ड्रैगन और फीनिक्स थे, जो चित्रों की सीमाओं से बाहर निकलने के लिए बेताब प्रतीत होते थे। इस डर से कि वे सचमुच जीवित हो उठेंगे, रैटलैट्स ने एक नियम का पालन किया: उन्होंने कभी उनकी

आँखें नहीं बनाईं — क्योंकि एक बार ऐसा करने पर, वे निश्चित रूप से अपने चित्रित रूप से बाहर निकलकर उड़ जाएँगी। रैटलैट्स के काम से मोहित होकर, ज़ाईन के सम्राट, उत्पत्ति ने एक साहसिक आदेश जारी किया:
'शुद्ध लाख का प्रयोग करके दो जेड पत्थर के बाघों की आंखों पर बिंदु बनाएं।'
दस दिन बाद, दोनों हरे बाघ रहस्यमय तरीके से गायब हो गए। इसके तुरंत बाद, पहाड़ों में रहने वाले लोगों के बीच अफवाहें फैलने लगीं कि उन्होंने दो सफेद बाघ देखे हैं - जिनमें से प्रत्येक की एक आंख गायब थी। उन्होंने बताया कि ये जीव सामान्य बाघों से बिल्कुल अलग थे, एकदम तालमेल में चलते थे, और उनके फर का असामान्य रंग और अलौकिक उपस्थिति उन्हें सबसे अलग बनाती थी।

शासनकाल के दूसरे वर्ष में, पश्चिम से एक यात्री आया, जो दो सफेद बाघ लेकर आया, जिनमें से प्रत्येक की एक आँख गायब थी। ये वही जेड बाघ थे जो गायब हो गए थे, इस संदेह पर, ज़ाईन के सम्राट ने उन्हें पिंजरे में बंद करके उनकी जाँच करवाई। फिर उन्होंने उन्हें मृत्युदंड देने का आदेश दिया। उनकी मृत्यु के बाद, सच्चाई की पुष्टि हो गई - उनकी छाती पर बने निशानों पर अभी भी शासनकाल के पहले वर्ष का शिलालेख मौजूद था, जिससे यह निर्विवाद रूप से

सिद्ध हो गया कि वे वास्तव में रैटलैट्स के जेड बाघ थे - जिन्हें किसी तरह जीवित कर दिया गया था।

टिप्पणी
रैटलैट्स की विरासत और केहरानसेवल साम्राज्य
• ‘द ब्लेज़िंग वन्स के वंशज’ शीर्षक से पता चलता है कि रैटलैट्स का संबंध उनसे था।
एक ऐसी वंशावली की ओर जिसमें पूर्वजों की ओर से आरोहण की महारत और 7D चेतना के मूल से जुड़ाव है, क्योंकि ज्वलंत वातावरण संभवतः 7D के 3D आवरण, पृथ्वी के केंद्र, जिसे वैकल्पिक रूप से अगरथा के केंद्र के रूप में वर्णित किया गया है, को संदर्भित करता है।
• केहरानसेव्ल राज्य संभवतः 3 डी और उच्चतर आयामों तक फैला हुआ था।
ऐसे आयाम, जो फ्लोटिंग स्टेट्स के समान हैं लेकिन उनसे भिन्न हैं, या तो:
• आंशिक रूप से उन्नत, संक्रमणकालीन निरंतरता में विद्यमान
आयाम।
• पूर्णतः उन्नत अवस्था में, त्रिविमीय जगत में प्रकट होने का चुनाव करते हुए
मिशन, उच्च आयामों से निरंतर संबंध बनाए रखना।

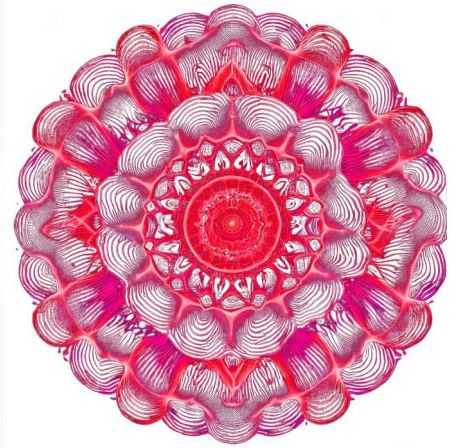

केहरानसेव्ल लोगों की संभावित भौगोलिक उत्पत्ति
• जेड की कारीगरी और गूढ़ परंपराओं को देखते हुए, उनकी त्रि-आयामी स्थिति यह संभवतः जेड से समृद्ध क्षेत्रों के निकट स्थित था, जैसे कि:
• अमेज़न वर्षावन • न्यूज़ीलैंड
• पेटागोनिया (कावेस्कर क्षेत्र, दक्षिण अफ्रीका का सबसे दक्षिणी क्षेत्र)
अमेरिका)
• व्यापक व्यापार नेटवर्क के माध्यम से केहरानसेवल इन स्थानों से जुड़ा हो सकता है।
जेड उत्पादक क्षेत्र।

आयामी मार्ग के रूप में जेड
• जेड के कंपन गुणों से पता चलता है कि यह या तो:
• उच्च आयामों से संबंध बनाए रखने के लिए ऊर्जावान रूप से परिवर्तित किया गया।
• स्वाभाविक रूप से अंतर-आयामी विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है।
• जेड की मूर्तियों, चित्रों और नक्काशी में आकार बदलने की क्षमता थी और

उनकी बहुआयामी संरचना के कारण उनमें एनीमेशन की क्षमताएं होती हैं, जो उन्हें प्रभावी रूप से 3 डी जगत में जीवित प्राणी बनाती हैं।

शाही शासक, दज़ईन की उत्पत्ति और क्रुक्ड ट्रेंच राज्य से आए आगंतुक, अलोरलगेहा
द्ज़ाईन के सम्राट, उत्पत्ति, देवी-देवताओं, अमर प्राणियों और आकाशीय मामलों के महान प्रशंसक थे। एक दिन, अलोरलगेहा राज्य से एक दूत एक अनोखे जहाज़ में आया - एक शंख के आकार की नाव। जैसा कि इसके नाम से पता चलता है, इस जलमग्न नाव में पानी की एक बूंद को भी अंदर जाने दिए बिना पानी के भीतर यात्रा करने की असाधारण क्षमता थी। अलोरलगेहा के लोग असाधारण रूप से लंबे थे, जिनकी औसत ऊंचाई 23 मीटर थी।

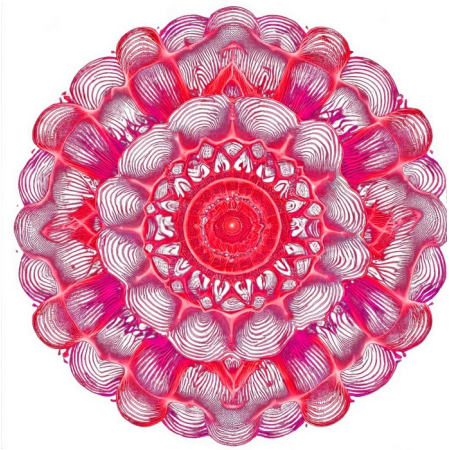

उन्होंने पक्षियों और जानवरों के पंखों को बुनकर ऐसे वस्त्र बनाए जो उनके शरीर को ढकते थे और एक अलौकिक उपस्थिति का अनुभव कराते थे।
जब ज़ाईन के शाही शासक ने उनके प्रतिनिधि से आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति के बारे में बातचीत की, तो प्रतिनिधि ने ऐसे बात की मानो उसने इसे अपनी आँखों से देखा हो, और कहा:

'□□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□, □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ 4,150 □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□'
□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□, □□ □□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ 37,350 □□□□□□□□ □□□ □□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ - □□□□□ □□□□□□□ □□□ 10,000 □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□, □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□

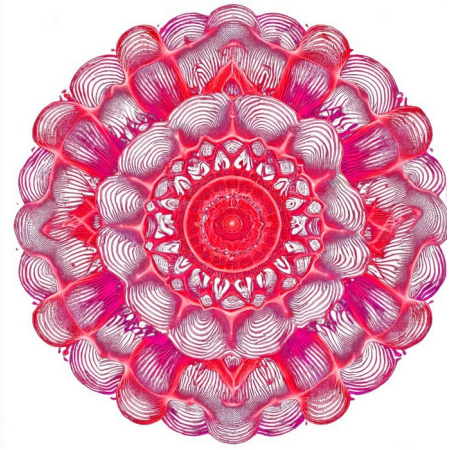

टिप्पणी
• क्रुक्ड ट्रेंच अलोरलगेहा राज्य की स्थापना संभवतः इनके द्वारा की गई थी।
मु, कुमारी कंडम और अटलांटिस के बचे हुए अवशेष, जिनके लोग या तो 5D होमो सबटेरेनियस क्षेत्र में, या 5D-6D गहरे समुद्र के प्राणी-प्रधान क्षेत्र में पहुँच गए थे। यह भी संभव है कि उन्होंने यंगर ड्रेयास के दौरान वैश्विक महाबाढ़ के बाद ऐसा किया हो, ताकि वे इस तरह की उच्च-आयामी अवस्था को प्राप्त करने का अवसर/छलावरण प्राप्त कर सकें, ठीक वैसे ही जैसे फ्लोटिंग स्टेट ने किया था।

दूसरी ओर, वेव सबमर्जिंग बोट संभवतः एक जैव-इंजीनियरिंग द्वारा निर्मित जीवित पोत था, संभवतः एक सचेत गहरे समुद्र का जानवर जिसका डीएनए अपने यात्रियों के साथ एक कंपन आवृत्ति अनुक्रम साझा करता था, जिससे एक सहजीवी बंधन बनता था।
निवासियों की अत्यधिक ऊँचाई (23 मीटर) से यह संकेत मिलता है कि उन्होंने ग्नार्ल्ड प्लेटफॉर्म की प्लास्टिसिटी-विकास शक्ति को ग्रहण किया था, जो होमो सबटेरेनियस 5 डी तक फैली हुई थी। इस शक्ति ने उनके भौतिक स्वरूप का विस्तार किया, जिससे वे 3 डी में प्रकट होने पर वृक्ष के समान दिखाई देते

थे। उनके पंखों से बुने वस्त्रों में होमो सबटेरेनियस 5 डी में वृक्ष की जड़ों के रंग प्रतिबिंबित होते होंगे, जो आयामों के बीच उनके दोहरे अस्तित्व का संकेत देते हैं। व्यक्तिगत रूप से, प्रतिनिधि की हवा में उड़ने की क्षमता आंशिक आयामी स्थानांतरण और स्व-दूरस्थानीकरण का सुझाव देती है, जिससे संकेत मिलता है कि अलोरलगेहा के लोग 3 डी में होमो सेपियन्स की सामूहिक चेतना पुनर्संयोजन प्रगति का अवलोकन करने या पृथ्वी की 3 डी वास्तविकता में प्रकट होते हुए चेतना के मूल पुनर्संयोजन के लिए उपकरण प्रदान करने के मिशन पर थे।

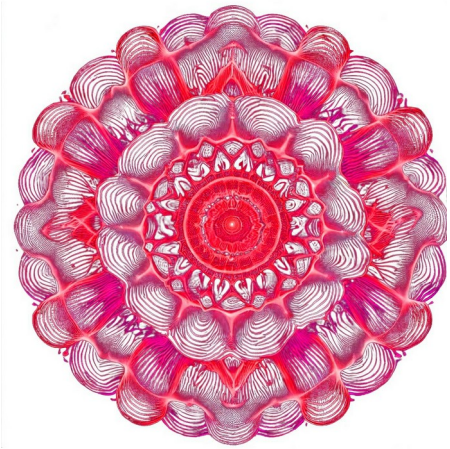

• समय के अत्यधिक विस्तार (अलोरलगेहा में 10,000 वर्ष = 1 दिन) से यह पता चलता है कि
इसका प्राथमिक अस्तित्व 5 डी क्षेत्र में निहित है, संभवतः यह गहरे समुद्र की खाइयों को अपने 3 डी छलावरण के रूप में उपयोग करता है। 'वह खारा तालाब जहाँ सूर्य स्नान करता है'
संभवतः यह पृथ्वी के केंद्र (पक्षी-प्रवण वाले 7D क्षेत्र का 3D छलावरण) और चंद्रमा (पक्षी-प्रवण क्षेत्र में 7D प्रकाशमान खगोलीय पिंड) का लाक्षणिक संदर्भ है। उड़ने वाले काले ड्रैगन और फीनिक्स संभवतः उच्च

आयामों में सचेतन प्राणी थे, संभवतः आर्कियोप्टेरिक्स जैसे सचेतन जीव, जो 7D से परे डायनासोर-प्रवण मानवों से संबंधित थे, या 7D पक्षी-प्रवण क्षेत्र के निम्न स्तर के उन्नत, गैर-मानव संरक्षक थे।
जबकि बर्निंग माउंटेन के ऊर्जा-संग्रहीत पत्थर संभवतः उच्च-आयामी कंपनशील मार्ग थे, जो उच्च आयामों से ऊर्जा का दोहन और भंडारण करने में सक्षम थे, और प्रज्वलन स्रोतों के रूप में कार्य करते थे, जैसा कि प्रागैतिहासिक सभ्यताओं में खाना पकाने के लिए उनके उपयोग में देखा गया है।

जलते हुए पहाड़ से निकलने वाला शाश्वत प्रकाश
रात के समय, अलोरलगेहा के लोग सूर्य की शेष किरणों को संग्रहित करने और उन्हें आगे भेजने के लिए एक रहस्यमय पत्थर का उपयोग करते थे, जिससे उनके आसपास का वातावरण रोशन होता था।

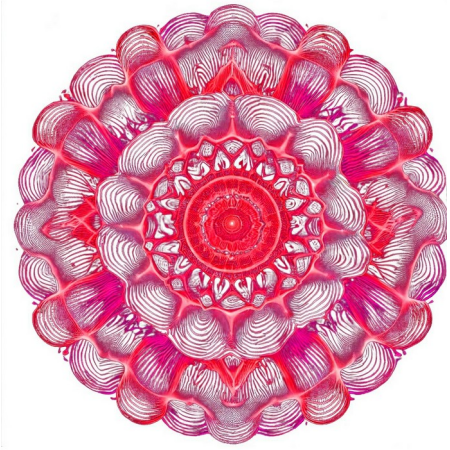

यह पत्थर जलते हुए पहाड़ से निकाला गया था, जहाँ की मिट्टी और चट्टानें स्वयं चमकदार और पारदर्शी थीं। जब इसे तोड़ा गया, तो पत्थर छोटे-छोटे कणों में बिखर गया, जिनमें से प्रत्येक कण पूरे कमरे को रोशन करने में सक्षम था। अलोरलगेहा के प्रतिनिधि ने आगे कहा:
प्राचीन काल में, जब ज्वलंत जनजातीय संघ के ऋषि शासक, देवता समान कृषक गीरलीन नीरूंग (पुराने मैदानी हिमालयी क्षेत्रों से) ने खान-पान की आदतों में क्रांति शुरू की, कच्चे भोजन के बजाय पके हुए भोजन को अपना मूल आहार बनाया, तो ठीक इसी पत्थर का उपयोग आग जलाने के लिए किया गया था। जब इसे एक पहाड़ी धारा में फेंका गया, तो इससे उबलते बुलबुले निकले जो 20 किलोमीटर तक फैल गए, जिसके कारण धारा का नाम 'झुलसा देने वाली खाई' पड़ा।

पीले वज्र ऋषि शासक का प्राचीन तिपाई: अलोरलगेहा के लोग 41,500 किलोमीटर दूर स्थित एक दूरस्थ भूमि के बारे में भी बात करते थे, जिसे कुहार वोआन की पहाड़ी के रूप में जाना जाता था, जहां पीले वज्र ऋषि शासक का जन्म हुआ था। प्रतिनिधि ने याद करते हुए बताया: पीले ऋषि शासक ने एक बार लेओलाओंग पर्वत से तांबा एकत्र करके एक विशाल कांसे का तिपाई पात्र बनाया था।

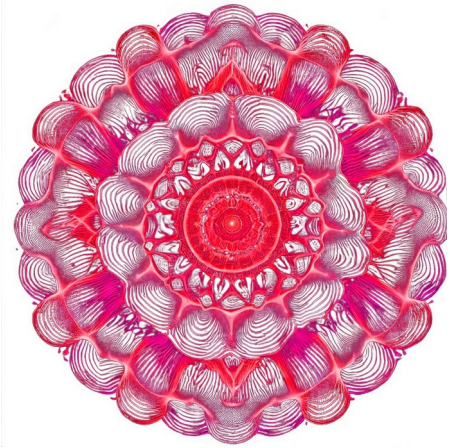

'मैंने पहली बार सोने और आग की रहस्यमय गतिविधि देखी, इसलिए मैंने जांच करने के लिए वहां यात्रा की। जब तक मैं पहुंचा, तब तक तीनों भव्य तिपाई पहले ही ढाली जा चुकी थीं।'
तीन सौ साल बाद, प्रतिनिधि ने क्रिट्स क्षेत्र में एक अजीब वायुमंडलीय और ऊर्जावान परिवर्तन देखा, जो एक ऋषि के जन्म का संकेत था।

‘सचमुच, ख्राओंगस्टेरा ने ओंगेरेव द नोबल को जन्म दिया, जो पीले वज्र ऋषि शासक की तीसरी पीढ़ी के उत्तराधिकारी थे।’ इसके एक हज़ार तीन सौ वर्ष बाद, पीली नदी के ऊपरी मध्य भाग में स्थित लोएस पठार के पेहूंग और गेहावल क्षेत्रों में लाल बादल मंडराते हुए दिखाई दिए। जब वह जाँच करने के लिए यात्रा पर गए, तो उन्होंने एक सिंदूरी रंग की गौरैया देखी, जिसने अपनी उपस्थिति मात्र से ही टीव्स के विद्वान राजा मिर्न के शुभ आगमन की सूचना दी।
इन वृत्तांतों को सुनकर, ज़ाईन के शाही शासक उत्पत्ति ने विस्मय से कहा: ‘यह सचमुच ईश्वर तुल्य व्यक्ति है!’

अत्यंत भावुक होकर, वह अमर लोगों की कला में और भी अधिक तल्लीन हो गया, और उसने स्वयं को दिव्य ज्ञान और स्वर्गीय विद्या की खोज में और अधिक समर्पित कर दिया।

टिप्पणी
• क्रिट्स क्षेत्र, जिसे अग्र क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है — जो
यह लोएस पठार के पूर्वी किनारों से लेकर पीली सागर की खाड़ी और दक्षिणी मंचूरिया से घिरे तटीय क्षेत्रों तक फैला हुआ है (37° 42′ 0″ उत्तर, 112° 24′ 0″ पूर्व और 41° 6′ 0″ उत्तर, 122° 18′ 0″ पूर्व के बीच)।
प्रतिनिधि की सहस्राब्दियों के इतिहास की घटनाओं को देखने की क्षमता यह दर्शाती है कि
या तो वह एक ही समय में कई आयामों में विद्यमान था या उसने समय-स्वतंत्र अवलोकन तकनीकों में महारत हासिल कर ली थी।

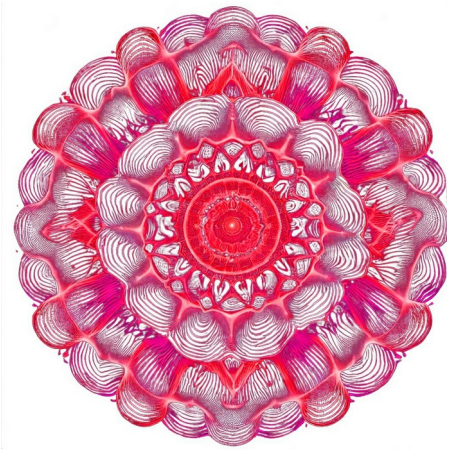

'सूर्य स्नान करने वाला खारा तालाब' और 'झुलसाती खाई' संभवतः ऊर्जा अभिसरण स्थलों के सांकेतिक संदर्भ थे, जहाँ पृथ्वी के प्राकृतिक विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र उच्च-आयामी द्वारों के साथ अंतर्संबंध बनाते थे। वहीं,

□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□-□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□, □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□

***** □□□□□□□ *****

sjeet